

बरिस-3 अंक-12

# सिरिजन

www.sirijan.com

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका  
अप्रैल-जून 2021



/jaibhojpurijaibhojpuria



@sirijanbhojpuri



9801230034



# सिरिजन

(तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका)

प्रबंध निदेशक	: सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	: 1. सुरेश कुमार, (मुम्बई) 2. कन्हैया प्रसाद तिवारी, (बेंगलोर)
प्रधान सम्पादक	: सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	: डॉ अनिल चौबे
बिशिष्ट सम्पादक	: बृजभूषण तिवारी
उप सम्पादक	: तारकेश्वर राय
कार्यकारी सम्पादक	: संजय कुमार मिश्र
सलाहकार सम्पादक	: राजीव उपाध्याय
सह-सम्पादक	: 1. भावेश अंजन 2. अमरेन्द्र कुमार सिंह 3. माया चौबे 4. गणेश नाथ तिवारी 5. राम प्रकाश तिवारी
प्रबंध सम्पादक	: माया शर्मा
आमंत्रित सम्पादक	: चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	: रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	: ज्वाला सिंह
ब्यूरो चीफ (बिहार)	: 1. अरविंद सिंह, 2. मिथिलेश साह
ब्यूरो चीफ (प. बंगाल)	: दीपक कुमार सिंह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	: 1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारखण्ड)	: राठौर नितान्त
पश्चिम भारत प्रतिनिधि	: बिजय शुक्ला
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	: बिनोद गिरी
क्रानूनी सलाहकार	: नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लॉट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर, पीतमपुरा, दिल्ली - 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

## अनुक्रम

### 1. संपादकीय

- संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 4
- आपन बात - तारकेश्वर राय / 6

### 2. कनखी

- साढ़ के गोबरे अडानीदेव दारू बनाइ - डॉ अनिल चौबे / 8

### 3. कथा-कहनी /दंतकिस्सा

- सुनैना भौजी - कनक किशोर / 18
- घूँघट - विन्मी कुंवर सिंह / 46
- समय - सुरेन्द्र प्रसाद गिरि / 57
- रमावती - विवेक सिंह / 62
- हिजड़ा - तारकेश्वर राय "तारक" / 69

### 4. कविता

- हम गँवार हई - कनक किशोर / 15
- गुमान भइल बा - कन्हैया प्रसाद रसिक / 21
- रक्ता छंद (वर्णिक) - माया शर्मा / 21
- भुलाइल आजु से - संगीत सुभाष / 22
- जिन्दगी बाजार में - संगीत सुभाष / 22
- दियना कहवां जराई - देवेन्द्र कुमार राय / 23
- गरीबी पै ना होला - अमरेन्द्र कुमार सिंह / 23
- बसन्त बयार - अरविन्द श्रीवास्तव / 24
- होरी में - मदन मोहन पाण्डेय / 24
- कहाँ गइल - अशोक मिश्र / 62
- मत्तगयन्द सवैय्या - अवधेश मिश्र रजत / 71
- किसान एहि देशवा में - विनोद पाण्डेय "कश्यप" / 71
- बेटिया सयान हो गईल - सान्या राय / 79
- जिनगी के फलसफा - डॉ मधुबाला सिन्हा / 79
- सत्यमार्ग अपनाव - दीपक तिवारी / 83
- अभी बाकी बा - अभियंता सौरभ भोजपुरिया / 83
- दोहा अनिल के - अनिल कुमार / 84
- ई नेता लोग - रेखा शाह आरबी / 84
- मत पूछी का हाल बा - नुरैन अंसारी / 85
- कोरोना - नुरैन अंसारी / 85

### 5. गीत/ गजल

- डॉ जौहर शफियाबादी के कुछ गज़ल / 9
- सियासी भइल जंगली खेल - सुनील कुमार तंग / 16
- फागुन-चइत - डॉ अशोक द्विवेदी / 16
- किरिन निचे डगर आइल - दिनेश पांडेय / 17
- घटा में लुकाइल चनरमा - दिनेश पाण्डेय / 17
- का करी ? - विमल कुमार / 38
- जमाना याद आवेला - संतोष कुमार बिश्वकर्मा 'सूर्य' / 38
- गज़ल - मन्दाकनी छन्द - रामप्रसाद साह / 42
- गज़ल - रात में तिका दिहलन - बिद्या शंकर बिद्यार्थी / 42
- कहीं त आवल कर - सुनील कुमार दुबे / 82
- 2020 के हाल - निष्पू नादान / 82

### 6. पुरुखन के कोठार से

- राधा मोहन चौबे "अंजन" जी के कविता / 10
- स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 11

### 7. नाटक / एकांकी

- परवरिस - विद्या शंकर विद्यार्थी / 31

### 8. आलेख/निबंध

- लोककंठ में बसल सनातन साहित्य - जलज कुमार अनुपम / 12
- किसान समस्या अउरी निदान के तरीका - सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा / 43
- योग अउर योगी - योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी / 59
- पूरबी बोली "भोजपुरी" आ खड़ी बोली "हिन्दी" - डॉ जयकान्त सिंह जय / 72

### 9. संस्मरण

- गाँठ - सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा / 25

### 10. पुस्तक समीक्षा

- एकांगी प्रेम कहानी के सांस्कृतिक पूर्णाहुति - दीपशलभ - जयशंकर प्रसाद द्विवेदी / 39

### 11. साक्षात्कार

- श्री परिचय दास से साक्षात्कार - डॉ सुमन सिंह / 47

### 12. हंसी / ठिठोली - 80

### 13. सतमेझरा - 58, 81, 86, 87,88

## काव्य रचला आ पढ़ला से फायदा

काव्य रचला के का उद्देश्य होला ? काव्य कवना फायदा खातिर लिखाला अउर कवना उद्देश्य से पढ़ल जाला। ई सब ध्यान में रखि के काव्य प्रयोजन पर साहित्य-शास्त्र में खूब विचार विमर्श कइल गइल बा। काव्य रचला के उद्देश्य काव्य प्रेरणा से अलग होला। काहे कि काव्य प्रेरणा के मतलब होला काव्य की रचना खातिर प्रेरित करे वाला तत्वा जबकि काव्य के प्रयोजन से मतलब बा कि काव्य रचना कइला के बाद में प्राप्त होखे वाला लाभा साहित्य के विभिन्न आचार्य लोग काव्य प्रयोजन के विषय में आपन अलग-अलग विचार परगट कइले बा।

नाट्य शास्त्र के रचयिता भरत

मुनि काव्य प्रयोजन में भौतिक चीज के व्यापक उल्लेख कइले बानीं, बाकी काव्य के प्रधान उद्देश्य आनन्द प्राप्ति ह जेकर उल्लेख इहाँ का नइखी कइले।

एगो दुसरा जगह भरत मुनि जी नाटक के उद्देश्य दुःखी आ आर्त आदमी के सुख आ शान्ति पावल ही बतवले बानीं।

आचार्य भामह के अनुसार

धरम, अर्थ, काम मोक्ष के प्राप्ति कला में निपुणता के साथे-साथ उत्तम काव्य से कीर्ति आ प्रीति (आनन्द) के भी प्राप्ति होला।

भामह के काव्य प्रयोजन व्यापक बा ए में कवि आ पाठक दुनो लोग के फायदा के चर्चा बा।

आचार्य वामन प्रीति अथवा आनन्द साधना,

कीर्ति अथवा यश प्राप्ति के ही मुख्य उद्देश्य मानीले।

आचार्य मम्मट अपना लक्षण ग्रन्थ काव्य-प्रकाश में काव्य के प्रयोजन (उद्देश्यन) पर बड़ा विस्तार से चर्चा कइले बानीं। इहाँ के कहनाम बा कि काव्य के रचना यश खातिर, अर्थ प्राप्ति खातिर, व्यवहार ज्ञान की खातिर, अमंगल की शान्ति खातिर, अलौकिक आनन्द की प्राप्ति खातिर अउर कान्ता के समान मधुर उपदेश छने छने देवे वाला होला। मम्मट मुख्य रूप से छव गो काव्य रचना के फायदा बतवले बानीं।

1. यश प्राप्ति 2. अर्थ प्राप्ति

3. लोक व्यवहार ज्ञान 4. अनिष्ट के निवारण भा लोकमंगल, 5.

आत्मशान्ति भा आनन्द के उपलब्धि,

6. कान्तासम्मित उपदेश।

ए सब में से काव्य की रचना करे वाले कवि के प्रयोजन ह -यश प्राप्ति, अर्थ प्राप्ति, आत्मशान्ति अउर काव्य के आस्वादन करेवाला पाठक के काव्य प्रयोजन ह

-लोक व्यवहार ज्ञान, अमंगल के शान्ति, आनन्द के उपलब्धि अउर कान्तासम्मित उपदेश।

यश पवला की इच्छा से कविगण काव्य रचला। एही से यश प्राप्ति के मम्मट काव्य के प्रमुख प्रयोजन मनले बाड़ें।

काव्य रचना क के अनेक महाकवि लोग अक्षय यश पवले बा। कालिदास, सूरदास, तुलसी, बिहारी, प्रसाद जइसन अनेक कविगण आजो अमर बा लोग। तुलसीदास बाबा रामचरितमानस में लिखले बानीं-

”निज कवित्त केहि लाग न नीका।

सरस होई अथवा अति फीका।।

जो प्रबन्ध कछु नहिं आदरहीं।

सो श्रम वाद बाल कवि करहीं।”

आपन कविता केकरा नीमन ना लागेला, चाहे सरस होखे भा फीका, बाकी जवना रचना के विद्वान लोग के आदर ना प्राप्त होखे वो रचनाकार के मेहनत बेकारे बा।

ए से ई संकेत मिलत बा कि कवि के चाहत होला कि ओकर लिखल रचना विद्वान लोग के द्वारा सराहल जावा। यश प्राप्ति के कामना सब कविलोग में होला।

जायसी भी पद्मावत में ई स्वीकार कइले बाड़ें कि हम अपनी कविता से संसार में जानल जाई।

”औ मैं जान कवित अस कीन्हा।

मकु यह रहै जगत मँह चीन्हा।”

रीतिकालीन कवि आचार्य कुलपति, देव आ भिखारीदास भी अपना काव्य के उद्देश्यन में यश प्राप्ति के ही विशेष स्थान दिहले बा लोग। कवि लोग जवना राजा के अपनी कविता के विषय बनवले ऊ लोग भी अमर हो गइला। निष्कर्ष त इहे निकलल कि यश के प्राप्ति काव्य के प्रमुख प्रयोजन ह।

काव्य रचना के एगो प्रयोजन धन प्राप्ति भी रहल बा।

धन प्राप्ति की इच्छा से रीतिकाल के कविलोग राजदरबारन में आश्रय लिहला। बिहारी के प्रत्येक दोहा की रचना खातिर एगो अशर्फी मिले। एह समय में भी कविसम्मेलन में अनेक कवि आपन कविता सुना के अच्छा-खासा धन उपराजत बाड़ें। कविता धनोपार्जन के माध्यम भी बन सकेले। हो सकता एही से मम्मट अर्थ प्राप्ति के काव्य प्रयोजन में स्थान दिहले होखें।



आचार्य मम्मट व्यवहार ज्ञान के भी काव्य के प्रयोजन मनले बाड़ें रामायन, महाभारत आदि महाकाव्यन के अनुशीलन से पाठक लोग के उचित व्यवहार करे के शिक्षा प्राप्त होला।

संस्कृत में त बहुत ढेर साहित्य एही प्रयोजन के ध्यान में राखि के लिखाइल बा। पंचतन्त्र, हितोपदेश, नीतिशतक जइसन ग्रन्थ व्यवहार ज्ञान के शिक्षा देवे के खातिर ही रचाइल बा।

रामचरितमानस त व्यवहार के दर्पण हा। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी चिन्तामणि में ई स्वीकार कइले बानीं कि काव्य से व्यवहार के ज्ञान होला।

'शिवेतर' के मतलब होला- अमंगल आ 'क्षतये' के अर्थ होला- विनाशा। एकर तातपर्य ई भइल कि काव्य अमंगल के नाश करेला आ कल्याण होला। संस्कृत के एगो मयूर नाव के कवि- कुष्ठ रोग से मुक्ति खातिर 'सूर्य शतक' लिखलें। एही तरे गोस्वामी तुलसीदास बाबा 'हनुमान बाहुक' के रचना बाँह में भइल रोग से मुक्ति पवला खातिर कइलें।

काव्य पढ़ला से भी अमंगल के विनाश होला। बहुत लोग रामचरितमानस, दुर्गा सप्तशती के पाठ अमंगल के विनाश खातिर आजो करे, करवावेला।

काव्य पढ़ला के संगे, तुरन्त आनन्द के अनुभव होखे लागेला आ परम शान्ति के प्राप्ति होला। काव्य के रसास्वादन कइला से अलौकिक आनन्द के अनुभूति होला। वस्तुतः आनन्द के उपलब्धि काव्य के प्रमुख प्रयोजन हा।

काव्य के रसास्वादन करत समय पाठक के समाधिस्थ योगी के जइसन अलौकिक आनन्द होला। कुछ समय खातिर ऊ अपनि सत्ता के भुला के काव्य के आनन्द में लीन हो जाला। एही से काव्यानन्द के 'ब्रह्मानन्द सहोदर' कहल गइल बा। काव्य रचला से कवि के भी अइसने आनन्द मिलेला आ काव्य के रसास्वादन क के पाठक के भी अइसने आनन्द के अनुभूति होला।

काव्य प्रयोजन कवि आ पाठक दुनो लोग से सम्बन्धित बा। काव्य में डूबल मन साधारणीकरण की स्थिति में पहुँचके रसमग्न हो जाला आ इहे रसमग्नता परम आनंद प्रदान करेला। आचार्य लोग एही कारण से ए प्रयोजन के सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानत 'सकलमौलिभूत' प्रयोजन कहले बा।

काव्य प्रेमिका के समान मधुर उपदेश देवे वाला होला। उपदेशो तीन तरह के होला।

प्रभु सम्मित उपदेश

मित्र सम्मित उपदेश

कान्ता सम्मित उपदेश

वेद शास्त्रन के उपदेश प्रभु सम्मित हा। ऊ हितकर त बा लेकिन रुचिकर ना होला। पुराण आ इतिहास के उपदेश मित्रतुल्य उपदेश ह, जेकर अवहेलना कइल जा सकेला,

बाकी काव्य के उपदेश कान्ता सम्मित उपदेश हा। जवन हितकर भी बा, रुचिकर भी बा आ जेकर अवहेलना भी नइखे कइल जा सकत।

जे तरे प्रेयसी अपनी मधुर हाव भाव से पुरुष के मोहित क के अपनी इच्छानुकूल नीति मार्ग पर ले जाली, ओही तरे काव्य भी मधुर कथा के द्वारा उच्च आदर्शन के शिक्षा देला।

जइसे मिठाई की लालच में लड़िका तीत सिर्फ पी लेला, वइसे ही रस के मधुर आस्वाद से मिश्रित शिक्षा काव्य द्वारा सरलता से करावल जा सकेला।

एही से कबीर, तुलसी, नानक आदि कवि लोग अपने उपदेशन के प्रचार काव्य के माध्यम से कइला।

रामचरित मानस में तुलसीदास बाबा दुगो काव्य प्रयोजन के चर्चा कइले बानी।

1. स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा

2. कीरति भनिति भूति भल सोई

सुरसरि सम सब कहँ हित होइ।

कविता उहे श्रेष्ठ होले जवन गंगा के समान सबकर हित करे वाली हो।

मैथिलीशरण गुप्तजी के अनुसार काव्य के प्रयोजन खाली मनोरंजन ना हा।

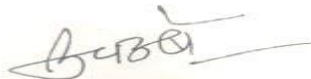
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी काव्य प्रयोजन पर विस्तार से विचार कइले बानीं। रसानुभूति के इहाँ के मुख्य मानीलो।

कविता के अन्तिम लक्ष जगत में मार्मिक पक्षन के प्रत्यक्षीकरण कके ओकरी साथे मनुष्य के हृदय के सामंजस्य स्थापन कइल हा।

मन के अनुरंजित कइल, ओ के सुख भा आनन्द पहुँचावल ही जदि कविता के अन्तिम लक्ष मान लिहल जाव त कविता भी विलास के एगो समान हो गइला। काव्य के लक्ष्य ह जगत आ जीवन के मार्मिक पक्ष के गोचर रूप में लियाके सामने राखला।

अन्त में हम फिर इहे कहबि कि सार्थक रचीं, नइखीं लिख पावत त पढ़ीं, सब तरे से मंगल ही मंगल होई।

रउरे 



(डॉ अनिल चौबे)

सम्पादक "सिरिजन"



## आपन बात

भूकम्प से आशियाना नेस्तनाबूत हो जाव.. जल सैलाब तांडव मचा देव.. जान माल के अपार क्षति हो जाव, जीवन कबो रहे ओकर अवशेष मात्र भी नजर न आवे ....., प्राकृतिक बिपदा बतावे में कामयाब हो जाव कि तोहार कुल्हिये बिकास प्रकृति के आगे बौना बा, तबो जिजीविषा जिनिगी के उठा के खाड़ क देलो

दुसरका पारी में देश के कुछ हिस्सा में फइलत कोरोना के कहर देखि के लोक मन डेराइल बा, देखीं ना कोरोना महामारी के खिलाफ लड़ाई समय के साथ अउरी तेज हो रहल बा । बैज्ञानिक लोग के अथक परिश्रम के परिणाम कोरोना के कड़गो टीका के रूप में अब सोझा लउके लागल । एह महामारी से बचाव खातिर टीका आ एहतियात बरतल ही वक्त के तकाजा बा। कवनो अफवाह आ उलझन के भँवर जाल से बाहर आके वैक्सीन के सुरक्षा चक्र में आई, देश मे चल रहल टीकाकरण अभियान के हिस्सा बनीं इहे वक्त के जरूरत बा।

थाके, टूटे, बिखरे के चर्चा के बीच कृषि कानून के बिरोध में राजधानी के बॉर्डर पर धरनारत किसान के हौसला अभी टूटल नइखे, कारण कवनो होखे। धरना जारी बा आ कब तक जारी रही इहो कवनो ठीक नइखे। दुनो पक्ष के हठ छोड़ी समस्या के हल करे के ओर प्रयास के जरूरत बा।

आवे वाला तिमाही में भोजपुरी बहुल क्षेत्र यूपी में पंचायत चुनाव के बिगुल बाजि गइल बा। कवनो सीट आरक्षित हो गइल बा त कवनो सामान्य खातिर उपलब्ध हो गइल। आरक्षित सीट के भावी प्रधान लोग के सालों के खर्चा आ मेहनत पर पानी फिर गइल बा।

खिलाड़ी बदलल बा खेल ना, खाड़ नइखेन हो सकत त का गिरा त सकत बान ? राजनीति के कीड़ा चैन थोड़े लेवे दीही। ई गाँव के फिर से तूरी, कई फाँट होखी, जमात बनी, सबे स्वारथ साधी बाकी पत्ता खोली ना। चेहरा बदली भा उहे रही लेकिन आपन मत के प्रयोग जरूर करीं नीक साफ सुथरा छवि वाला लोग के ही चुनीं।

भोजपुरिया बघार के पहिचान सदा से खेती किसानी रहल बा। हमनीं भगिमानी बानी जा कि हमनी के लगे अनुभवी मेहनती लोग के अच्छा-खासा तदाद बा जे माटी के भोजन के रूप में बदले के जादू जानत बा। समाज खेतिहर कहेला उनके आ उनका लगे अन्न पैदा करेके उत्तम ज्ञान बा। नीक पैदावार भइल सौभाग्य के निसानी ह त फसल के बर्बादी मउवत नियन दुखदायी होला, ओह समाज खातिर जवन माटी के महतारी मानेला।

नया कलेवर से सजल प्रकृति सिरिजन के ताप से उबर के फूल-फल सिरजना की ओर बढे लागेली । फागुन के मस्ती में लोक के बिगड़ल बोल चुहलपन वाला सुभाव से पटरी से उतरल गाड़ी भी आपन वाजिब जगह काबिज होखे के भरपूर कोशिश में लउकेला। इहे त लोक के खूबी ह ऊ जानेला कब का करे के चाही।

मर्यादा पुरुषोत्तम राम के जन्मदिन के रामनवमी के परब के रूप में मनावे के रीत सदियन से चलल आ रहल बा । कुल तैयारी त ठीक बा होखही के चाही, लेकिन ओकरा पहिले अपना अंतर्मन के सवारे के बा। देखे के बा कि हियरा पवित्र बा कि ना ? स्वागत के

योग्य बानी जा कि ना ? अगर नइखीं जा त साँचे मने अंतर्मन के साफ कइला के जरूरत बा। तबे रामनवमी के पावन परब के मनावल सुफल होई।

गेहूँ के सोनहली बाली के जब बयार दुलरावेले त एगो मधुर संगीत फिजा में गूँज उठेला जवना के सुनि के खेतिहर के मन-मोर नाच उठेला। मेहनत के लहलहात फसल कटाये खातिर अगुता जाला त मौसम खुशगवार अउरी किसान खुशहाल दिखे लागेलन । मौसम में लगातार हो रहल बदलाव से लड़े खातिर लोक समाज आपन खान-पान में बदलाव लियावेला। गरम तेलउँस चीझन से मोह तूरत ठंढा तासीर के खान-पान का ओरि अपना मन के मोड़ ले लेला । एहि बदलाव वाली घड़ी के साक्षी बनेला सतुवान । जेमा नावा फसल के सतुआ के साथे काँच आम के चटनी आ पन्ना खाये के रिवाज ह अपना बघार में। चौपट होत खेती किसानी के दौर में सतुवान जइसन परब बस प्रतीक के रूप में ही मनावल जा रहल बा ।

आज वक्त के जरूरत बा समय के माँग भी इहे बा कि खेती के लाभ के सौदा बनावे के बा त बैज्ञानिक ढंग के अपनावे के परी। वैज्ञानिक ढंग पुरखन के समय से चलल आ रहल तरीका के निखरल आ फायदा

वाला रूप है जेमा ओतने खेत में कम समय, मेहनत व लागत से अधिका पैदावार मिल सकत बा । एकरा खातिर सिर्फ सोच बदले के जरूरत बा।

सिरिजन के एह अंक से पाठक लोग के मन मे गाँव के माटी के सोन्ह महक के तनिको एहसास करा पवनी जा त ऊ हमनी खातिर बड़का इनाम होई बताइब जरूर।

राऊर आपन, 



(तारकेश्वर राय)

साढ़ के गोबरे अडानीदेव दारू बनाइ....

अडानी के सहयोग से छत्तीसगढ़ सरकार अब गोबर से हर्बल पौष्टिक आ स्वास्थ्य के बढ़ावेवाला शराब बनाई एके कहल जाला जनता के जरूरत पर ध्यान देवेवाली सरकारा देखीं, हम नान अल्कोहलिक, एकदम साग पात वाला आदमी हई बाकि कब्बो शराब के बुराई ना कइनीं आ आजो ना करबा ए जी, शराब खराब रहित त बच्चन जी एकरी प्रशंसा में एगो पूरा किताब मधुशाला थोड़े लिखले रहितीं। पंकज उदास पचहत्तर प्रतिशत गजल शराब की स्तुति आ खूबी गिनावे में गवले बाड़ें। शराब पिये के बेरा हिन्दू आपन कण्ठी आ मुसलमान आपन टोपी पाकिठ में राखि लेला। शराब में धार्मिक सद्भाव के गुण सउनल रहेला। अब त अउर नीमन बात बा कि गोबर से शराब बनी। एकदम सुद्धा जवना खेत में गोबर ढेर फेंका जाव ओह खेत में फुलाइल सरसों पर चढ़ि के मोटर अग्रा के खूब झूमो ई देखि के हम लरिकइएँ से बुझि गइल रहनीं कि गोबर में जरूर नशा बा। एगो बात त साफ बा कि गाय की गोबर से गणेश जी बनिले त जरूर साढ़ के, भँइस के गोबर से ही शराब बनि सकेला। जेतना लोग के दिमाग में गोबर घोरल बा ऊ सब गोबर से बनल हर्बल शराब पी के आपन दिमाग फ्रेश क ली आ अब समाज में केहू गोबरचोंथ, गोबरघिचोर, गोबरउरा ना रहि जाई। खेती खातिर बैल के जरूरत ना के बराबर हो गइल बा। साँढ़, भइसा लोग छुट्टा खेत एकोराहे से चरत बा लोग। कतहूँ गोबर कइल ए सभे के जन्मसिद्ध अधिकार हो गइल बा। कई जने त हमरे रोटी खा के हमरे दुआरी पर एक खाँची गोबर क जालें। हम त आज ले साहित्यिक मंच पर गोबरे साफ करत बानीं। सोबर कहि के खचियाँ भर गोबर करेवाला सभ के आभारा ई लोग ना रहित त गोबर कहाँ से आइत आ ना मिलित गोबर त हर्बल शराब त सपने नू रहित जी। गाय आ साँढ़ लोग के एहू खातिर आभार कि ई लोग ना रहित त योगी, मोदी के सरकारो ना बनिता भला होखें। अडानी के जे गोबर सुंघि के ओकर महत्व पहचान गइलें। ना त कैसेट गवइया लोग भोजपुरी संस्कृति में फूहर गा गा के

रोज गोबर करत बा लोग। नवका नवका रचनाकार लोग जल्दी से सोहरत पवला की चक्कर में यूट्यूब से ले के फेसबुक पर ले गोबर कर रहल बा लोग। के पहिचानत बा, के खोज खबर लेता? केहू का महकतो नइखे। भला होखे अडानी के कि उनका दिमाग में गोबर घुसल आ ऊ गोबर से हर्बल शराब बनावे के सोचले ना त कुल्ह गुड़ गोबरे रहल हा कल्पना करीं कि कवनो नेता चुनाव भर गोबर कइले बा, केहू मुखिया पंचायत के विकास पर गोबर पाथि दिहले बा, केहू तथाकथित कवि मंच पर सस्वर गोबर कइले बा, आ ए सभे के गोबर से बनल हर्बल शराब पिये के मिल जाव त आगे के जीवन केतना गोबराकांक्षी हो जाई। लोक में भजन भी गावल जाई - साँढ़ के गोबरे अडानीदेव दारू बनाइ..



(डॉ अनिल चौबे)  
सम्पादक "सिरिजन"



## डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ गीत/गज़ल

### तहरो अंखियन के मर गइल पानी

तहरो अंखियन के मर गइल पानी।  
सुन के अंखियन में भर गइल पानी॥  
लोर के मोल का उनुका सोझा।  
आके अंखियन में डर गइल पानी॥

नरक-नाला, नदी रहूवे, बाकी।  
जाके गंगा में तर गइल पानी॥  
धर्म के नाम पर बाटे झगड़ा।  
लाज से गिर के गड़ गई पानी॥

दान अंजुरी से करके लवटल जे।  
ओकरा अंजुरी में भर गइल पानी॥  
मोल मोती के का रहल जौहर।  
जहिया ओकर उतर गइल पानी॥

\*\_\*\_\*\_\*

### दिल के दुख आ दर्द के बतिया

दिल के दुख आ दर्द के बतिया,  
हम जानी या तूं जानऽ।  
विरह-वियोग के दिन आ रतिया,  
हम जानी या तूं जानऽ।

प्रीत के रीत कठिन यौवन में,  
यश-अपयश के मौसम।  
छलिया कइलस कवन ई घतिया,  
हम जानी या तूं जानऽ।

अपना-अपना सपना मन के,  
लोग पुरावल चाहेला।  
जोहत बानी आज ले बटिया,

हम जानी या तूं जानऽ।  
तन के पढ़ला से ना भेंटी,  
मन पढ़लेतन ऊधो ।  
कुबरो बारी चोख सवतिया ,  
हम जानी या तूं जानऽ।  
साँचो दबवले दब जाला पर,  
फेरू एक दिन ऊभरेला।  
गरजे बदरा तब फाटे छतिया,  
हम जानी या तूं जानऽ।  
कर्म के हारल केहू जौहर,  
सार्थो ना दे पावेला।  
जइसन मतिया वइसन गतिया,  
हम जानी या तूं जानऽ।



(डॉ जौहर शफियाबादी )

## राधामोहन चौबे "अंजन" जी के कविता

### दिन-नियराइल

खेयाल कर मइया, दिन नियराइल।  
दिन नियराइल बा, दिन नियराइल।।

बोलत बा, ना बोली, पंक्षी के जतिया,  
अबले पढ़ाईल ना मालिक के पतिया,  
सुतला में, जगला में, कुछ ना बुझाइल।।1।

नापल बा, जोखल ना, दियना के बाती,  
अँगना-दुआर बा अंजोर दिन राती,  
धीरे-धीरे तेल जरे, बतिहर ओराइल । 2।

केतना दिन रहही के बाटे विचार,  
केहू ना लउकत बा पीछे निहार,  
इबी गइल नइया ना मांझी भेटाइल ।3।

आई तनि हँसि-बोली के, काटल जा बेरा,  
का जानी कब उजरी, पंछी के डेरा,  
भोर भइल नैना में अंजन रचाइल।4।

\*\_\*\_\*\_\*\_\*

### मुक्तक

जेकरी अँखियन में प्यार हो जाला,  
ओकर जिनगी उधार हो जाला  
अजब बा रीति एह दुनिया के,  
जवना के तोपे चाहेला उधार हो जाला।

माई माई हवे बिसराई ना,  
बछरू छोड़ी के गइया जाइ ना,  
बेटा तोके निराश ना होखे के,  
तूँ भूला जइब, ऊ भुलाई ना।

सपनवाँ अँखियन के किनी लीह,  
दरदिया जिनिगी के छीनी लीह,  
जब आँसू के मोती छिटाए लागे,  
त हाथ बढ़ा-बढ़ा के बिनि लीह।

ढेर दिन से रोवत आइल बानी,  
लोरि के बिया अन्हारे में बोवत आइल बानी,  
जेतना जेतना ईटा-ढेला-पहाड़ गिरल,  
सगरो के सहेजी के चुपे-चुपे टोवत आइल बान।

हमरा भरोसा बा, लवटाइबिना,  
भुलाइयो के भुलवाइबि ना,  
का बड़ले बा जवना के गुमान करी,  
हमरा अइसन याचक पाइबिना।



राधामोहन चौबे "अंजन"

## स्व. पं. धरीक्षण मिश्र जी के कविता कुक्कुर

अपना आँखि कान नइखे आ की बुद्धिये जरावल बा ।  
कि बीचे बोले खातिर एक विरोधी दल बैठावल बा ॥24॥  
आपन दल मुँह देखल कही ओपर अइसन अनुशासन बा ।  
दोसर दल केतनों साँच कही ओपर तनिको विश्वास नबा ॥25॥  
हमनी के दुख सुने खातिर खुलहा ना कवनों फाटक बा ।  
अइसन बढ़ियाँ देखे लायक ई प्रतातंत्र के नाटक बा ॥26॥

### (अध्याय - 4)

इसवी अनइस सौ बावन में कुक्कुर दल पहरा पर बइठल ।  
कुक्कुरन के देखि हुँडारन का मन में भारी शंका पइठल ॥1॥  
हमनी के नीमन तेज कुक्कुर युग भर तक पहरा कइले सन ।

हमनी गरीब का कवरा से लेकिन ना कबें अघइले सन  
॥2॥

रातो दिन देखले सन हुँडारन के नया नया सावज खाइल ।  
तब का होखो केतने कुक्कुरन का मुँह में पानी भरि आइल  
॥3॥

हुँडारा कहले सन कुक्कुरन से जिनगी भर भोंकत रहि जइब ।

लेकिन हमनी का अइसन सुख कहियो सपनों में ना पइब  
॥4॥

अब से आदत छोड़ पुरान आव हमनी का साथ रह ।  
हमने के तरे आजुवे से इच्छा भर खेलत खात रह ॥5॥  
कुछ कुक्कुरन का मन में हुँडारन के बात बड़ा नीमन लागल ।

अपना मन में सोचले सन कि अब भागि हमनियों के  
जागल ॥6॥

सुनि के बइका अचरज होई कुक्कुर हुँडार के मेल भइल ।  
लेकिन कुछ दिन से ई अचरजबा रातोदिन के खेल भइल ॥7॥  
हमरा बुझात बा लोकतंत्र जे भारत में उतरल बाटे ।  
ओइमें अइसनका कुक्कुरन के सोरहो आना सुतरल बाटे ॥8॥  
कब कवन कुक्कुर कहवाँ रही एकर ना किछू ठेकाना बा ।  
मालिक के अब के पूछता सब कुक्कुरन के मनमाना बा ॥9॥  
कुक्कुरन के पेट कट होत गइल आ भागि हमन के फूटि गइल ।  
सन चौसठ से कुछ कुक्कुरन के ईमान धरम सब टूटि गइल ॥10॥  
कुक्कुरन का और हुँडारन का कुछ जन्मजात जे बैर हवे ।  
आपुस में एक दोसरा से भइला पर भेंट न खैर हवे ॥11॥  
ऊ बैर पुरनका ना जाने कब कइसे कहवाँ खोइ गइल ।  
आपुस में दूनों मिलि गइले आ सुँघा सुँघौवलि होइ गइल ॥12॥  
भोंकल कुक्कुरन के बंद भइल हुँडारन का दल में गइले सन ।  
अब आपन पेट भरे खातिर ओकनी के संहति धइले सन ॥13॥



स्व.पं. धरीक्षण मिश्र

## लोककंठ में बसल सनातन साहित्य

बदलत जमाना में बदलाव महत्वपूर्ण होखेला । बदलाव नदी ना होखेला ऊ त बाढ़ के पानी होखेला जवन अपना धारा में बहुत कुछ बहा के लेके चल जाला। ऊ नीमन ना देखे, बाउर ना देखे काहे कि बाढ़ के आपन कवनो नैतिक चरित्र ना होखेला । एह दौर के अगर बात करल जाव त साहित्य के नाम पर कचरा परोसाये लागल बाटे । आज के साहित्य के लोक से कवनो वास्ता नइखे

। अब त साहित्य एगो उद्देश्य पूर्ण के साधन हो गइल बाटे ।

साहित्य में सत्य निहित होखेला । बिना सत्य के साहित्य के कवनो अस्तित्व ना होखेला। आज के दौर बड़ा भयावह लागे लागल बाटे । आज जब प्रगतिशीलता के नाम



पर अश्लीलता साहित्य के अंग बनत जात बाटे तब एह बात के आवश्यकता अउरी बढ़ जात बाटे कि थाती के संरक्षण के जिम्मेदारी के लिही आ के एकरा के, के अपना कंधा पर, एकर पालो लेके चली । साहित्य जब ले मूल्य के संरक्षण के कसौटी पर ना कसाई ओकर व्यापक दृश्य ना लउकी । हम एक बेर आचार्य विद्यानिवास मिश्र जी के पढ़त रहनीं। उहाँ के कहत बानी कि साहित्य के प्रयोजन एगो इहो होखेला कि ओकरा मूल्य के प्रासंगिकता के जाँच खाली अपना युग के दृष्टि से ना करे के चाहीं, ओकरा के आगे के संभावना के दृष्टि से देखे के चाहीं । जब जरूरत महसूस होखे

त ओह युग में व्याप्त अंधविश्वासी आस्था के खंडन करीं बाकिर एकर मतलब ई कबो ना निकल सकेला कि ऊ युगनिरपेक्ष चाहे कालनिरपेक्ष बाटे । साहित्य देशातीत अउरी युगातीत होखेला आ ऊ देश अउरी युग के बन के ओकर अतिक्रमण करेला ताकि ऊ अपना देश अउरी युग के अधिक दीप्तिमान बना सके ।

भारतीय परम्परा श्रुति प्रधान रहल बाटे । पीढ़ी दर पीढ़ी अपना परम्परा में एकसुत्रता बरकरार राखे के चाहीं। इहाँ एकसुत्रता के मतलब मूल्य के संरक्षण से बाटे, जवन की स्थाई होखेला । स्थाई मूल्यन के पहचान तब संभव बाटे जब रउरा ओकरा अंदर प्रवेश करेम आ ई पहचाने के सामर्थ्य रखेम कि एकरा में

स्थाई का बाटे आ अस्थाई का बाटे ! युग के हिसाब से शब्द साधना बहुत महत्वपूर्ण होखेला। श्रुति परम्परा के सबसे बड़का फायदा ई होखेला कि ओकरा से संस्कृति में निरंतरता बनल रहेला। आज हमनीं किहाँ, हर अगिला पीढ़ी के ई बोध होखे लागल बाटे कि ओकर पिछलका पीढ़ी ओकरा से कम जानकार चाहें कम विकसित बाटे । एकर मतलब ई निकल के आवत बाटे कि पिछलका पीढ़ी में कहीं ना कहीं श्रुति परम्परा से मिलल ज्ञान से सही तरीका से हस्तांतरण करे में असफल रहल बाटे ।

हम अगर एही परिपेक्ष्य मे भोजपुरी के राख के देखीं त मालुम चलत बाटे कि भोजपुरी के साहित्य मे भी श्रुति साहित्य के भरमार रहल बाटे । भोजपुरी के संदर्भ मे ग्रियर्सन कहत बाड़े कि भोजपुरी ओह शक्तिशाली, स्फूर्तीपूर्ण अउरी उत्साही जाति के व्यावहारिक भाषा हवे जवन परिस्थिति अउरी समय के अनुकूल अपना के बनावे खतिरा सदा प्रस्तुत रहेले आ एकर प्रभाव हिन्दुस्तान के हर भाग पर पड़ल बाटे ।

भोजपुरी के लोकगीत भोजपुरी लोक के जान होखेला। भोजपुरिया के जान प्रान ओकरा लोकगीत मे बसेला। भोजपुरिया क्षेत्र मे जनम से लेके मरण तक ले जेतना संस्कार बनावल बाटे सबका हिसाब से गीत बनल बाटे ।

भोजपुरिया इलाका मे जन्मोत्सव के अवसर पर सोहर गावल जाला । ओकरा बाद उपनयन संस्कार के हर विधी -विधान पर गीत रचल बाटे । शादी के अवसर पर माटी कोड़ाई चाहे मटकोर के पहिले लगन चुमावे से लेके बरात के विदाई ले तमाम तरह के अलग अलग नेग चार पर गीत बनल बाटे । मिलाजुला के देखल जाव त तीस पैंतीस तरह के अलग अलग गीत बाटे खाली बियाह मे जइसे कि हल्दी कुचल, सगुन उठावल चाहे माड़ो छवावे के गीत, तिलक के गीत, गारी के गीत, चुमावन के गीत, संझा के गीत, पराती के गीत, परछावन के गीत, डोमकच के गीत, दौरा में डेग के गीत, कोहबर के गीत, गवना के गीत, धान कुटाई के गीत, चूल्हा पराई के गीत, कोहरवत के गीत, मड़वान के गीत, पीतर नेवतड़ के गीत, मातृ पूजन के गीत, कलसा धरे के गीत, द्वार पूजा के गीत, हल्दी लगावे के गीत, देवता बोलावे के गीत, माटी कोड़े के गीत, लावा भूजे के गीत, पोखरा खोने के गीत, नहवावे के गीत, नजर उतारे के गीत, नोह काटे के गीत, कपडा पहिरावे के गीत, इमली घोंटावे के गीत, गुरहत्थी के गीत, परछावन के गीत, कन्या दान के गीत, सिन्दूर दान के गीत, लावा मिलावे के गीत, गोदभराई के गीत,

बिदाई के गीत चाहे दुआर छँकाई के गीत एह सब गीतन में लोक के आत्मा के बास होखेला । एकरा अलावे देखेम त मालुम चली कि हमनी इहाँ लड़कपन मे खेले कुदे ला भी बाल गीत बाटे, लोरी गीत बाटे, मौसम के हिसाब से फगुआ, चइती, बारहमासा, कजरी, चाहे झिझियाँ, चकवा-चकई चाहे निर्गुण, चीट्ठी पर गीत, धान रोपाई के गीत, धान कटनी के गीत चाहे ऋतु गीत बनल बाटे ।

अगर हमनी के अपना से एगो पीढ़ी पुछे ताकल जाव त मालुम चली कि सब केहू के मोटा मोटी कुछ ना कुछ मुँह-जबानी ई सब इयाद बाटे बाकिर आज के पीढ़ी एह से अंजान बनल बा आ भकुआइल बाटे । ई बात हमनी के समझे के होई कि हमनी इहाँ माई आ मौसी मे अंतर होखेला । चाची, मामी, फुआ ई सब संबंधन ला खाली अंटी के घंटी डोलावला से काम ना चली । परिवार एगो सामाजिक संस्था के नाम हवे । सामाजिक संस्था लोक से चलेला अउरी ई धर्म संस्था आ राज संस्था से अलग होखेला आ एकर आपन रुप स्वरुप आ नियम होखेला ।

भारत हरदम से बहुदा संस्कृति के देश रहल बाटे । ई एकर विशिष्ट विशेषता के दरसावेला । तमाम तरह के आक्रमण एकरा पर भइल। चाहे ऊ वेदकालीन संस्कृति पर बौद्ध के आक्रमण, चाहे बौद्ध पर पुराणकाल के आक्रमण, चाहे पुराणकाल पर मुगल आक्रमण, चाहे ओकरा बाद पश्चिमी सभ्यता के आक्रमण। बाकिर सब आक्रमण से भी लोक संस्कृति बाचल रह गइल । संस्कृति के मतलब ही इहे होखेला कि ओकरा में से अवगुन हटावल जा चुकल बाटे आ नया गुन के समय के साथ स्वीकृति हो चुकल बाटे आ एकरे सारांश के धरोहर कहल जाल । हमनी सब केहू के ई नैतिक जिम्मेदारी बनत बाटे कि अपना धरोहर के राखीं आ ओकरा के सही सलामत आगे हस्तांतरण करीं । जवन रउरा जनमा नइखीं सकत ओकरा के मिटावे के अधिकार भी रउरा लगे नइखे ।



आजकल जिनगी एतना अजीब हो गइल बाटे कि सबका लगे समय के अभाव बाटे । सब केहू के अपना अपना से मतलब रह गइल बाटे । एकरा से आपन क्षति बाटे । एकरा के शहरीकरण के दोष मानीं चाहे पश्चिमीकरण के अब पुरनका खराब लागे लागल बाटे आ लोग एकरा चक्कर मे ई भुला गइल बाटे कि पुरान सबका होखे के बाटे । लोककथा जवन कि नैतिकता के पहचान आ परम्परा के ढाल रलऽ ओकर अब लोप हो चुकल बाटे।

लोक कथा कहे वाला पुरनिया अब वृद्धाश्रम में भँटात बाड़ें, ओकरा अलावा जे घर में बाचल बाटे उहो उपेक्षित बाटे । कृत्रिम रोशनी आ सूरुज के प्रकास में बहुत अंतर होखेला । सूरुज सनातन हवे आ ओकरा आगे ले रहे के बाटे । ई जेतना जल्दी बुझाये लागो ऊ सही रही । अनुसंधान जीवन के प्रगति मे सहायक होखेला बाकिर अनुसंधान के सहारे जीये के मतलब ई ना होखेला कि परम्परा के गला घाँट देहल जाव ।

भारत के परिदृश्य में इतिहास के व्याख्या हर दौर में बदलत रहल बाटे । बाजारवाद के एह दौर में आम आदमी आज कठपुतली हो गइल बाटे आ ओकरा इहे नइखे बुझात कि ओकरा के नचावत के बाटे?

आज देश के तथाकथित बुद्धिजीवी समुदाय लोक से पूर्णतया कट चुकल बाटे। ऊ आम आदमी के आकांक्षा अउरी उम्मीद के छुवे में असफल रहल बाटे । अजादी के बाद से सत्ता और लोक के बीच में अभी ले सामंजस्य स्थापित ना हो सकल । शहर अउरी गाँव के बीच के खाई दिन प्रतिदिन बढ़ल जात बाटे । काल बदलत रही बाकिर सत्य ना बदलेला। आधुनिकता मूल्यहीनता के कसौटी पर कबो स्वीकार नइखे हो सकत, नाहीं प्रगतिशीलता के मतलब अश्लीलता के व्यापकता के लगावल जा सकत बाटे ।

अगर रउरा अपना अतीत के भाड़ा पर के बुद्धि से पहचाने के कोशिश करेम त रउरा ऊ बोझिल आ बेकार लागी। अगर रउरा में स्वचिंतन आ स्वविवेक के चेतना जागी त यकीन करीं रउरा अपना अतीत आ अपना पुरखन के थाती पर गर्व करेम आ अपना गौरवशाली अतीत के समझे के कोसिस करेम ।

रंग बदल देहला से पहचान ना बदलेला । कोइल आ काग दुनू के रंगा करिया होखला बाकिर गुन के अंतर बाटे । रंगाइल सियार के भेद कबो ना कबो खुल ही जाला । राउर आपन वजूद कबो राउर रही । थेम्स गंगा माई के जगह कबो ना ले सकेली । जब आदमी दुःख मे आवेला, कब ऊ हार जाला, जब ऊ अपना आप के टुटल महसुस करेला त ओकरा आपन माई इयाद आवेली आ ओह बेरा ओकरा आपन लोक इयाद आवेला काहे कि दुःख में नकाब हट जाला आ वास्तविक स्वरूप सामने होला । व्यक्तिगत गरिमा आ सामाजिक दायित्व दुनू के बीच सामंजस्य स्थापित कइल मुश्किल हो सकत बाटे बाकिर नामुमकिन नइखे । इतिहास के समझे के कोशिश आ ओकरा के अपना स्वविवेक से समझल आ लोक-कंठ मे बसल सनातन साहित्य रुपी धरोहर के अगिला पीढ़ी के सही सलामत हस्तांतरण करे के उदेश्य से ही एगो सफल भविष्य के पटकथा लिखा सकेला।



✍जलज कुमार अनुपम

## हम गँवार हईं

हम गँवार हईं ई रउवें ना दुनियाँ कहेला  
मत भुलाई गँउवे से सारी दुनियाँ चलेला  
साँच - झूठ के फेरा में आज ले ना रहनीं  
तबो हमरा सपना के मुंगेरीलाल कहेला।१।

भाव आ भाषा बराबर में साथ ना चलेला  
भाव जेकर नाँव ह भाषा पर चढ़ दउड़ेला  
अब भाव बचाई कि भाषा बुझात नइखे  
साँच ह भावे प्रधान ह ई सब लोग कहेला।२।

किसान आ जवान देश में इहे दूगो महान  
मुअता दूनो आज तबो आपन भारत महान  
भुला गइल दूनो के त्याग ई देश आज  
अबो ना जगब त सूना हो जाई ई जहान।३।

लागल बा खउरा गाँव शहरे ना दिमाग में  
अझुराइल बा सब केहू आपन पहचान में  
अर्थ के खेल ह बाबू सब केहू ना बुझी  
रिश्तो परेशान बा आज दुनियाँ जहान में।४।

मद के चूरे मदमातल बा हर इंसान आज  
लउके ना हीत -नाता अउर परिवार आज  
करनी ना आपन देखे हँसता सब लोगवा  
कहाँ जाता दुनिया ई नइखे बुझात आज।५।

माई आ माई भाषा के करज ना उतरे  
दूनो के इज्जत कइल सभका से ना सपरे  
उहे त दूनो पहचान ह,ओह के माथे धरीं  
ऊ दूनो आँख लगवले बाड़ी तोहरे आसरे।६।

गिरजा, मस्जिद, मंदिर हमरा एके लेखा लागे  
सगरो बइठल उहे एके जे हमरो नीक लागे  
दुनियाँ के मेला झमेला ह अबो त तू बुझ  
रेलिये भाग रहल बिया गाछ वृक्ष ना भागे।७।

पंडित मुल्ला सूफी संत सब बोले एके भाषा  
उहे एक जे सबके अंदर करेला सब तमाशा  
आपन आपन किरदार निभा रहल सब लोग  
जिनगी त तमाशा जे में भरल आशा निराशा।८।

नया खेल ह बँटवारा के नया -नया ई रीत  
माई बाबू के बखरा लागल ई कइसन ह प्रीत  
खून खून के समझत नइखे समय के देवे दोष  
प्रीत बढ़ावा प्रेम पढ़ावा इहे ह देश के रीत।९।



कनक किशोर

सियासी भइल जंगली खेल

उड़त चिरईया रहि रहि सोचे , मारे कवन गुलेल  
सियासी भइल जंगली खेल ॥

एह जंगल में आज़ादी के दावा रोज ठोकाइल  
बाकिर उतपीड़न के चरचा चारो ओर सुनाइल  
बाज़ झपट्टा रोजे मारे, ना फाँसी , ना जेल ।  
सियासी भइल जंगली खेल ॥

ऊपर से ई कवन शिकारी बइठल घात लगावे  
आश्वासन के दाना छींटे रक्षक बन फुसिलावे  
कायदा आ कानून के छोड़ीं, हर सिस्टम बा फेल ।  
सियासी भइल जंगली खेल ॥

सहमल चिरई रहि रहि निरखे लिहले आँख लोराइल  
अमन - चैन जंगल के सगरी जाने कहाँ हेराइल  
दानव - मन कहवाँ ले जाई , सब सीमा के हेल ।  
सियासी भइल जंगली खेल ॥

शान्ति - दूत जे रहे कबूतर , छोड़ के खोंता भागल  
छोटका - छोटका जीव-जनावर डर से काँपे लागल  
बाघ - सिंघ अब रोज पियावत बा, लाठी में तेल ।  
सियासी भइल जंगली खेल ।



☞ सुनील कुमार तंग,  
सिवान, बिहार।

फागुन-चइत

पीयर क रंग उड़ि गइलें  
कोइलि तोर चहक न गइलें।  
हहरत दिनवाँ ओरइलें  
कोइलि तोर अहक न गइलें।

अरिया चलावे मोर सिहिके परनवाँ  
महँके चिहुँकि उठे/ सजी मधुबनवाँ  
कटहर बिरिछे मदइले  
कोइलि तोर अहक न गइले।

केकर सुधिया/करक उठे हियरा  
कउन रे कँटवा/ धँसल तोर जियरा  
मोजरल अमवाँ सिंहइले  
कोइलि तोर अहक न गइले।

अल्हर बतसवा के/ सुइया से छेदे  
कवन पिरितिया जे/कुरछे-कुरेदे  
रंगवा क दिन निगिचइले  
कोइलि तोर अहक न गइले।



☞ डा. अशोक द्विवेदी,  
सम्पादक- "पाती", (भोजपुरी दिशा-बोध के पत्रिका)

किरिन नीचे डगर आइल

बिरछ के पात से झर कुछ किरिन नीचे डगर आइल।  
कपोलन पर गरम छूअन, लुनाई हद बगर आइल।

घुमा गरदन-सुराही धूप के परिहार के बहने,  
समुझ कहवाँ पइल आतुर अधर अधरन कगर आइल।

न पूछऽ साँस के बावत मचल हँडहोर कतिना ना,  
हवा हऽ बौरही आखिर, अनासे लड़ झगर आइल।

बलिस्ता बाँह के होखल, कवन अपवर्ग सुख अइसन?  
लड़ल जब आँख बालम से, सरम बहुते, मगर आइल।

न चूड़ी के खनक भइलसि, न छागल ही बजल रुनझुन,  
मदीली गंध मोजर के पसर सगरी नगर आइल।

खुमारी से जिया अहदी, रहे दीं बात मौसम के,  
फगुन में का करीं जबरी केहू कुंकुम रगर आइल।

दिनेश पाण्डेय,  
पटना।

घटा में लुकाइल चनरमा

घटा में लुकाइल चनरमा ह आधा।  
चनरमा प तनले ह धनुही बियाधा।

निचलकी फलक पर सुगनवा की ठोरी,  
अधर में समेटल ह टेसू उपाधा।

धनुहिया के नीचे दु खंजन के नैना,  
विछंछल कटाही जहरतीर साधा।

मुँआँधे पिहानी प सोनिल सुराही,  
गहन चकभँवर में मरें डूबि पाधा।

लवँग डार अइसन लचीली तराई,  
उतरती तरेटी सुहावन सुगाधा।

थुमी केदलिन के सिरे पात पीपर,  
जगत केरि मूरी रचे रास काँधा।

कमलिनी प पसरल ह सारा बखेड़ा,  
गहे मन के बाधा दुरा देलि राधा।



दिनेश पाण्डेय,  
पटना।

सुनैना भौजी

सुनैना बियाहे उतरली त घर भरल मिलल। कहीं तिल धरे के जगह ना। हँसी ठिठोली के माहौल, काली पुजाई, चउठारी के रसम में दिन कइसे कट जात रहे पता ना चल पावत रहे। चार पाँच दिन में सब हीत नाता के जाते गाँव के हवेली सून पड़ गइल। सोलह कमरा के दू महला घर में पति के अलावा सास ससुर अउर एगो ननद। ननद उनका से दू बरिस बड़ रहीं, जेकर बियाह हो गइल रहे। नाम रहे प्रतिमा। नाम-रूप प्रतिमा के माफिक सुंदरो। अपना परिवार के साथे पटना रहत रही। सुनैना के मन लगावे खातिर उनकर बाबूजी अउर भइया प्रतिमा के एक महीना



खातिर रोक लेले रहे लोग। थोड़ी हीं दिन में प्रतिमा सुनैना से अइसन घुल-मिल गइली कि ननद से सहेली बन गइली। सुनैना के लगबे ना कइल कि कवनो नया घर में आइल होखीं। दुनो एक दोसरा के नाम से बोलावत रहे लोग। सूते घड़ी छोड़ के चौबीसो घंटा के साथ रहत रहे। खाना पीना तक साथे साथ। एक महीना बाद जब प्रतिमा जाये के तैयारी करे लगली त सुनैना कह के दस दिन अउर रूके खातिर राजी क लेली। आखिर सुनैना से बिछड़े के प्रतिमा के दिन आ गइल। जात खा प्रतिमा से गला मिलला के बाद अलग होत अपना

गला के हार प्रतिमा के गला में पहिरावत सुनैना कहली कि ना मत कहब ई हम बड़ ननद के ना अपना सहेली प्रतिमा के देत बानीं। रोअत विदा करत सुनैना बोलली तू त हमरा के आपन प्यार देके खरीद लिहलू: कबो जरूरत पड़े त जान मांग के देखिहऽ, सुनैना पीछा ना हटिहें। कहत रोअत सुनैना भाग के अपना कमरा में चल गइली।

दिन, साल, महीना बीतत देरी ना लागे। समय के साथ सुनैना अउर प्रतिमा के संबंधों प्रगाढ़ होत गइल। छठ अउर राखी में प्रतिमा सुनैना के पास नइहर जरूर चल आवत रही। साल में एक दू बेर सुनैना सवनपुरिया तीज ले के प्रतिमा से

मिल आवत रही। एही बीच सुनैना अउर प्रतिमा एक गो बेटा के महतारी हो गइल रहीं लोग। दुनो परिवार के जिनगी हँसत खेलत कटत रहे। बाकिर समय आज ले केकरो एक नियर ना जाला। प्रतिमा के परिवारो के केकरो नजर लाग गइल। प्रतिमा के पाहुन रमेश जीजाजी एक दिन काम पर से लौटत रहन त सामने से आवत ट्रक धक्का मारत निकल भागल। स्थानीय पुलिस धावा धायी अस्पताल ले जा के खबर देलस त प्रतिमा के काट त खून ना। धावल प्रतिमा अस्पताल पहुँच के कवनो तरह सम्हाले के प्रयास कइली बाकिर



स्थिति उनका बस के ना रहे। नइहर भाई भउजाई के खबर देली। सुनैना पति के साथ पहुँच गइली। रमेश के हालत बड़ा गंभीर रहे। सुनैना डॉक्टर के कहली जवन जरूरी होखे करीं खरचा खातिर हम तैयार बानी, देरी मत करीं आपन काम शुरू करीं। सुनैना अउर उनकर पति महेश दिन रात रमेश के सेवा में लागल रहल लोग। ब्रेन के आपरेशन रहे समय लागल जान बाच गइल बाकिर रमेश पैर से पंगु हो गइले।

परिवार में रमेशे कमाये वाला सदस्य रहन। उनका असहाय हो गइला से प्रतिमा पर दुख के पहाड़ टूट पड़ल। इलाज के दौरान अउर बादो में साथ रह के प्रतिमा के आर्थिक स्थिति से सुनैना पूरी तरह अवगत हो गइल रही। प्रतिमा कुछ छुपावे के प्रयास ना कइली। प्रतिमा एक दिन सुनैना से कहली कि तोहरा से कुछ छुपल नइखे अउर तू लोग कबतक ढोवबू लोग। ई समस्या कवनो एक दिन के नइखे। हम सोचतानीं कि अब बाबू के ओह महंगा स्कूल में पढ़ावल हमरा बस में नइखे, ओकर नाम कवनो सरकारी स्कूल में लिखवा दीं।

सुनैना ना अइसन कबो मत सोचिहस। दुखे में परिवार काम आवेला। अइसनो में काम ना आई आदमी त परिवार कवना काम के। कवनो समस्या आवेला त समाधानो आवेला। धीरज धरस। बाबू ओही स्कूल में पढ़ी। तोहार बेटा ह त हमरो एकलौता भगिना।

धीरज त धरहीं के बा सुनैना। कवनो दोसर उपाय कहाँ बा? तू त जानत बाड़ू गहना गुरिया तक रमेश के इलाज में बैचा गइल। भगवान के शुक्रगुजार बानीं कि सेनुर के लाज राख लेलन। अब त दवा अउर घर खरची खातिर कुछ करहीं के नू होई। नइहर पर नव दिन रहल जा सकेला जिनगी भर ना नू। हमार स्वभावो तू जानेलू।

ठीक बा। अब एह घड़ी अपना के संभालस। शहर में बाड़ू। गेजुएट बाड़ू। सिलाई कढ़ाई से चित्रकारी तक में निपुण। कवनो ना कवनो

उपाय हो जाई। बाबूजी के तबियत ठीक नइखे। हमहूँ काल्ह गाँवे जाइब। लऽ हई रख लऽ बीस हजार बा, कामे आई।

प्रतिमा ना ना करत रख लेली।

महीना दू महीना ना बीतल होई प्रतिमा घरे में सिलाई कढ़ाई प्रशिक्षण केंद्र खोल देली। थोड़ा समय लागल बाकिर प्रतिमा के मेहनत, लगन अउर व्यवहार से खुब बढ़िया चल गइल। अब ऊ दवा अउर खरची खातिर केकरो मोहताज ना रही। आज उनका आपन बाबा के कहलका इयाद पड़ गइल। उहाँ के बाबूजी से कहत रहीं कि बेटा बेटा के पढ़ाव ना तऽ शहर में बसाव, रोजी रोटी के तकलीफ ना होई।

प्रतिमा रमेश के छोड़ नइहर सुनैना का पास ना जा पावत रही। एही से सुनैना महीना दू महीना पर चल जात रही प्रतिमा के पास। प्रतिमा के घर देख संतोष होत रहे सुनैना के अउर सोचत रही कि भगवान कुछ छिनलन त दोसरा हाथ उठा के दे भी देलन। परीक्षा के घड़ी में तनी धीरज, धैर्य अउर धर्म के जरूरत होला।

सुनैना अभी प्रतिमा से भेंट करके गाँव लौटल रही कि खबर आइल कि उनकर तबियत अधिका खराब हो गइल बा। महेश सुनैना से कहले खेती बाड़ी के दिन बा हम ना जा पाइब तूहीं चल जा सम्हाल लिहस। सुनैना दुसरे दिन पटना पहुँच गइली। प्रतिमा के खराब हालत देख तुरंत अस्पताल ले गइली। दू दिन इलाज के बादो स्थिति में कोई सुधार ना भइल त पीएमसीएच में रेफर कर देलस। पीएमसीएच में जाँच रिपोर्ट आइल त डॉक्टर बतवलस कि प्रतिमा के दुनो किडनी खराब बा जल्दी से जल्दी एगो किडनी बदले के होई, खरचा भी करीब तीन लाख आई। सुनते सुनैना के आँख के आगे अंधेरा छा गइल बाकिर मन बरियार आ शांत कइली।

" प्रतिमा के इलाज करावे के होई, उनका के बचावे के होई, रमेश खातिर, बाबू खातिर " इहे सुनैना के दिमाग में गूँजत रहत रहे। अंत में कुछ

सोच डाॅक्टर के कहली डाॅक्टर साहेब तैयारी करीं, हम पइसा जमा कर देब। हमरो जाँच कर लीं अतना जल्दी किडनी कहाँ मिली? आपन खून जाँच खातिर देके पइसा के इंतजाम खातिर चल देली।

ऊ सोचली ई प्रतिमा के ना एगो परिवार के जान बचावे बा, ऐकरा खातिर हम कुछ उठा ना रखब। सब कुछ झाड़ देली त दू लाख के इंतजाम हो पाइल। कवनो उपाय ना देख गला के मंगलसूत्र अउर हाथ के चूड़ी बेच के एक लाख अउर व्यवस्था करके अस्पताल में जमा कर देली। संयोग से उनकर किडनी प्रतिमा से मैच कर गइल। ऊ डाॅक्टर के आपन एगो किडनी खातिर सहमति दे देली। बाकिर ई बात ना महेश के ना प्रतिमा के बतवली। ऊ जानत रही केहू ए काम के सहमति ना दी।

निश्चित समय पर आपरेशन हो गइल। डाॅक्टर बधाई देत सुनैना के बोलल कि आपरेशन सफल हो गइल, अपनो पर ध्यान दिहस। ऊ डाॅक्टर साहेब से निवेदन कइली ई बात प्रतिमा

से मत बताइब। दस दिन बाद प्रतिमा के ले के के घरे आ गइली।

महेश प्रतिमा के देखे अउर सुनैना के लेवे पटना अइलन त दुनो के दवा अउर दिनचर्या देख के उनका मन में कुछ शक हो गइल। ऊ सुनैना के आपन कसम देत कहले साँच साँच बताव का बात ह। सुनैना कहली प्रतिमा के ना बताइब तब हम बोलब। महेश से आश्वासन मिलला पर ऊ साँच बात बता देली। महेश सुन के सन्न रह गइलन। खाली अतने कहले कि तू पत्नी रूप में देवी बाड़ू।

नारी तू नारायणी।



कनक किशोर  
राँची (झारखंड)



SHOT ON MI 10T PRO

गुमान भइल बा

जब से धन भगवान भइल बा  
मन में बहुत गुमान भइल बा  
रिश्ता में रस सूख गइल अब  
अपने जन अनजान भइल बा  
साली सास ससुर घरवाली  
ए जुग में पुरधान भइल बा  
माई के बोली से बबुआ  
हे देखऽ हलकान भइल बा  
आपन खेत बटाई बाटे  
भइया से घमसान भइल बा  
चार महीना प्रेम पिता से  
बखरा में निपटान भइल बा  
ताक लगवले गहना ऊपर  
मुँह में लाम जुबान भइल बा  
पाई-पाई भाई से ले  
टीप दिहल बड़ सान भइल बा  
बाबूजी के कहस बनेचर  
सासे ससुर महान भइल बा  
ढरके अँखिया से अब पानी  
कुंद रसिक के बान भइल बा



कन्हैया प्रसाद रसिक

रक्ता छन्द (वार्णिक)

साँच हार ना सकी।  
झूठ ना चली,थकी।।  
सोच ना करीं सभे।  
नीति से डरीं सभे।।१।।  
न्यायधीस राम जी।  
ऊ दया क धाम जी।।  
भक्त के पुकार से।  
आ सकीं दुवार से।।२।।  
हाथ जोड़ लीं खड़ा।  
बा विधान जो कड़ा।।  
राम जी क नाँव लीं।  
माथ धारि पाँव लीं।।३।।  
हो सकी तबे भला।  
आ सकी सजी कला।।  
जन्म धन्य हो सकी।  
दुःख -दर्द खो सकी।।४।।  
राम नाम तृप्त हो।  
मोह में न लिप्त हो।।  
जिन्दगी न खास बा।  
मानि लीं कि नास बा।।५।।



माया शर्मा,  
पंचदेवरी,गोपालगंज(बिहार)

## भुलाइल आजु ले

बेफिकिर नदिया नहाइल ना भुलाइल आजु ले।  
धूरि में देहिया सनाइल ना भुलाइल आजु ले।

जेठ के तपती दुपहरी आम की बगिया में जा,  
तुरि टिकोरा नून खाइल ना भुलाइल आजु ले।

एकदिन पिनसिन चुरा के भागि चलनीं जोर से,  
ऊ धराइल, फिनु पिटाइल ना भुलाइल आजु ले।

खोनि के गुडुही भइल कंचा के खेला साँझि ले,  
ऊ सजी कंचा हराइल ना भुलाइल आजु ले।

बाप से मंगनीं चवन्नी जात बेरा इसकुले,  
ना मिलल, भुँइयाँ लोटाइल ना भुलाइल आजु ले।

साँझि आके बिन धुवे पग कूदि माँ की गोद में,  
लोत आँचर की लुकाइल ना भुलाइल आजु ले।

जब कबो 'संगीत' निकसे बस उहे सुर मन परे,  
लाख कोसिस ना धराइल ना भुलाइल आजु ले।

📌 संगीत सुभाष,  
प्रधान सम्पादक, सिरिजन।

## जिन्दगी बाजार में

पानी पवन धरती गगन सब हू-ब-हू संसार में।  
बस आदमी रोजे मिले बहुरूपिया किरदार में।

परसो बिकलि, काल्हो बिकलि, नाहीं पता कब-कब बिकलि,  
आजो खड़ा बिकहीं बदे ई जिन्दगी बाजार में।

हम भाव ना दिहनीं कबो लंगर के भा पतवार के  
भलहीं भँवर, नैया डुबे, खेवत चलीं मझधार में।

गमछा बन्हाइल चान आँचर में सितारा तोपि के  
हरखित इहाँ के लोग कबहूँ ना गइल दरबार में।

तिकवत ह कतने लोग अब लाठी चले, गोली चले  
जारी रही हइताल ई, भल कुछ मरसु कुकुहार में।

जल पी सकीं इक बूँद ना तब सिंधु कवना काम के,  
कुइयाँ के' जस गावत फिरीं भटकत दियारा-खार में।

सगरे भइल खारिज मुकदमा अफसरो कोर्निस करे,  
बिहसत चले 'संगीत' बनि के मंतिरी सरकार में।



📌 संगीत सुभाष,  
प्रधान सम्पादक, सिरिजन।

## दीयना कहवां जराई

आगि लागल बा मन में बोताई कहाँ,  
 सुतल हियरा के फेरु से जगाई कहाँ।।  
 केहू कतनो बन्धावेला हमरो के धीर,  
 छछनत जियरा के कहीं पेठाई कहाँ।।  
 चाहे रह गमगीन सभे अपने में लीन,  
 मन प परल खोराठी लुकाई कहाँ।।  
 दाग दरद के दरिया अपार हो गइल,  
 दुःख के नइया कगारे लगाई कहाँ।।  
 रहे पुरुखन के जवन सँइच के धइल,  
 जोगवल हीरा रतन ऊ भँटाई कहाँ।।  
 चान सुरुजो के घर जब अन्हारे भइल,  
 दियना रउवे कहीं अब जराई कहाँ।।  
 जाति में जग नसाइल ना मनई रहल,  
 माथा पत्थर प कसिके ठँठाई कहाँ।।  
 जोति अछइत सगरो धुआँ हो गइल,  
 राय तूहीं बतावऽ कि जाई कहाँ।।



☞ देवेन्द्र कुमार राय,  
 ग्राम+पो०-जमुआँव,  
 थाना-पीरो, जिला-भोजपुर, बिहार,

## गरीबी पै न होला

गरीबी पै न होला,  
 न कवनो ब्याधि भारी बा।  
 करम कइला प मिटि जाला,  
 न ई बड़का बिमारी बा।।  
 न ई बारूद बम कवनो,  
 न तलफत तोप के गोली-  
 डरीं मत व्यर्थ गुरबत से,  
 इहो जीवन के पारी बा।  
 करीं सदकर्म जीवन में,  
 रहीं मत जाल जंजर में-  
 भरीं मत दंभ तम मन में  
 अनर्गल ई खुमारी बा।  
 बने के आदमी गर हो,  
 रहीं सत ध्यान संगत में-  
 मिलल जीवन मनुज के जब  
 त बोलीं का लचारी बा।  
 बिकल ईमान अमरेन्दर,  
 दऊलत के दलाली में-  
 मलाई खूबि तू लूटलऽ  
 तबो जिनिगी उधारी बा।



☞ अमरेन्द्र कुमार सिंह  
 आरा, बिहार



बसन्त बयार

कली, अलि के संघत पा के  
खिल जाली गुलनार।  
पतझड़ के मुरझाइल गछुली  
हो जाली कचनार।।  
रुनझुन थिरके मस्त मोरनी  
मोर करे मनुहार।  
नौ नौ पोरसा छउके मन  
जब बहे बसन्त बयार।।



✍ अरविन्द श्रीवास्तव  
एकमा ( सारण) बिहार

होरी में

आवऽ मिलि के गावल जाई खूब कबीरा होरी में।  
पिपुही, झालि बजावल जाई ढोल मजीरा होरी में।।  
आपन डफली, आपन राग, ए से ना होखेला फाग।  
सबके दुअरा-दुअरा जाई, खूब जखीरा होरी में।।  
मंहगाई में रंग न बाटे, मन में नया उमंग न बाटे।  
कइसे कहऽ उड़ावल जाई, रंग अबीरा होरी में।।  
भउजी से देवर के अन-बन, जीजा-साली जियरा सन-  
सन।  
मनई से मनई के कइसे बची ओतीरा होरी में।।  
जे होरी में साँझि -सकारे, नेहिया के रंग में रंगि डारे।  
ऊ मनई ना साँचे समझीं, उहे ह हीरा होरी में।।



✍ मदन मोहन पाण्डेय  
(सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य,  
नेहरू इण्टर कालेज मंसाछापर, कुशीनगर)

गाँव

ओ बेरा त कुछु ना रहे,, ना कहीं रोड ना कहीं सड़क | आवे जाए खातिर खेतन की बीचो बीच से एकदम सोझ राहगीर रास्ता बना देसु | खेतहा गरियावासु, रुन्हान लगावसु, रास्ता पर क्कट धरसु | लेकिन तबो रास्ता बन्द करे खातिर केहू केतनो उधापन करे जाए वाला त चलिए जाउ | लगे आरे पासे कवनो इस्कूलो ना,, पढ़े खातिर या त बदुराँव जाए के पड़े ना त लछमीपुर | ओहू में बदुराँव में पाँचे ले इस्कूल रहे ओकरी ऊपर खातिर लछमीपुर जाये के पड़े,,

माने करीब दू कोस | जात जात जा, अउरी आवत आवत आवत आवत | ना कवनो सुविधा ना कौनो साधन | एतना दूर लइकन के पढ़े के भेजला के मतलब ओ के कुआँ में धकेलल | इस्कूल के नामे



सुनत बाप महतारी पहिलहीं कहे लागसु “जाए दऽ घीव के लइजू टेढ़ो भला ! जियत रहिहें त धूरो माँटी में जिनगी पार लागि जाई !”,,

लेकिन “उदयरज बाबा” का लड़िका के पढ़ावे के बड़ी शौक,, एके गो लड़िका “भैरव” | जरला तोनी के बेटा ,, शादी की करीब अट्ठारह बरिस बाद उनके जनम भइल रहे | अब बुढ़ौती में बाप बनले त छछनसु काहे ना | अरमानो बेटा के पुलिस दरोगा बनावे से कम ना | दूसर पढ़े कवन रहे | अंगरेजन के जमाना में पुलिसे मुख्तार के हनक होखे | ललकी टोपी देखते लोग भागि के घरे

में दूकि जाउ | लोग का बुझाउ कि पुलिस माने बहुत बड़हन तोफा |

उदय बाबा का त करिया अछरो से भेंट ना,, लेकिन हुशियार एतना कि गाँव जवार के पञ्च रहले | उनकी बिना त संगड़ के हाथिये ना बन्हाउ | उनके बाति एकदम ब्रम्हा के रेख होखे | कवनो

कुछु सबूत ना “उदय बाबा कहि दिहले की हँ त हँ”, | केहू के दीन ना कि उनके बाति काटि देउ | जेने निकलसु ओने बड़ी अदबी से लोग पान-सलाम करे | बेटा भैरव के पढ़ावे खातिर भी ऊ कम उधापन ना कइले | मेहरारू रोजे कहसु “आ जाए दीं, दूर के

इस्कूल बा, कहीं कुछु हो जाउ त का होई ! ना पढ़िहें त जर जायजात बा नू, इनहू के गुजर होइए जाई !”,, लेकिन उदय बाबा ना मानसु | बेटा के कन्हैया और पटरी हाथे लेके इस्कूले चलि देसु | पनरहियन ले रोजे उनके कन्हैया लेके बदुराँव इस्कूले गइले | मास्टर से कहसु, लइकन से जान पहिचान करावसु | बाद में जब भैरव खुदे इस्कूल देखि लिहले अउरी जाए लगले तब उनके डिप्टी छूटल | लेकिन तबो लड़िका के औकातिये केतना,, पहिलही दिने अकेले इस्कूले गइले अउरी सांझि खान आके हारि के भरि भरि आँखी लोर लिहले बाप से निहोरा करे लगले कि “हम ना पढ़ब !”,,

उदय बाबा हुशियार आदमी बूझि गइलें कि लड़िका हारि गइल बा, तबे कहता,, सुनते छछनत धधाके कोरा उठवले अउरी प्यार से आँख पोंछत जोश भरत कहे लगले कि -

“दूर बुरबक,, कौन मरद हवे की रन छोड़ि के भागि जइबे ! एक चौकड़िया में नाथा पट्टी, उहाँ तनी सुस्ता ली,, दूसर उछड़िया बदुराँव,, एतने त बा ! सुनS नू कहीं, पढ़ि लेबS त नूनो बेंचबS त महंग बेंचाई ! हई जेतना लड़िका लोग बा नू गुल्ली, भर्दुल्ली, सर्दुल्ली सभे तोहार गोड़ लागी !”,,

लेकिन तबो दू चार दिन ले भैरव इस्कूल जाए में बड़ी दिक्दारी कइले | लेकिन बाद में त ऊ एतना रमि गइलें कि रोकलहू ना रुकसु,, इस्कूल जाए के बा त जाए के बा | सरला सावन भरला भादों, पीठी पर बस्ता लादसु, चलि देसु | पढ़े में भी बड़ी कुशाग्र, हर इम्तहान में अक्वल आवसु | पाँच पास कइले की बाद खुरहुरिया उनके नाँव लिखाइल | उहाँ भी अपनी हुनर से सबके चहेता बनि गइले | खुरहुरिया के बाबू साहब, स्वतंत्रता आन्दोलन के सिपाही महादेव बाबू उनके पढ़ाई सुनि के बहुत प्रभावित रहनी | कौनो कार्यक्रम होखे त भैरव के बोला के जरूर हालचालि पूछी | खुरहुरिया से भी भैरव बढ़िया नम्बर से दस पास कइले |

दस पास कइले का बाद त पढ़े के ललक उनका अउरी जागि गइल | आगे के पढ़ाई खातिर उनका बनारस जाए के मन रहे जबकि उदय बाबा बनारस भेजे के एकदम तैयार ना | साँझे मरद मेहरारू अउरी बेटा के पंचायत बइठल | बेटा के मन जानते कहे लगले | “दूर बुरबक ! बनारस अउरी देउरिया में का राखल बा रे ! झूठे लमहरा जइबS ! चलि जइबS त उहाँ तोहार अउरी इहाँ हमनी के संसा में परान टंगाइल रही ! हम ना

कहेबि कि तू बनारस जा के अंगरेजी बोलS अउरी हमनी के भुला जा !”,,

“लेकिन बाबूजी कइसे भुला जायेब ! जरियो केहू भुलाला का ?”,,

“बाबू तू बूझत नइखS ! हमनी का भोजपुरिया हई जा ! हमने के भाषा बड़ी महान ह ! दुनिया में बस एगो इहे भाषा बा जवने में श्रेष्ठ के भगवान मानल जाला ! नाहीं त दखिनही पछिमही बोली में त बापो के तुम ताम होला ! बनारस जा के भाषा बदली त संस्कारो बदलि जइहें !”,,

“माने रउरा नइखीं चाहत कि राउर बेटा पढ़ि के कुछ बनि जाउ ?”,,

“चाहतानी ! लेकिन हम अधिकारी ना,, आपन सवांग चाहतानी, आपन खून चाहतानी ! जवन माई बाप के एक लोटा पानी खातिर नोकर पर आश्रित ना बनावे ! हई जेतना अंगरेज अधिकारी कुलिनी के देख ताइS नू बेटा, एकनी के माई बाप, बेटा के मुँह देखे खातिर तरसि जाले ! ई कुल बिरटेन वाला माई बाप के बृद्धाश्रम में राखेले !”,, अबहिन उदय बाबा बेटा भैरव के समझावते रहले तले उनके मलिकाइन बीच में कूदि पड़ली -

“रउरा में इहे कमी हS,, कि जवन बात धS लीले ओके एकदम दाँत से धS लीले ! आखिर उनकी बनारस पढ़ले राउर कवन घाटा होई अउरी देउरिया पढ़ले ना होई ? झूठे बाति बढ़ावS तानी !”,, उदय बाबा हुशियार आदमी मेहरारू के बाति सुनि हँसे लगलें।

“तू बड़ बुरबक हऊ,, बाति त बुझबू ना ! अरे देवरिया के पढ़ाई अउरी बनारस के पढ़ाई बाँटल

नइखे ! जवन पढ़ाई देवरिया होला उहे बनारसो होला ! जौनी तरे बनारस में क ख ग घ लिखाला ओही तरे देवरिया में भी लिखाला ! अंतर बस अतने बा कि बनारस तनी बड़हन शहर हऽ अउरी देवरिया अबे छोट बा ! दूर गइले भैरव हमनी से भी दूर हो जइहें ! आपन माई आपन माटी अउरी आपन भाषा के छोड़त उनका देर ना लागी ! हम एकदम नइखीं चाहत कि हमार बेटा काल्हि भइला बनारस से आवे त ऊ आपन भाषा ही भुला जाऊ,, अपनी बापो माई से हिंदिये में बतियावे ! हम देखतानीं नू,, कि बनारस से छवो महीना रहिके आवे वाला लोग पहिलहीं आपन भाषा भुला जाता | आपन भाषा अपनी लोग के अपना से जोड़े के सशक्त माध्यम होला ! हमनीं की भाषा भोजपुरी में संस्कार बा,, परम्परा बा,, अपनापन बा अउरी सबसे बड़हन बाति कि इज्जति करे के तरीका बा,, जवन हिंदी में नइखे ! हिंदी वाला लोग के ना संस्कार बा ना अपनापन बा,, ऊ लोग अपन संस्कारे भुला जाता लोग ! रामसुचित राय के सुनी ले कि आवेलें तऽ बापो महतारी के तुम कहेले !”,,

“अच्छा जाए दीं,, कुछु करिहें,, नीमने रहसु ! बेटा हउवें, हमनी के भुलाइयो के हँसी खुशी हो जासु त ठीके बा ! हमनियो के भगवान् बाड़े !”,,

“भगवान् का बाड़े,, इहाँ जर जायजात बा,, आपन हीत नात बा सब छूट जाई ! काल्हि भइला हमनीं की मुअला की बाद अइहें कलम चलइहें और सब खेत बारी बँचि के ले के चलि दीहें !”,,

“त का हो जाई,, रउरी बाद आखिर सगरी उन्हीं के नू ह ! मन करी रखिहें ना मन करी बँचिहें | हमनीं का देखे आइल जाई ?”,,

दुनू मरद मेहरारू में बीसवरन बोलठोल होते रहि गइल | उदय बाबा बो कहसु कि “जाए दीं” लेकिन उदय बाबा कबो मुड़ी ना उठावसु | एके गो

बतिये कहसु कि “चलऽ देवरिया में नाँव लिखा दे तानीं !”,, ई बाति सुनि के जेतने भैरव रोअसु ओतने उदय बाबा बो उदय बाबा के भला बुरा कहसु | अन्त में जब ऊ बनारस भेजे के एकदम ना तैयार भइलें त मलिकाइन धराऊ पइसा निकालि के बेटा के दे के चुपे चोरी बनारस भेजि दिहली | जब बाद में उदय बाबा जनलें त तनी मेहरारू पर रिसियइले -- “तूँ जौन कइलू ह, ठीक ना कइलू ह ! एक्के भोग बूढ़ाई में तहरा भोगे के पड़ी !”,, लेकिन अब ऊ का करबे करसु ? बेटा खातिर बनारस गइलें अउरी उनके खर्चा पानी के बंदोबस्त क अइलें |

बनारस से भैरव इन्टर कइलें, बीएसी कइलें, अउरी अब सिविल इंजीनियरी करे खातिर नाव लिखवलें | उनके इंजीनियर बनावे खातिर उदय बाबा एक बीघा खेत बँचि के पैसा दिहले तब उनके नाम लिखाइल | मरद मेहरारू का बहुत खुशी रहे कि “हमार बाबू इंजीनियर बनि गइले !”,, मेहरारू के त अब बागे ना रोकाऊ,, जहें तहें छानि के बइठि जासु,, “बाबू इंजीनियर हो गइले,, अब त बियाह के हजार जाना झुमेल मरिहें !”,, उदय बाबा का भी बड़ी खुशी रहे कि “बेटा इंजीनियर बनि जाता त बड़े बड़े लोग दुआर पर बियाह खातिर आई ! सबकी बीच में हम पगड़ी बन्हले बइठब ! सभे हमार निहोरा करी !”,,

अरमान एतना हिलोरा मारे कि जवन घाट बिहाने बन्हाऊ तवन साँझि होत होत टूटि के नदी में बहि जाऊ | रोजे दुआरी की चौकठ पर चिन्हा लागे कि हमार पतोहि ओइसन चाहीं जौन दुआरी पड़े टूके त चौकठ छू जाऊ, माने पूरा पांच फीट छौ इन्च | गोर एतना की देखते लोग के आँखि चउन्हिया जाऊ | लेकिन सोचल बाति त जब नारदो के ना रहल जिन तीनो तिरलोक घुमसु त आदमी के के पूछता | जब बियाह के बेरा भइल त उदय बाबा अपनी हिसाब से जौन पति की अलावे

सासु ससुर के भी सेवा करे ओइसन लइकी देखि के बियाह तय क दिहले । लेकिन जब भैरव का बियाह के पता चलल त ऊ बाप से जवाब सवाल लगले करे । “लइकी कितना पढ़ी लिखी है ? क्या देख के आपने शादी तय किया है ?”,,

सुनि के उदय बाबा सन्न रहि गइले । अपनी मेहरारू के बोला के लगले कहे “देखलू ? इहे बनारस ह अउरी इहे भाषा के मोल ह ! भाषा खाली बोली ना ह,, भाषा आदमी के विचारो बदलि देला ! तूहूँ इनरासन के परी ना रहलू,, लेकिन हमार बाप चाहें जइसन क दिहलें हमरा कबो कवनो एतराज ना भइल ! एइसे कि इहे हमरी भोजपुरी भाषा अउरी भोजपुरी माटी के संस्कार ह ! आन्हर होखे, कान होखे, बहिर होखे, लूल होखे, लंगड़ होखे लेकिन बाप महतारी अगर हाथ बाँहि धरा दिहल त राखे के बा ! केहू का हिम्मत नइखे कि ऊ कहि देउ कि हमरा ई दुलहिन पसंद नइखे ! लेकिन हमार बाबू आजु हमरी सामने सीना तानि के कहले हँ कि का देखि के तूँ बियाह तय कइल हऽ ! इ भाषा के फल ह !”,,

उदय बाबा का ए बाति के बहुत दुःख रहे लेकिन हुशियार आदमी,, “केहू जानी त इज्जत जाई” ई सोचि के भीतर के मारि भीतरे अंगेजि के रहि गइले । ओकरे बाद त ऊ बेटा की बियाह की ओर से एकदम मुँह बन्द कऽ लिहले । अगर केहू पूछबो करे त सोझे कहि देसु कि बियाह के बाति बनारस में चलता । कबो उनके मेहरारू का जब पतोहि उतारे के मन जागे त उदय बाबा की लगगे सरकत चलि आवसु।

“झूठे बेटा की बाति के गाँठ बान्हि लिहले बानी ! बाबू के बियाह तय करी,, ओ बेरा नू कुछु कहि दिहलें, अब ना कहिहें !”,, सुनते उदय बाबा हँसे लागसु।

“तूँ बड़ी बुरबक हउ ! अरे, जब आपन कुछु चलबे ना करी त का छटपटाइल बाडू ! चुपचाप देखत रहऽ कि कवने करे बइठता ! भैरव भोजपुरिया लइकिनी से बियाह ना करिहें ! ऊ हिन्दिया से करिहें ! अउरी हिन्दिया पतोहि तोहार गोड़ ना दबाई ! हिन्दिया पतोहि दउरा में गोड़ ना डारी ! ऊ त डोली से उतरी अउरी सासु ससुर के “माताजी नमस्ते, अउरी बाबूजी नमस्ते” करत दनदनाते घर में ढुकि जाई ! अरे, भोजपुरिया पतोहि नू डोलिए में मांग बहोरवावेली सन,, दउरी में डेग डारत संस्कार से घर में ढुकेली सन ! अब जब तहार कौनो अरमाने ना रही त का परपर परपर कइले बाडू ? उनका जब बुझाई त आपन बियाह करिहें ! हमनी का बाप महतारी हईजा, हमनियो के जवन आढ़ा दिहें,, क दिहल जाई !”,,

हालाँकि बूढ़ा बूढ़ी के अरमान पूरा त भइल, लेकिन ओ तरे ना जवने तरे ऊ लोग खाका बनावे । आपन मेहरारू त ऊ पहिलहीं से बीन लिहले रहले । बस मांग में सिन्दूर डारे भर के बियाह रहे । “जब मियाँ बीवी राजी त का उखरिहें काजी”,, एकदम सादा समारोह में बनारसे में बियाह हो गइल । ना महतारी इमली घाँटली,, ना बाप पगड़ी बान्हि के बान्हा खोलले । ना नेवता ना हँकारी, ना इज्जत ना बरोह, खाली बियाह हो गइल । पतोहियो मिलल त एकदम अंगरेजिया । हिंदी छोड़ि के भोजपुरी कबो बोलबे ना करे । बियाह की घंटा भर बाद सभे अपनी अपनी घरे गइल अउरी ऊ मारे पाउडर पोतले निकललि ना मांग में सेनुर ना गोड़ में महावर ! आवते सासु ससुर की सामने हाथ जोड़ले “नमस्ते” करत ठाड़ हो गइल । बूढ़ा बूढ़ी का देखि के तनी बाउरो लागल कि ससुर हउवें तनी लजाये के चाहीं । तनी अँचरा हाथ में लेके सलीका से सासु के गोड़ छू के गोड़ लागि लेबे के चाहीं । लेकिन कइसन ? कुछु ना कइलस । उदय बाबा बो तनी कुछु कहे के चहली त उदय बाबा दाबि देहले “कुछु मति बोलिहऽ,, तूँ जइसन



चाह ताइ ऊ भोजपुरिया गोइ लगाई हऽ ! हिन्दी में गोइ एहितरे लागल जाला”,, ।

ऊ त बियाह की बादे अपनी दुलहा भैरव से कहि दिहलस कि “में गाँव में नहीं रहूँगी ! कभी एक दो दिन के लिए चली जाऊँ तो वह अलग बात है ! लेकिन हमसे यदि मर्यादा और परम्पराओं का निर्वहन करवाओगे तो यह नहीं होगा !”,, भैरव का करसु,, उनहूँ का “जौन रोगिया का भावे तौन बैदा फरमावे” ठीके हो गइल ।

अब त एने गाँव में बाप महतारी और शहर में बेटा पतोहि,, परिवार छीटा गइल । देखा दरस में भी सालो साल बीति जाऊ लेकिन केहू केहू के झिरखिरी ना देखि पावे । कबो देखे देखावे के मन होखे तब्बो बूढ़े बूढ़ी का जाए के पड़े, बेटा पतोहि का ओ लोग से कवनो गरजे ना । हालाकि समय की साथे सब जखम भरि गइल । जिनगी अपनी चले के रास्ता भी बना लिहलस । बूढ़ा बूढ़ी भी अकेले जीये के आदत डारि लिहल लोग । बेटा हउवें त हउवें,, पतोहि ह त ह । अब चाहें जइसन होखे,, नीमन होखे बाउर होखे, अंगेज तऽ करे के पड़ी । जब इहे परिवार बा त का कइले जाई । अब एतने से गरजो रहे कि भैरव अउरी उनके परिवार हमके आपन मानो । हमनीं के माई बाबूजी कहो ।

लेकिन तब्बो उदय बाबा का बुझाऊ कि “हमार परिवार बड़ी बढ़ल-चढ़ल बा ! हमार बेटा इंजीनियर ह,, ऊ बड़ी पइसा कमाला !”,, चलसु तऽ बुझाऊ कि धरती दबावत चलऽ ताड़े । खाली बेटा के नोकरी बेटा के आमदनी बेटा के घर दुआर अउरी नाती नतिनी के बड़ाई की अलावे कुछु दूसर बतिये ना । ना दूसर कहसु ना दूसर सुनसु ।

समय का बीतत देरी ना लागल । कुछुए दिन में नात नतकुर से घर भरि गइल । लेकिन ई सुख बूढ़ा बूढ़ी के कहाँ मिलल । जब खुद गाँव में

अउरी नात नतकुर बनारस में त ई सुख कइसे मिली ? अब त नाती नतिनी भी पोढ़ा गइल रहले सन । बडकी लइकी अब दस में पढ़े अउरी दुनो लइका एगो आठ में अउरी एगो सात में । नाती नातिन के देखले उदय बाबा का दू बरिस हो गइल रहे । अब त बार बार मन ओनिये जाऊ कि “नतिया केतहत भइल होइहें सन ? कइसन भइल होइहें सन ?”,, सोचत सोचत एकदिन उठले मेहरारू के साथे लिहले अउरी बनारस चलि दिहले । उहाँ पहुँचले त सेवा सत्कार त जवन होखे के रहे तवन त भइबे कइल लेकिन बेटा पतोहि ओ लोग के गोइ छू के गोइ ना लागल लोग । एकर उदय बाबा बो का बड़ी दुःख रहे लेकिन उदय बाबा धीरे से समझा दिहले कि “अगर गोइ छू के गोइ लगवावे के रहे त बनारस काहे खातिर भेजलू ? भोजपुरी की तरे खोजलू त इहाँ ना चली ! हिन्दी में एहितरे गोइ लागल जाला !”,,

नाती नातिन के देखि के दूनू बूढ़ा बूढ़ी के बड़ी उछाह रहे । ओकनो का आज्ञा आजी के देखले जमीन पर गोइ ना,, बुझाऊ कि कवनो अतर्धन मिलि गइल बा । एको छन छोड़े सन ना । कहाँ उठाई, कहाँ बइठाई । उदय बाबा का भी इंजीनियर के बाप भइला के बड़ी घमण्ड,, एकेदिन में पूरा बनारस घूमि अइलें कि इंजीनियर साहब हमार बेटा हवें अउरी हम घर के मालिक हई ! ई बाति कहत में गर्व से गज भर के उनके छाती हो जाऊ । राति में भी बइठले त अपना के बइहन देखावे के कवनो उपक्रम छोड़ले ना ।

दूसरे दिन बिहाने के बेरा रहे । घरे पेपर आ गइल रहे अउरी सभे बइठल पेपर पढ़त रहे । एगो कुर्सी पर उदय बाबा,, तनी मनी दूर हटि के एगो कुर्सी पर भैरव । उदय बाबा की ठीक सामने कुर्सी पर बइठलि नातिन पेपर बाँचि के उनके सुनावति रहे अउरी दुनो नाती उहें उनका से सटि के खेलत रहले सन । तले पेपर में परिवार के कवनो प्रसंग

आ गइल | अब त उदय बाबा फेरू से परिवार में आपनी श्रेष्ठता के पूल बान्हत नाती नतिनी कुलिनी के परिवार के परिभाषा लगले समझावे | “परिवार बृक्ष की तरे होला ! परिवार रुपी बृक्ष के जड़ होला दादा दादी,, जैसे हमनी का | बृक्ष के तना अउरी डाली होला पापा मम्मी,, माने तोह लोगन के बाप महतारी | अउरी नाती नातिन बृक्ष के मीठा मीठा फल होले ! जइसे तोह लोगन |”,,

“तो बाबाजी में क्या हूँ ?”,, छोटका नाती पूछलस त उदय बाबा ओके गाल पकड़ि के प्यार से कहलें

“तूँ हूँ फल हवऽ !”,, कहि के उदय बाबा अबे गर्व करे के छाती फुलवलहीं रहले तले भैरव कहे लगले |

“लेकिन बाबूजी दादा दादी परिवार के सदस्य नहीं होते ! यह ठीक है कि परिवार बृक्ष के जैसे होता लेकिन उस बृक्ष के जड़ और तना दादा दादी नहीं बल्कि पापा मम्मी होते !”,, सुनिके उदय बाबा अवाक,, मुँह बवाइल कि बवाइले रहि गइल |

“त दादी दादी का होले ?”,,

“दादा दादी का परिवार अलग है ! समाज शास्त्र यही कहता कि मां बाप के परिवार में बेटा है ! लेकिन बेटा के परिवार में माई बाप नहीं आते ! आप खुद ही सोचिये कि एक माई बाप के दो बेटे हैं,, दोनों का अलग अलग परिवार है,, तो माई बाप दोनों परिवारों में कैसे आयेंगे ?”,, भैरव की बाति पर उदय बाबा के मुँह खुलल कि खुलले रहि गइल | अब उनका जुबान कहाँ कि कुछु बोलियो पावसु | एने भैरव आपन बाति कहि के पेपर पर फेरू नजर गड़ा पढ़े लगले त ओने उदय बाबा लाज की मारे काठ हो गइले | जइसे ऊ भैरव की परिवार में जबरजस्ती घुसे के कोशिस करत

होखसु अउरी उनके चोरी पकड़ा गइल होखे | भैरव जबरजस्ती घर में से उनके भगावत होखसु |

“बस एतने नू बाकी रहल ह कि हम उनकी परिवार के सदस्य रहनी हँ ! चलऽ आजु इहो खतम भइल !”,, सोचत जुबान पर अइसन ताला लागल कि फेरू कुछु बोले के हूबे ना रहि गइल | छन भर में ही विचार के समुन्दर हिलोरा लेबे लागल |

“भैरव अब इंजीनियर बनि गइलें, ऊ बड़हन आदमी हो गइलें, अब उनका अपनी परिवार में बापो महतारी के कौनो जरूरत नइखे | ऊ इहे नू कहल चाहऽ ताड़े कि,, बाप उनकी परिवार के जब हइये ना हउवें तऽ काहे खातिर आवता ? इहे हमरी भोजपुरी अउरी उनकी हिंदी में अन्तर होला | हमार भोजपुरी संस्कार देला उनके हिंदी उनके अधिकार देला ! हमार भोजपुरी रिश्ता के महत्व देला लेकिन उनकी हिंदी में रिश्ता भी औपचारिके होला ! भोजपुरी बाप माई के परिवार के जड़ कहेला त हिंदी बोझ कहेला | हम झूठे इहाँ आइल बानी जवने परिवार के हम सदस्य ना हईं ओ परिवार में हमार गइल बेकार बा ! अब इहाँ अउरी रुकलो ठीक नइखे !”,, धीरे से आपन झोरा उठवले मलिकाइन के लिहले अउरी गाँवे चलि अइले | केहू रोकहूँ ना गइल |



सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा  
ग्राम - भठही शुकुल  
थाना पटहेरवा कुशीनगर उत्तर प्रदेश



### पात्र परिचय

1.	किसुन	नायक
2.	संजय	किसुन के बेटा
3.	संगीता	संजय के माई
4.	राजेस	खलनायक
5.	सरपंच	गाँव के सरपंच
6.	रमेसर	किसुन के संघतिया
7.	गनेस	गाँव के सभ्य अदिमी
8.	परमेसर	गाँव के सभ्य अदिमी
9.	टेसलाल	अँजली के बाबूजी
10.	अंजली	टेसलाल के बेटी
11.	परपंच	गाँव के कुटिल
12.	कमीना	" "
13.	म0 प्रबंधक	बैंक के महा प्रबंधक
14.	दरोगा	दरोगा
15.	जमुना	राजेस के बाबूजी
16.	बिमला	राजेस के मेहरारू
17.	पारबती	राजेस के माई
18.	अन्य	अन्य।

स्थान - किसुन के घर

समय - रात

निरदेस - (रात के पहर में किसुन सुतल बाड़न। आ सपना में देखऽताड़न कि संजय सराब पीअताड़न। अँजली उनुका के हाथ जोर के बरीजऽताड़ी कि तू सराब मत पीअ। घर परिवार उजर जाई। मंच के रोसनी प्रभावकारी रात )

अँजली - संजय, हम तोहार हाथ जोरऽतानी तूँ सराब मत पीअ। घर परिवार उजर जाई संजय।

संजय - हम पीअब सराब पीअब तोहरा कहे से ना मानब। तूँ सुनल चाहत बाडु कि तूँ हमार के हउ?

अँजली - हँ हँ सुनल चाहत हई।

संजय - त कान खोल के सुन ल तूँ हमार बिसय भोग के बस्तू हउ। (संवाद के पुनरावृत्ति कइल जाई)

(सपना के दृश्य खतम होता जवना के बाद नीचे ओला दृश्य दिआई)

किसुन - (एकाएक चिचिआ उठऽताड़न) संजय हो .....।

सरपंच - (नेपथ्य से) का भइल किसुन भइया का भइल हो।

किसुन - (छछनत बाड़न) हमार घरवा बरबाद हो गइल। हम ... हम लुटा गइलीं हो।

सरपंच - (नेपथ्य से) धावन सँ रे, किसुन भइया लुटा गइलन, बरबाद हो गइलन।

अदिमी - (नेपथ्य से) केवड़िया त बन्द बउए भीतरवा चहुँल कइसे जाव। जानल कइसे जाव कि का भइल बाटे किसुन चाचा के।

किसुन - हमार मनवा ना पतिआत रहे कि रजेसवा अइसन बरियार घात करी, धोखा दिही बाकि ... बाकि हमरा करेजवा पर पत्थल दबा देलस। हमरा अरमनवा के मुड़ी ममोर दिहलस हो। (बिलखत बाड़न)

सरपंच - (नेपथ्य से) सोचन सँ मत रे केवड़िया के कब्जा तूर के दुकन सँ।

अदिमी - (नेपथ्य से) कबजओ त टस मस नइखे होखत आ दूअत नइखे। (नेपथ्य के परदा पूरा हिलऽता)

सरपंच - (नेपथ्य से) सब मिल के केवड़िये के धकिया घालन सँ।

किसुन - रजेसवा रे तें हमरा संजय के सराब पिआ के सनका दिहले। उनुकर मन हमरा से फरका करा दिहले रे। कइसे ना सोहाइल तोरा एह घरवा के सुखवा रे। हमरा बिस्वास ना रहे कि तें हमरा बेटा के अपना बिस्वास में लेके बिस्वास घात करबे। अब तुरी जीव तोरा दुनिया में हमरा साँसत बुझाता, आ सकेत लागता हमरा रे। (संवेदना में बोलला के बाद खटिया से नीचे गिर के बेहोस हो जाताड़न।)

सरपंच - (नेपथ्य से) सब मिल के केवड़िया धकिया द सन ना रे। (सभे अन्दर आवता)

सरपंच - का भइल किसुन भइया का भइल हो? घर के सब समान त सहिए बा।

अदिमी - किसुन भइया, ए किसुन भइया। (बेहोस बाड़न)

सरपंच - भाई, तू हाली जाके डाक्टर साहेब के लिआ आवऽ।

अदिमी - गइले में देरी बा आवे में देरी ना होई हमरा।

सरपंच - रात के बात बा आवे में असकतिअइहें बाकि लिअइए के अइहऽ।

अदिमी - फिकिर जन करऽ असकतिअइहें त किसुन भइया खातिर खटिया सहिते टांग के लेआइब सँ। (कहत प्रस्थान)

सरपंच - (पीछे मुड़के) जरूरत परी त अइसने करिहऽ लोग। किसुन भइया, ए किसुन भइया (लोर पौछत) कुछो बोलऽ भइया, तूँ आँख काहे मूँद लिहलऽ, तोहरा पर कवन गरदिस आ गइल भइया।

किसुन - (धीमा स्वर में) के ह सरपंच?

सरपंच - हँ भइया हँ, हम हई तोहार सरपंच, तोहार छोटका भाई, तोहार सद् बेवहार के काएल सरपंच आ तोहार ईमान से इमानदारी के सबक लेबे ओला सरपंच।

किसुन - सरपंच।

सरपंच - कहऽ भइया।

किसुन - एह पत्थल के जहान में इनसान के अब कवन जरूरत बा हो ?

सरपंच - एह पत्थल के जहान में इनसान ना रहिहें त पत्थल के आपन महत्व कुछ ना रह जाई। भइया, हम तोहरा से वादा करत हई कि जौन पत्थल बेकाम के होई आ तोहरा नियन इनसान के बाधा चहुँपावत होई तौन के हम कबार घालब, ओकरा के खाई में बिग घालब।

डाक्टर - (अदिमी संगे प्रवेश) का भइल बा इनिका, हटीं तनि हवा आवे दिहीं सभे।

अदिमी - बाँस के बेना लेआई?

डाक्टर - हँ हँ ले आई हाँकीं। (अदिमी हाँकता)

डाक्टर - (जाँच के बाद) ई सुतला समय में कवनो अइसन असुभ सपना देख लिहले बाइन जौना से इन्हिका सदमा चहुँप गइल बा। हम सुई लगा देत हईं। बल्ड प्रेसर जादे बढ़ गइल हईन। ब्रेन हेमरेज हो सकत रहे। ऊ टर गइल। निमन कइलीं सभे, समय से हमरा के बोला लिहलीं। ठीक हो जइहें। जे इनिकर आपन होई ओकरा लागे लिआ जाके मिला दिहब। घुमा फिरा देबे से, मन चित बदल जाई।

सरपंच - ठीक बा। हम उहे करब।

धीरे धीरे परदा गिरत बा।

दृश्य दोसर

स्थान - संजय के डेरा

समय - दिन

निरदेस - गार्ड दुआर पर ठाड़ बा। सरपंच किसुन आ संगीता के लिहले आवताइन।

सरपंच - संजय के डेरा इहे ह।

गार्ड - जी हँ, बाकि रउरा श्री संजय जी ना कहके गँवार नियन काहे बोलऽतानी जी?

सरपंच - हमार गाँव के मिठास भरल बोली तोहरा गँवार के बोली लागता। जा जाके संजय से कह द कि तोहार बाबूजी आइल बाइन, साथे माइओ आइल बाड़ी तोहार। आ उन्हुका संगे एगो अउर अदिमी बाइन। ऊ अपना के सरपंच बतावताइन।



गार्ड - ठीक बा बोला देतानी बाकि जब तक उहाँ के आ नइखीं जात तब तक रउरा सभे एहिजे ठाड़ रहीं। हमरा जाते खिरकी देने झांकझुक जन करे लागब। चेता देत हई, हम। काहे कि रउरा सभे हमरा खातिर अनचिन्ह बानी सँ। (प्रस्थान)

सरपंच - ई त बड़ी अईठता ए भइया। तोहरा के बाबूजी बतवलो पर तनिको तरजिह ना देलस हउए।

किसुन - गार्ड ह। जतना बुधि हईस ततना बतिअइलस ह। एह में दुख मत मानस।

सरपंच - कइसे ना दुख मानी? हमरा त बुझाता कि एकरा के सिखावल पढ़ावल गइल बउए कि गाँव के केहू आई त एही तरे बोलिहे आ बरताव करिहे। कर देलस। देखा देलस आपन बेवहार। नउआ रे, कपार में कतना बार, त मालिक गिनिये लिहीं, काट देत हई। बाकि रह गइल, अब संजये के सलुक देखे के बा, सेहू देखिए लिआई।

संजय - ( गार्ड साथे प्रवेश ) के ह, ई लोग के कहाँ घर हउए हो?

गार्ड - इहें सभे बताइब। हम का बतायीं। बतायीं सभे चुप काहे बानीं आकि अँठिली अँटक गइल बा। भुकुआइल बानी सभे ? अफिसर के नू डेरा ह कि मजाक बुझ लिहले बानी सभे। रहे के देहात में अब साहेब के आगे बोलिए नइखे निकलत। साहेब, पूरा लछन ई लोग के देहाती के बा।

सरपंच - संजय, तू अपना बाबूजी के नइखस चिन्हत, आ अपना माइओ के नइखस जानत? हमहँू त तोहरे गाँव के हई आ जब तोहरे गाँव के हई त तोहार केहू लगते होखब?

संजय - के हउए हमार बाबूजी? आ के हई हमार माई? हम त केहू के चिन्हते नइखीं।

सरपंच - किसुन भइया हवन तोहार बाबूजी आ संगीता भउजी हई तोहार माई।

संजय - (चिहाके) किसुन? ना ना, हम त कवनो किसुन बिसुन के नइखीं जानत। संगीतो गीतो के नइखीं पहचानत। जब गाँव के बतावत बाइस लोग त पानी पी ल आ एहिजा से जल्दी जा लोग। अनचिन्ह के ठहरे ना देब। दुख लागी त लागी।

सरपंच - संजय, तँू सहर में आके एतना बदल गइलस आ जे पैदा कइल सेकरो के भूला गइलस?

संजय - हमार बेसी समय काहे बरबाद करऽताइस, हम कहऽतानी न कि हम केहू के नइखीं चिन्हत।

सरपंच - संजय, अबहियों मोका बा जदि तू सहर में आके भूला गइल होखस त ठीक से इयाद करऽ आ ठिक से चिन्हस, ई तोहार के हवन आ इन्हिका का जरूरत बा तोहार। इन्हिकर समय के मारल चेहरा तोहार सहारा के आस जोहता। ना चिन्हे के बात कह के तू इन्हिका के निरास काहे करऽताइस? हुक काहे देताइस करेजा में। त का तोहरा के अपना गरभ में नौ महिना ढोवे ओली इहो तोहार माई ना हई?

संजय - कहाँ से कवन औरत लेआ के ठाड़ कर दिहलस आ अदिमी? जेकरा के माई आ बाबूजी स्वीकारे के बिबस कइले बाइस हमरा के। एक बेर का हम सय बेर इहे कहब कि ई लोग हमार केहू ना ह, ना ना ह हमार।

सरपंच - संजय, तोहार कुसलता के चाह आ राजेस के डाह इन्हिकर तबियत खराब कर दिहले बा। ई सोचत कि हमार घर के गुलसन सही सलामत रहे, डाक्टर साहेब सलाह दिहलीं कि इन्हिकर जे आपन होखे सेकरा से मिला दिहीं सभे। साएद मिल जाए से स्वास्थ्य में सुधार आ जाए। ई अपना जिनिगी में जवन कइलन तवन तोहरा खातिर कइलन हम साकछी बानी, संजय।

संजय - लेकिन आज हम कहऽतानी कि जवन ई कइलन तवन ई आपन खजाना भरे खातिर कइलन। बाप होके ई हमरा के लूट लिहलन।

किसुन - संजय, हम तोरा के लूट लिहलीं रे। अइसन लूट लिहलीं कि तें हमरा सनमुख अइले त परनामो भूला गइले। हम अपना अवलाद से का सुने के का सुनऽतानी?

संजय - हँ हँ तू हमरा के लूट लिहलऽ। परनाम बड़ अदिमी के कइल जाला। तू लुटेरा हवऽ लुटेरा। चल जा एहिजा स,े हटऽ। हम तोहरा अइसन लुटेरा बाप के नइखीं देखल चाहत। हम तोहार औलाद ना हईं।

किसुन - संजय ....।

संजय - हमार सच्चाई तोहरा मरचाई नियन लागता। हमरा बिआह में तूँ दू लाख रोपेआ नइखऽ लिहले आ हमरा के पतो नइखऽ चले दिहले?

किसुन - के कहऽता ई कुल्ही बात?

संजय - रजेसवा।

किसुन - आ ऊ रोपेआ हमरा के दिहले के बउए?

संजय - हमार ससुर।

किसुन - ऊ जबान खोलिहें हमरा भिरी कि रोपेआ दिहले हईं?

संजय - ना खोलिहें।

किसुन - काहे, काहे ना खोलिहें, काहे ना सकरिहें आ काहे ना हँ बोलिहें जब रोपेआ दिहले बाड़न आ हम लिहले बानी त?

संजय - एह से कि आपन बेटी दिहले बाड़न। बेटी दिहल आ हारल अदिमी जबान ना खोले। आ तोहरा अइसन अदिमी त पहिलहीं जबान सी दिहले बा उनुकर।

किसुन - जबान खोलेला, ना खोलेला एकर मतलब सारा सर झूठ ह। तू झूठ बोलऽताइऽ। संजय, हम तोहरा से जतने पेआर कइले रहीं ततने घिरिना हो रहल बा। आइल रहीं ई सोच के कि संजय हमार बेटा ह, हम जाइब त आदर से एक लोटा पानी दिही, पानी देबे से पहीले परनाम करी हमरा के। अपना माइओ के आदर करी। संजय, तोहरा से हम पनिओ पी लिहलीं आ परनामोे पा लिहलीं। संजय, इयाद करऽ तुहीं हमार ऊ बेटा हवऽ कि तूँ कहत रहऽ, बाबूजी हो तोहार परवरिस हम करब। फिकिर मत करऽ। हो गइल हमार परवरिस संजय हो गइल। कुकुरो दूगो रोटी तबे खाला जब ओकरा के सरधा से दिआला। हम कुकुर ना इनसान हइं इनसान। हम एह बेर किरिया खातानी संजय, ना आइब तोहार चउकठ लांधे, ना आइब तोहरा दुआर पर दुगो रोटी मांगे, ना, ना। संजय, एह जीवन में तोहरा से कवनो चाह ना रह गइल कि हम मरत रहब आ तूँ हमरा के पानी देबऽ। जान गइलीं आपन ना ह हमार।

संगीता - सरपंच देवर जी।

सरपंच - कहऽ भउजी।

संगीता - जवन बेटा बाप के पानी उतार देलस तवन बेटा के बेटा कहे में हमार दुधो लजाता। सरपंच देवर जी, हमनी के छछनकेे मू जाइब सँ सपरी त तू परवाह कर दिहऽ, ना होई त कहीं फेंक दिहऽ बाकि अइसन बेटा के परतिछा में लास जन सरइहऽ। आपन ना ह हमार। (लोर पौछत बाड़ी)

सरपंच - रोअ जन भउजी, रोअ जन, अइसन असुभ बचन जन बोलऽ। तोहार परवरिस हम करब, गाँव के देवर होके तोहार बेटा के जगह हम लिहब। बेमार हेमार परला पर दवा के एगो टिकिया जुटा के हम दिहब भउजी। चलऽ भइया चलऽ बहुत हो गइल। ई पढ़ल लिखल रहन। इनिका तनि सोचे के चाहत रहे कि रजेसवा आग लगावता त सजग हो जाई। घर लहारता

त बचाई। काहे कि इन्हिकर जबाबदेही बनत रहे बाकि .... बाकि ई त सजगे ना भइलन आ ना घरे बचइलन। ठिके कहल बा कि घर के चिराग रोसनिये देला नाही त घरे लहरा देला।

अँजली - (प्रवेश) ई कुल्ही का होखऽता। बाबूजी रउरा अन्दर चलीं, माई जी रउरो अन्दर चलीं आ रउरो चलीं सरपंच चाचा, पानी पीहीं।

किसुन - अँजली, तोहार सत्कार हमनी के दूनों प्राणी स्वीकार कर लेलीं सँ आ तोहार सरपंचो चाचा कबुल क लिहलन। एगो बेटा के बेवहार से अघा गइलीं सँ। तू जेकर हउ ओकरे बन के रहऽ, तूँ हमरा खातिर ओकरा से पराया जन बनऽ। ओकर राह बदल गइल बा, ऊ तोहार जिनिगी तबाह कर दिही। अब हमनी के चलत बानी सँ।

अँजली - ना बाबूजी ना, हम रउरा सभे संगे चलब। लुगा मेेँ पेवन साट के माई रहिहें त हमहूँ रह लिहब। सभे खँड़ा टुका रोटी खाई त हमहूँ खाके जी लिहब बाबूजी। बाकि .... बाकि बाबूजी हम मुँह ना खोलब आ ना मांगब कि हमरा घीव घँसल रोटी चाहीं। बिस्वास करीं बाबूजी आधा अँचरी जमीन पर बिछाइब त आधा ओढ़ब। बिस्वास करीं बाबूजी, हम दरकार भर पएर पसारब आ छूँछो में दिन गुजारब।

सरपंच - किसुन भइया, बहू के आतमा तोहरा सुख दुःख में संग रहे के इजाजत चाहता कुछ सोचऽ भइया .....

अँजली - हम राउर हाथ जोरऽतानी, हँ कहीं बाबूजी हँ, एह पतोह के अँचरा में ना के भाव मत डालीं बाबूजी।

संगीता - जेकरा के मोसिबत छू देला ओकर दिन पतरा जाला। आ संग में रहे ओला पेरा जाला। मोसिबत, सीता के रवनवा के हाथे हरन करा देलस। निरदोस सीता पेरा गइली, बहू ।

अँजली - सीता अपना सत धरम के निरबाह कइली आ सनसार के देखा दिहली कि दुख में धीरज से रहल जाला। पेरइली ना माई जी। सरपंच चाचा, राउर अगेआ का होखत बउए।

सरपंच - बहू के दिलासा का देताइऽ किसुन भइया?

किसुन - चलिहऽ बहू लिआ चलब तोहरा के हम अपना संगे बाकि बक्त के इन्तजार करऽ। (आँसू पोछताइन)

संगीता - आपन आज आपन ना रह गइल। सरपंच बबुआ, धरती से कह द बीता भर जगह दिहें, आसमान से बता द बेटा ना जुड़इलस जुड़इहें आ बेयार से सुना द सीतलता दिहें हमनी के। (डँहक के लोर पोछऽताड़ी। )

सरपंच - (अफसोस के लंबा साँस लेके ) आपन जब बेगाना हो जाला त धरती, आसमान आ बेयार के भरोसा हट जाला। (टूटला नियन) भइया चलऽ, हमरा अइसन भरोसा ना रहे कि आपन जामल अपना से अइसन सलुक करी, ना त हम तोहरा के इहँवा काहे के लिआ अइतीं।

गीत

किसुन - पत्थल इनसान पइलीं, पइलीं ना ईमनवा

ईमनवा रे, ए ईमनवा .....

मनवा रे, ए हमार मनवा ....।

नेकी कइलीं धोखा मिलल मिलल तबहिया

बाड़े अझुराइल हमरी जिनिगी के रहिया

जिनगी में मिलल हमरी माटी के मकनवा

सपनवा रे, ए सपनवा ....

मनवा रे, ए हमार मनवा ....।


चले के भइल बाटे बलुआ के रेत रे  
चेते के ना चेतले तू मनवा रे चेत रे  
कँटवे के समझ अब फूल के जहनवा  
परनवा रे, ए परनवा ....  
मनवा रे, ए हमार मनवा .....।

आह नाहीं लिहलीं हम आह नाहीं दिहलीं  
आन खातिर अँसुआ ना खुद चाह लिहलीं  
सुखे नाहीं बहे रामा तबे ई नएनवा  
नएनवा रे, ए नएनवा ....  
मनवा रे, ए हमार मनवा .... ।

चोट ऊपर चोट पइलीं ठेस ऊपर ठेस रे  
हियरा दुखाऽत बाड़े उपजल कलेस रे  
ढँढऽतानी मिलत नइखे दुख के निदनवा  
अरमनवा रे, ए अरमनवा ....  
मनवा रे, ए हमार मनवा .... ।

किसुन - सरपंच भाई, चले के नू? (आँसू पोछताइन)  
सरपंच - हँ भइया, चलऽ चले के।  
धीरे धीरे परदा गिरता।



 बिद्याशंकर बिद्यार्थी

(शेष अगिला अंक में)

का करीं ?

का करीं कि ईटा पथल में जान आ जावो।  
अँखिया चमके बुझल मुख प मुसकान आ जावो।

झुनुके ना पायल ना खनकेला कंगना,  
रनर-बनर भइल रहेला ढाबा अंगना।

का करीं कि खुसी फूल के दोकान आ जावो,  
अँखिया चमके बुझल मुख प मुसकान आ जावो।

केहु मुस्की में सुसुकी के दबावत चले  
केहु झुठो आँख से सागर छलकावत चले  
का करीं कि हिया-हिया में गियान आ जावो,  
अँखिया चमके बुझल मुख प मुसकान आ जावो

छोटकी चिरैया हँससु भाई भौजैया,  
मिलत रहे सभके माई बाप के दुहैया।  
का करीं कि करे सभका सम्मान आ जावो,  
अँखिया चमके बुझल मुख प मुसकान आ जावो।

घरवा में होखे हरमेस गीत गवनैया  
रौनक से भरल रहे आँगन अंगनैया  
का करीं कि फेरु पुरनके बिहान आ जावो,  
अँखिया चमके बुझल मुख प मुसकान आ जावो।



✍ विमल कुमार  
जमुआँव भोजपुर बिहार

जमाना याद आवेला

कबो आँसू कबो गम साथ अब हमरो निभावेला।  
मुहब्बत के बितल सगरो जमाना याद आवेला।

भुलाए के कहत बा लोग लेकिन का बताईं हम,  
भरल ऊ लोर से सुसुकत नयन अबतक सतावेला।  
परिंदा प्यार के तइपत मिली हे दिल क पिछड़ा में,  
मुहब्बत के निशानी ह मिलन के गीत गावेला।

कइल अउरी निभावल प्यार कब आसान हो रहुए,  
जमाना हर घड़ी बस दर्द के नशतर चुभावेला।

सनाइल लोर से हमरो कटत ई जिंदगानी बा,  
बताईं का सनम तहरी बिना कुछऊ न भावेला।

मुक्तक

करी वादा मगर ओकर इरादा फिर बदल जाई।  
करी खरचा सियासत में, उहे फिर से चुनल जाई।  
सियासत में उलझ के आदमी खूद के भुलाइल बा।  
केहू दारू केहू मुर्गा केहू सुखले बहल जाई।



✍ संतोष कुमार विश्वकर्मा 'सूर्य'  
तुर्कपट्टी, देवरिया, (उ.प्र.)



एकांगी प्रेम कहानी के सांस्कृतिक पूर्णाहुति: दीपशलभ

कई गो ऐतिहासिक प्रसंगन के कथानक पर उपन्यास,खंडकाव्य भा प्रबंध काव्य रचाइल बा। ई काम भोजपुरी में पहिलहूँ भइल बा।बाकि एहर ढेर दिन के बाद भोजपुरी में ऐतिहासिक प्रसंग पर कवनो प्रबंध काव्य आइल बा,जवने के भाषा संस्कृतनिष्ठ बा आ ऊ

भारतीयता के चासनी में सउन के परोसल एह प्रबंध काव्य के रचनाकार बाड़ें आदरणीय मार्कण्डेय शारदेय जी। रचनाकार के रूप में आदरणीय शारदेय जी एह प्रबंध काव्य के नायक सुरनाथ शर्मा आ नायिका मेहरुन्निसा के संगे भरपूर न्याय कइले बाड़ें। काव्य



मार्कण्डेय शारदेय

मूल नाम : मार्कण्डेय मिश्र  
 पिता : स्व० रामचंद्र मिश्र  
 जन्मतिथि : 12.10.1962  
 जन्मस्थान : टेड़ी बाजार, डुमराँव, जिला-बक्सर (बिहार)  
 शिक्षा : एम.ए. (संस्कृत), मगध विश्वविद्यालय  
 साहित्य-सृजन : 1983 से हिन्दी, भोजपुरी एवं संस्कृत के अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित, 'आर्यवर्त हिन्दी दैनिक, पटना के साप्ताहिक व्यंग्य स्तम्भ लाल बुझकड़ की भोजपुरिया दृष्टि' का स्तंभकार, 'राफ्त', 'बाबा टाइम्स' 1987, 1988 ई. में, दोनों डुमराँव से, अब विरमित, के क्रमशः संपादक, उपसंपादक तथा पटना, महावीर मंदिर से प्रकाशित त्रैमासिक 'धर्मापन' का पूर्व सह संपादक '2000-2003 ई., नालंदा खुला विश्वविद्यालय, पटना की भोजपुरी (एम. ए. का भोजपुरी लोकसाहित्य एवं भोजपुरी भाषाविज्ञान) और संस्कृत (एम. ए. का संस्कृत शास्त्रों का इतिहास) की अध्वयन-सामग्री का पूर्व लेखक।  
 प्रकाशित कृतियाँ : रामकहानी 'हिन्दी उपन्यास', गठरी 'भोजपुरी कविता संग्रह', दिल्ली-चालीसा, व्याकरण नवनीत 'प्राथमिक एवं मध्य विद्यालय के छात्रों के लिए', सुगम संस्कृत व्याकरण एवं रचना नवनीत 'माध्यमिक कक्षा के विद्यार्थियों के लिए'।  
 सम्प्रति : पटना में ज्योतिष एवं धर्म सम्बन्धी कार्य  
 वर्तमान पता : सी/603, पाटलीग्राम एपार्टमेंट, बजरंगपुरी, गुलजारबाग, पटना-800007  
 मो.न. : 8709896614  
 Mail : markandeyshardey@gmail.com

Sarv Bhasha Trust  
 New Delhi  
 www.sarvbhashatrust.com  
 sbshatrust@gmail.com  
 +91-8178695606



दीपशलभ

मार्कण्डेय शारदेय

# दीपशलभ

मार्कण्डेय शारदेय



अपने में भारतीय सांस्कृतिक अवधारणा के नीमन से समेटले बा। ई प्रबंध काव्य कुल सात खंड में बा।नायक सुरनाथ शर्मा आ नायिका मेहरुन्निसा के चरित्र के

धारा बहुते सरसता के संगे बहल बा। एह प्रबंध काव्य के नायक सुरनाथ शर्मा नायिका मेहरुन्निसा से एकांगी प्रेम करे लागत बाड़ें । ऊ अपना प्रेम में सफल

नइखे हो पावत बाकि आजु के समय लेखा ऊ नायिका के कवनो पीड़ा नइखे पहुँचावत आ ना त उनुका कवनो कृत्य से समाज में कवनो बाउर सनेस जाता। नायक अंतिम में पश्चाताप के आगि में जरत आध्यात्म के ओर चल देत तारें, मने ऊ अपना प्रेम के त्याग करत एगो आदर्श के स्थापित करे के प्रयास करत बाड़ें, जवन एह भारतीय संस्कृति के सारभौमिक साँच बा।

कवि श्रेष्ठ मार्कण्डेय शारदेय जी एह प्रबंध काव्य के पहिलका सर्ग में नायक सुरनाथ शर्मा के पारिवारिक स्थिति आ उनुका चरित्र के सुघर चित्र उकेरले बाड़ें। नायक सुरनाथ शर्मा विद्वान त बटले बाड़ें संगही ऊ नायिका मेहरुन्निसा के पिता गयासु के प्रिय पात्रो बाड़ें। नायक नायिका मेहरुन्निसा के संस्कृत पढ़ावे के वृत्ति से जुड़ल बा आ ओही क्रम में नायक नायिका पर आकर्षित हो जाता। बाकि सामाजिक आ पारिवारिक मर्यादा का चलते उनुके मन अझुराइल रहता। एह स्थिति के कवि बड़ नीमन से उकेरले बाड़ें, जवन पढ़निहार लोगन के धियान खींचे में सफल बा।

सुरनाथ नाम से ख्यात रहन  
सुरनाथ नियन ऊ आर्य रहन  
व्याकरण वेद वेदान्त न्याय  
साहित्य ज्योतिषाचार्य रहन।

दोसरका सर्ग कोषाध्यक्ष गयासु बेग के बेटी मेहरुन्निसा के सौंदर्य वर्णन से शुरू होता। नायिका मेहरुन्निसा के मेघा शक्ति, उनुकर सोभाव बखानत कथानक आगे बढ़ता। एही सर्ग में नायक के आवन होता आउर ऊ नायिका के संस्कृत पढ़ावे खाति नायिका के घरे जाये लगलें। इहवें से नायक के मन में एकांगी प्रेम के बिरवा अँखुवाये लागल आ हलिये मजगर पेंड का रूप ले लेहलस। जेकरा चलते नायक सुरनाथ शर्मा के द्वंद में जिये के स्थिति बनल। शृंगार रस के बारे में पढ़ावे के दिन नायिका के रूप आ यौवन का चलते ऊ अनबोलता हो जा तारें। उनुका मन में तर्क-वितर्क के उदबेग चले लागता बाकि संस्कार आ मानवता जीत जाता आ सुरनाथ बेगर पढ़वले वापस चल जात बाड़ें।

तीसरका सर्ग में नायक के प्रेम भावना के अतिरेक उकेरल गइल बा। कथानक आगे बढ़ता आ नायक अपना मन के संयत क के अगिला दिन फेरु पढ़ावे जाता आ नायिका मेहरुन्निसा से पढ़े आ पुछे

के कहता। नायिका सकुचात-लजात पढ़े लागत बाड़ी आ पढ़ला के बाद जब भाव जाने के खाति ऊ नायक से मुखरित हो तारी। अजुवो नायक अपना मन के उदबेग के रोके में सफल नइखे हो पावत आ बाति के बदलत नायिका से गावे खाति आग्रह करि रहल बा। नायिका के प्रेम गीत प्रस्तुत कइला के बाद ओकरा प्रसंसा में नायक सुरनाथ अपने मन के बात नायिका का सोझा राखे के उचित अवसर बूझ ओही राहे आगु बड़े लागत बाड़ें। बाकि नायिका उहाँ के मर्यादा के इयाद परावत बरजि देता आ गुरु-शिष्या के संबंध के दूषित होखे से बचा लेता। नायक के चेतना लउटत बा आ ऊ शरम मे गड़ जाता आ ओकरे चलते ऊ आगरा छोड़े के बाति करत नायिका से छमा मांगता। नायिका गुरु दक्षिणा में आपन मुँदरी दे के विदा करत सोच रहल बिया-

जानि गइली बाड़ें सम्भ्रान्त  
न रुकिहें, निज मुद्रिका निकाल  
थमावत बिनवत कहलीं  
'मान्य! अँगुली में लीहीं दाल।

चउथे सर्ग में कवि नायक सुरनाथ शर्मा के उनुका संरक्षक गयासु बेग से बिदाई के बेरा के मनस्थिति आ संरक्षक के सोझा उत्पन्न परिस्थिति परोसले बाड़ें। अइसना में मनःस्थिति के चित्रण भरपूर मनोयोग से भइल बा-

नेता हऽ पर तनिको लाज न लागे  
करुणा दया कबो ना इचिको जागे  
जागेला तऽ स्वार्थ सिद्धि के लेके  
बिना स्वार्थ के डेग न लावे आगे।

पंचवे सर्ग में कथानक नया मोड़ लेत देखाता। इहाँ से सलीम के आवक होता आ ऊ नायिका मेहरुन्निसा के रूप आ यौवन का चलते उनका मन में आकर्षण जनम लेता आ सलीम मेहरुन्निसा के आपन जीवन संगिनी बनावे ला अपने पिता अकबर से निहोरा करत बाड़ें। अकबर एकरा ला तइयार हो जात बाड़ें बाकि गयासु बेग के मेहरुन्निसा के बिआह शमशेर के संगे करे के रहे आ ऊ अकबर से एकर अनुमति लेके क देहलन। अकबर शमशेर के बांग के ताज देके उहाँ से भेज देहलन। अपना हिसाब से आवे वाली बिपदा के रोके क परायास कइलन।

फिर कृपा दृष्टि रख महराज  
दे शेर शेर के बंग ताज

बंगाल भेज देलें झट-पट  
जेसे होखे ना कुछ खट-पट।

छठवें सर्ग में बिरह बेदना से कृषगात भइल नायक सुरनाथ शर्मा के व्यथा-कथा कहाइल बा। ओही क्रम में राहि चलत बेर सुरनाथ चेतनाहीन होके गिर पड़त बाड़ें आ एगो सहृदय मुनि का लगगे पहुँच जात बाड़ें। मुनि के उपचार से गवें गवें उनुकर शरीर आ स्वास्थ्य में सुधार होता आ नीन आवे लागता। नीन में नायक सुरनाथ सपनात बाड़ें बाकि अबो उनुका सपना पर नायिका मेहरुन्निसा के आधिपत्य बा। सपनों में उहाँ के झिड़की मिलता। मुनि बेर-बेर उनुका मन के ब्यथा जाने के कोशिस करत बाड़ें बाकि सुरनाथ उहाँ के अपने मन के व्यथा नइखे बतावत। फिर मुनि से अपने घर जाये के राहि पूछ उहाँ से चल देत बाड़ें।

सतवें सर्ग में नायक आपन राजधर्म निभावत सोझा आवता । अनजाने में नायिका मेहरुन्निसा के जिनगी बचावता। राजा के प्रिय बन जाता बाकि भोग लिप्सा छोड़ के वैराग्य के वरण क लेता। भारतीय संस्कृति के चरम उत्कर्ष के दर्शावत ई प्रबंध काव्य एगो सनेसा देवे में सफल बुझाता कि सामाजिक रिस्तन के पवित्रता बनल रहे के चाही। ओकरा खाति कवनो उत्सर्ग थोर होखेला।

ई प्रबंध काव्य एगो ऐतिहासिक स्थिति से पाठक के फेरु से परिचित करा रहल बा। आजु के समय में कथानक प्रासंगिक बा। प्रबंध काव्य के कसौटी खरे सोना लेखा बा। काव्य प्रवाह सुगम बा आ लोक विस्वास, खेती किसानी के संगे शास्त्रीयता के निर्वाह भइल बा। नायक के अंतर्द्वंद सबसे लमहर आकर्षण बा। भोजपुरी में संस्कृतनिष्ठ शब्दन के प्रयोग कतों-कतों भाषा के सरलता प्रभावित करत देखाता। रचनाकार आपन बात करत संस्कृतनिष्ठ शब्दन के परयोग के स्वीकरले बाड़ें आ ओकरा पक्ष में आपन तर्क रखले बाड़ें। काव्य के कला शिल्प त सराहे जोग बा, एहमें कवनो दू मत नइखे। सर्वभाषा प्रकाशन आपन श्रेष्ठ देवे के प्रयास बखूबी कइले बा। भोजपुरी

साहित्य खाति ई एगो अनमोल धरोहर लेखा बा। हमरा बिसवास बा कि भोजपुरी साहित्य जगत एकरे सोवागत में कोताही ना करी।

पुस्तक का नाम- दीपशलभ

रचनाकार - मार्कण्डेय शारदेय

मूल्य- रु 150/- मात्र

प्रकाशक- सर्वभाषा प्रकाशन नई दिल्ली



✍️ जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

संपादक

भोजपुरी साहित्य सरिता

गजल - मन्दाकिनी छन्द

गजल - रात में तिका दिहलन

विकल बनल राधिका कुंज में  
 दरसन भर सेविका कुंज में  
 ढुँढत नजर कृष्ण के बाँसुरी  
 सजल नयन साधिका कुंज में  
 सहज मिलन कामना भीतरी  
 कमल खिलल मालिका कुंज में  
 सगुन उचर डाल पे होइहें  
 अलप अगर बालिका कुंज में  
 शुभ लय बज प्रेम के रागिनी  
 नमन करत मल्लिका कुंज में  
 सुर नर मुनि देखहीं ब्योम से  
 तड़प बदल नायिका कुंज में  
 प्रभु परगट आँख जे तोपले  
 किसन क अभिसारिका कुंज में

लगा के नेह अबो रात में हिका दिहलन  
 दरद के थाह अबो रात में तिका दिहलन  
 अभी के दौर अभी आह से भरल बाटे  
 जगा के साथ अबो रात में सिका दिहलन  
 नगद के हाल हँसी लूट के अबो जालन  
 टहक के नाम अबो रात में फिका दिहलन  
 गगन के गीत कबो जान के उड़ल परिंदा  
 गगन के बीच अबो रात में टिका दिहलन  
 डगर के रेत रहे रेत अब कहीं आपन  
 सफर के रेत अबो रात में धिका दिहलन ।



✍ रामप्रसाद साह, नेपाल

अध्यक्ष - नेपाल भोजपुरी प्रतिष्ठान, बारा



✍ विद्या शंकर विद्यार्थी



## किसान समस्या अउरी निदान के तरीका

जौनी दुआरे बैलन का देहिं पर माँसु ना ओकरी घर के खान-पान भी ठीक ना, जे खियाई ना उ खाई का ? जेकरी घरे बूढ़ का चेहरा पर चमक ना ओकर संस्कार ठीक ना, जे आपन बूढ़ के सेवा ना करी ऊ दूसरा के का करी ? अउरी जहवाँ खलिहान में पुअरा के पूजि ना ओकर भण्डार बड़हन ना | घर के जीडीपी नापे के इहे नुखशा रहल ह | बेटी के बियाह खातिर बेटहा के दुअरे जाके लोग नाद में झाँकी, खरिहान में झाँकी, अंगना में झाँकी अउरी जब पूरा विश्वास हो जाई कि एकर जीडीपी ठीक बा त बियाह होई, ना त जय सियराम | सूटेली राय के आसमान में दीया जरे लेकिन उनकर हरवाह के उघारे देखि के बेटा के बियाह कटि गइल | बेटिहा लागल कहे “जेकरा आदमी जन के पहिरल अँगेज नइखे,, ऊ पतोहि के कइसे अँगेज करी !”, बाँस बराबर धन होखे त लउके के चाहीं | रुपया त बक्सा में लुका जाई लेकिन ई कुल बक्सा में ना लुकाई |

इहे कुल समृद्धि रहल ह जवन ए बेरा बदलि के जीडीपी हो गइल बा | जीडीपी माने मोटे इहे की केहू के उपज केतना बा ई मायने नइखे राखत, ऊ केतना बँचता अउरी कीनि के केतना खाता ई मायने राखता | ओढ़ल पहिरल अउरी खर्चा के हिम्मत केतना बा ई मायने राखता | गाय भँइस राखि के किलो-के-किलो दूध दुहि के केहू पीयता माने देश में ओकर योगदान जीरो बा | अपनी खाए भरि के चाउर, आटा, सरसों, तरकारी, मसाला सब उपजा लिहनी, ओढ़े पहिरे के कपड़ा बीनि लेहनी, खुद आत्म निर्भर बानी लेकिन देश

की जीडीपी माने विकास दर में हमार कौनो योगदान नइखे, विशुद्ध रूप से हम देश पर बोझ बानी | हमार महत्व तब बा जब हम अपनी भैस के दूध बँचि दीं अउरी डेयरी के दूध कीनी के खाईं | हमरी बँचला से सरकार के जीडीपी बढ़ी, हमरी कीनला से सरकार के जीडीपी बढ़ी, तब हमार योगदान बा |

पूरा विश्व समस्या से घिरल बा | कहीं भूखमरी बा कहीं बीमारी बा त कहीं सूखा बा | आज किसान आन्दोलन से सरकार परेशान बा | किसान का खेती से नइखे पोसात अउरी सरकार का MSP माने न्यूनतम समर्थन मूल्य से | सही पोसात नइखे एइमे रती भर संदेह नइखे | खेती फायदा वाला उद्योग ना रहल | जीडीपी बढ़ावला के चक्कर में सरकार



किसान के आमदनी चौपट क दिहलसि | खेती में लागत बढ़ावत गइल, बढ़ावत गइल अउरी अब ई लागत ही किसान अउरी सरकार दूनो की गला में फँसल मछरी के काँट हो गइल बा | बढ़त आबादी के दौर में उपज बढ़ावल त जरूरी रहे लेकिन इ कौनैगा बढ़ी जौना से किसान का भी फायदा होखे एइपर मंथन ना भइल | मेहनत कइल केहू ना चाहे | अगर सूतले-सूतल दाल भात तरकारी मिले त कर्म कइला के जरूरत का बा? कर्म के दामाद बने खातिर लाइन लागि जाई लेकिन भगवान सगरी प्राकृतिक ब्यवस्था कर्म आधारिते बनवले बाड़े | बिना कर्म के दाना ना जूरी |



आपन जीडीपी बढ़वला के चक्कर में सरकार आदमी के सही में करम के दामाद बना दिहलस | आजु खेती आराम के उद्योग हो गइल बा | मतलब पार्ट टाइम बिजिनस | लागत केतनो लागे आराम चाहीं लेकिन अगर दूना लागत हो गइल त दूना उपज भी होखे के चाहीं, जबकि उपज त प्रकृति की भरोसे बा, ऊ बढ़ल ना, खाली लागत बढ़ल और उपज स्थिर रहल | जवना के चलते लागत अउरी उपज या त लगभग बराबर हो गइल या उपज अउरी लागत में नाममात्र के अन्तर रहि गइल जौन कौनो परिवार के परिवारिस खातिर पर्याप्त नइखे |

खाद के प्रयोग से उपज भी बढ़ल अउरी जीडीपी भी लेकिन ट्रैक्टर अउरी कम्बाइन के उत्पादन से सरकार के जीडीपी तऽ बढ़ल लेकिन उत्पादन ना बढ़ल | जौन काम किसान बैल से कऽ लेत रहले हँ, ऊ काम अब ट्रैक्टर करे लगले | एइसे किसान का आराम तऽ हो गइल लेकिन लागत बढ़ि गइल | बैल से किसान का बड़ी फायदा रहे | बैल से खेत जोता जाई, खाली समय में टायर गाड़ी से सामान भी ढोवा जाई, रहट से खेत के सिंचाई भी हो जाई अउरी सबसे ढेर फायदा बैल के गोबर से होत रहल ह | गोबर से गोहरा (बायो कोल) बना के रसोई बनि जाई खेत में पहुँचा के खाद बनि जाई लेकिन मशीन आधारित कृषि उपकरण का बनि गइले, बैलन के महत्व खतम हो गइल | बैल बेमतलब के बोझ बुझाए लगले | एहिसे बैलन के बँचि के किसान निश्चिन्त हो गइले | बैलन के मांस चमड़ा बँचाइल ओहू से सरकार के जीडीपी बढ़ल |

देखा देखी सभे श्रम आधारित खेती छोड़ि दीहल | अब गेहूँ के खेती मात्र आठ दिन के अउरी धान के खेती मात्र दस दिन के रहि गइल, माने सूति के खेती | केहू किसान कुदारी लेके खेत में नइखे लउकत | हँसुआ- खुरपी त बुझाता की अब संग्रहालय के चीज बनि जाई | आवे वाला समय में अगर लड़िका हँसुआ-खुरपी देखिहें त बाप महतारी से पूछिहें की "ई का हऽ" | अबे नवका लोग इनार, ढँकुल, बरहा, कूँड़, पवठा, चवना, अउरी छीपी के नाम सुनेला त ओकरा बुझाला की ई कवनी युग के शब्द हवें | ई पटवनी के औजार रहल ह, जौन पम्पिंग सेट के आ गइले खतम हो

गइल | किसान आराम के झुनझुना थामि लिहले अउरी आमदनी चौपट हो गइल | केतनो बड़हन काशतकार होइहें उनका अब खेती से पोसाइल सम्भव नइखे |

खेती पर लागत भरपूर बढ़ि गइल | खेती पर के कुल लागत के 80% खर्च सिर्फ जोताई सिंचाई अउरी कटाई पर बढ़ि गइल बाकी 20% खादर अउरी बीया पर लागत रहल | अब श्रम आधारित खेती पर अगर गेहूँ के मूल्य 1200 रुपया प्रति कुन्तल रहे त लागत एइमे खाली 200 रुपया कुन्तल आवे | जबकि मशीन आधारित खेती में ई लागत 80% बढ़ि के लगभग पाँच गुना हो गइल | अब जौन आमदनी लागत के छौ गुना होखे ऊ लागत अउरी उत्पादन लगभग बराबर बराबर हो गइल | अब जरूरत तऽ ई रहे कि अगर लागत पाँच गुना बढ़ल त कीमत भी पाँच गुना चाहीं लेकिन उत्पादन त प्रकृति की हाथ में बा ऊ त स्थिर बा | माने गेहूँ के कीमत 1200 के पाँच गुना 6000 रुपया कुन्तल चाहीं लेकिन छौ हजार रुपया कुन्तल कीनी के ? जब आढतिया का एहू बेरा बाहर देश से 1450 रुपया कुन्तल गेहूँ बंदरगाह पर पहुँचा के मिलि जाता त ऊ हमार छौ हजार रुपया कुन्तल काहें कीनिहें ? अगर हम कुन्तल पीछे 1400 रुपया लागत लगा के अगर 1400 रुपया कुन्तल बेंचब त खाएब का और दाल तरकारी कपड़ा लता के खर्चा कहाँ से चली | अइसन स्थिति में अगर दाम बढ़ा दियाऊ त खरीदनहार खतम अउरी ना बढ़े त किसान खतम |

ब्यापार के मामला में विश्व के सम्पूर्ण बाजार एक दूसरा से जुड़ि गइल बा | कहाँ कौन चीज कौनी रेट के बा ? के कौन चीज का रेट के बेंचता ? सब कुछ आँखि से हर जगह लउकता | अगर केहू दूध पैंतीस रुपया किलो बेंचे अउरी केहू तीस रुपया त गुणवत्ता की हिसाब से त पैंतीस वाला के किननहार मिलि जइहें लेकिन अगर दुनू के गुणवत्ता समान बा त पैंतीस वाला का या त तीसे रुपया बेंचे के पड़ी ना त वापस आवे के पड़ी | दाम बाजार पर निर्भर बा | जिनिंस के बाजार में आवग बढ़ी त दाम घटी अउरी आवग घटी त दाम बढ़ी लेकिन बाजार में बढ़िया गुणवत्ता के गेहूँ अगर दूसर देश सस्ता ठेलि देउ त ओइसनके हमार गेहूँ केहू काहें कीनी |

अइसन स्थिति में देखला के जरूरत बा कि 1450 रुपया कुंतल वाला गेहूँ के उत्पादन के बारीकी का बा कि ओ गिरिहस्त का 1450 रुपया कुंतल पर पोसा जाता जबकि हमार 1975 रुपया कुंतल पर भी नइखे पोसात | खेती के लाभप्रद बनावे खातिर तरीका बदले के पड़ी | छूट (सब्सिडी) या एमएसपी विकल्प नइखे हो सकत | समर्थन नाहीं लाभकारी खेती बनवला के जरूरत बा |

एकर एगो विकल्प बा कि ओ फसल के उत्पादन होखे जवने के देशी अउरी अंतर्राष्ट्रीय बाजार में मांग होखे | ओके चिन्हित कइल जाउ | ओकरी खेती खातिर किसान के प्रशिक्षित कइल जाउ | माटी के पहिचान कइल जाउ की कथिके खेती कहाँ होई त पैदावार ठीक होई | खाली धान गेहूँ उपजवले काम ना चली | जब खरीददार ना रहिहें त धान गेहूँ सरकार कीनिये के का करी | देश में गेहूँ के स्थिति ई हो गइल बा कि एकरी खपत के विकल्प खोजल जाता | गेहूँ से बायो पेट्रोल बनावे के तैयारी शुरू भइल बा | लेकिन ऊ विकल्प महंगा नाहीं, बहुत महंगा होई |

दूसर विकल्प ई बा कि खेती के लागत कम कइल जाउ लेकिन लागत कम करे खातिर ना जोताई कम कइल संभव बा ना सिंचाई, ना बीया कम कइल संभव बा ना खादर | त फिर ए के लाभप्रद बनावल कैसे जाउ ? खेती में लागत कम करे के जगह कहाँ लउकता ओके खोजल जाउ | ओइपर अमल कइल जाउ | घर में सूति के खेती होई त लाभप्रद नाहीं होई | श्रम आधारित खेती फेरू शुरू होखो | श्रम आधारित खेती करे खातिर औजार बनावे पर सरकार कबो ध्याने ना दिहलसि लेकिन अब खेती खातिर ओइसन औजार बनवला के जरूरत बा जवना में कम से कम मेहनत में अधिक से अधिक काम होखे | एइसे डीजल के भी बचत होई, प्रदुषण भी कम होई, लोग श्रम करिहें त बीमारी भी कम होई | बैल से जोते वाला हर अउरी माटी उलाटे खातिर लोहिया सगरी खतम हो गइल | एकबेर बाबा हर चलल रहे, जवना पर हरवाह बइठि के जोते लेकिन ऊ सफल ना भइल, एइसे कि ओइमे मेहनत ढेर लागे | बैल बीमार पड़ि जा सन | आजु

विज्ञान बहुत आगे बा अगर खोज होखो त बैल से जोते वाला सिंचाई करे वाला अउरी मड़ाई करे वाला मशीन बनि सकऽता | अउरी अगर ए तीन गो काम खातिर औजार बनि जाउ त खेती के लगभग 70% लागत कम हो जाई |

तीसर विकल्प ई बा कि, किसान के उपज में कौनो चीज बेकार नइखे | ना दाना ना पुअरा या भूसा लेकिन मवेशी की खतम हो गइले अउरी कम्बाइन के चलि गइले पराली एगो समस्या हो गइल बा | अगर केहू पुअरा भूसा बनइबे करे त ऊ होई का ? किसान ओके का करिहें ? एहिसे लोग ओके बेकार छोड़ देता अउरी ज़रा देता | लेकिन ज्वलनशील सब चीज में ऊर्जा बा | बस जरूरत बा ओके उपयोग खातिर पहिचान के | धान के भुस्सी (Paddy husk) भी बेकार रहल ह लेकिन अब ओके प्रयोग फैक्टरी में भट्ठी जरवला में होता | अगर गेहूँ से बायो पेट्रोल बनि सकेला त पराली से भी बायो कोल बनि सकता | मटर मसूरी सोयाबीन के झंगड़ा, पुअरा घास भूसा, हरेठा उँखी के पतई, ए कुलि से बायो कोल बनि सकता | अबे अगर एके खरीददारी शुरू होखे त लोग ए कुलि के हिफाजतो करे लागी | एइसे किसान के आमदनी भी बढ़ी, साफ़ सफाई भी हो जाई अउरी प्रदुषणों ना होई |

जीडीपी समूचा विश्व के समस्या में डरले बा लेकिन देश आपन ह, एकरी भलाई खातिर सोचेके पड़ी | देश भी ना डूबे अउरी किसान भी ना डूबें अइसन युक्ति निकाले के पड़ी | ना त अबे का बिगड़ल बा आगे अउर बिगड़ी |



**सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा**  
**भठही बुजुर्ग कुशीनगर, उत्तर प्रदेश**

घूँघंट

सास पतोह से- "घूँघ काढ़ ल ए दुलिनना"

पतोह- " घूँघ काहे खातिर ये आमा जी!!"

सास- "आही दादा, गाँव-गिराने में पतोह जब जाली सन त एक बिता ले घूँघ रहल आ ओकरा ऊपर से एगो गोटा सितारा लागल चादर ओढ़ल जरूरी होला"

पतोह- "ना आमा जी हमरा से घूँघ त ना तनाई"

सास- "सुनऽ, बेसी मुँह मत चलाव, बूझलू? एक बेर कह देनी त नइखे बुझात ...."

पतोह- "मने अजब बात रउआ कहत बानी, हमरा से एक डेग ना पड़ी घूँघ काढ़ के, हम त डेगे-डेगे ढिमलात रहबा"

सास- " आछा!! फलना के घर में तू पहिला अठलोढ़ ना हऊ जे घूँघ ना कढ़बू हमार सास दू सौ जोत के बेटी रहली बाकिर आज तलिक उनकर मुँह गाँवे के बहरी के लोग

ना देखलन, त हमार त तू सोचबे मत करऽ। आ कवनो पैदल चले के बा? जीप ले गाँव के भीरी नहर पर उतर के एक कोस पैदल, फेर घर आ जाई"

पतोह- "ना आमा जी ना...हम रउआ से कह देत बानी हमरा से घूँघ ना कढ़ाई, आ अब त जमाना बदल गइल अब के मुँह तोपता"

सास- " बदलल होई जमाना बाकिर

सभकर गाँव घर के कायदा त ना नू बिगड़ी, हमरा टेम में घूँघ के रिवाज अतना रहे कि हम त आपन चार गो बबुआ लोगन के होखलो के बाद अपना सवांग के ना चीन्हत रहनी"

" ई का कहत बानी आमा जी!!" चिहा के पतोहू पूछली।

सास- " तब का, एक बेर हम कोठिला में से गहूँ निकालत रहई अपना छोटकी ननद संगे, तले बबुआ के किलकारी सुन के मुकी में से झाँक के देखनी, त का देखत बानी कि खूब गोर लमहर मरदाना हमरा माझिल बबुआ के दुआर प कन्हईआ घूमावत बाड़े, हम बबूनी से पूछनी कि ई के ह जी जे बबुआ के खेलावत बाड़े।"

त ठठा के हँसे लगली ननद - "ऐ भौजी रौआ साचों चीन्हत नइखी, ई फलना भैया नू हवना"

"त हमनी के ओह जमाना के हई जा, बूझलू।

अब घूँघ करऽ आ चलऽ गाँवे ना त अनेरे कुबेरा हो जाई, काल्ह भोरही सती माई के पुजइया ह।"

पतोहू- "अरे बाप रे बाप !! आमा जी रौआ काहे नइखे बुझात, हमरो त मन होखी कि आपन गाँव के रस्ता देखी, फेड़ बगइचा

,खेत बधारी मय देखत चली, आ दशहरा के टेम बा रहिया में दुर्गा माई के पंडाल सज रहल होखी कतना नीक लागी देखे में, घूँघ कइके हमरा कुछ लऊकी ?"

सास- "कइसन तू बात कहलू दुलहिन हम त घूँघे काढ़ के तहरा ससुर संगे ददरी के मेला घूमे गइल रहनी।

पतोह- "आछा! फेर का भइल।"

सास- "फेर का होखी जलेबी के पंडाल मे बइठ के जलेबी खात रहनी।"

पतोह- "घूँघ काढ़ के!!"

सास- "तब का?"

पतोह- "फेर !!"

सास- " फेर हाथ अचवे खातिर बहरी गइनी आ भुला के चाट

समोसा के पंडाल मे जा के बइठ गइनी,

एक घंटा बीतल, दू घंटा बीतल...अब का करी, मलिकार त आवत नइखन त घूँघ के तनि मनी पाछे सरका के रस्ता में ताके लगनी ....तले पीछे से मरदाना बोली से चिहाई गइनी हम-

" फलना गाँव के फलना के मेहरारू हऊ" हम घूँघ के भीतर से हूँ में मुड़ी हुला देनी।"

"त इहाँ के बरबरात- 'त समोसा के पंडाल में काहे बइठ गइल रहलू, चलऽ हाली दे' - हाथ धई के घिसियावत लेके चल दीहले।"

पतोह- "आही हो माई, रउआ संगे हइसन-हइसन खिस्सा कहानी भइल बा तबो रउआ घूँघे कढ़वाइबिबा ना अम्मा जी हमरा से घूँघ ना कढ़ाई।"

सास के बुझा गइल कि बड़ा जिदी पतोह उतरले बाड़ी, मरता का ना करता- "आछा कवनो अइसन लूगा पेन्ह ल जे से घूँघो कढ़ा जाये आ तहरा बहरी के मय चीजों लऊके।"

पतोहू राम भागल गइली आ लाल शिफॉन के लूगा पेन्ह के घूँघ कइके गाँवे खातिर चल देली।



बिम्मी कुँवर सिंह

## मातृभाषा से मौखिक लय प्रकट होले -- परिचय दास

(परिचय दास से साक्षात्कार : डॉ सुमन सिंह )

नव नालंदा महाविहार सम विश्वविद्यालय ( संस्कृति मंत्रालय , भारत सरकार ) के हिंदी विभाग के प्रोफेसर आ अध्यक्ष परिचय दास भोजपुरी में निबंध , कविता आ आलोचना के शिल्प में नई दृष्टि- प्रस्तुति के प्रयत्न कइले हवें. भोजपुरी साहित्य के समकालीनता के प्रत्यय से आगे ले गइले आ सृजनात्मक नवीनता के स्थापत्य दिहला क कार्य उनके द्वारा कइल गइल बा . . कविता , निबंध आ आलोचना के खाली समकालीनता ले सीमित रखले से बचवलें . भोजपुरी में साहित्य के बड़हन रेंज परिचय दास जी दिहलन . लालित्यपूर्ण निबंध के एगो स्तरीय आ अलीक रूप उनके सृजन में ह आ उनकर कविता प्रेम, व्यवस्था, प्रकृति, कविता, जीवन , मनुष्यता आदि के बारीक पहलू के स्पर्श करेले आ ओके निबाहेले . सौंदर्य के अति उत्तरोत्तर आधुनिक आ पारम्परिक - दूनो पक्षन के समाहार से उनकर साहित्य अनुस्यूत हो उठेला . उनकरा में लोक क समकाल ह आ भाषा के भिन्न रचाव.

वोकरा से अगहूँ के दृष्टि के दिहला में समर्थ भइल हवें . कविता के किताब हई . भोजपुरी चालीसों पुस्तक हई सन . सांस्कृतिक चिंतन, भारतीय इत्यादि पर कार्य हवे . सृजनात्मक निबंध,आलोचना इत्यादि में / निबंध /रचना देश के महत्वपूर्ण छपत रहेलें . नेपाल में ओर से अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन



चुकल हवें , जेम्में ऊ भोजपुरी भाषा-साहित्य पर व्याख्यान दिहले रहलें . वोह सम्मेलन में मैथिली,भोजपुरी ,लिंबू, अवधी , थारू, नेपाली आ हिन्दी भाषा पर चर्चा भइल रहे . दिल्ली में आयोजित सार्क सम्मेलन में ऊ कविता -पाठ करि चुकल हवें [2011]. संस्कृत,हिन्दी,अंग्रेजी,भोजपुरी आदि भाषा में गति रखलें .हिन्दी के प्रतिष्ठित पत्रिका 'इंद्रप्रस्थ भारती' के सम्पादन कर चुकल हवें . मैथिली-भोजपुरी के पत्रिका " परिछन" के संथापक -सम्पादक रहि चुकल हवें . गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर से हिंदी में पी -एच. डी. परिचय दास मैथिली- भोजपुरी अकादमी , दिल्ली के सचिव आ हिन्दी अकादेमी ,दिल्ली के सचिव रहि चुकल हवें . हिन्दी अकादेमी,दिल्ली और मैथिली-भोजपुरी अकादेमी,दिल्ली के सचिव रहत 300 से अधिक नवाचार परक साहित्यिक - सांस्कृतिक कार्यक्रम उनका नेतृत्व में आयोजित कइल गइल . भारतीय कविता के 3 अखिल भारतीय आयोजन कइलन ,जेम्में 25 भाषा के साहित्यकार अइलन . एकरे अलावा आलोचना, निबंध,कथा,अनुवाद आदि के भी आयोजन कइलन ,जवन अपन गंभीरता आ संसर्ग खातिर जानल जालें .

सुमन सिंह - सबसे पाहिले त हम ई जानल चाहब कि आप के निर्मिति में गाँव -जवार , बगइचा , सीवान , बोली -बइठकी क केतना योगदान रहल ?



परिचय दास -- मनई अपना पारिस्थितिकी के प्रति सदाशय रहेला .हमारा निर्मिति में गांव , बोली, बड़की आदि के बड़हन भूमिका बा. साँच त ईहे बा कि हमरा भाषा आ बोली के आरम्भ आ परिष्कार अपना गाँव जवार के भितरे भइल . हमार गाँव पूर्वी उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिला में भइल रहे जवन अब मऊ जिला में बा. आजमगढ़ से मऊ जाये वाली रोड पर मोहम्मदाबाद गोहना तहसील हवे. मोहम्मदाबाद गोहना से घोसी जाए वाली सड़क पर देवलास नांव के एगो प्रसिद्ध स्थान ह .वोही जूँ हमार गाँव रामपुर काँधी हवे . एह गाँव के आबादी ५०० से भी कम हवे . गाँव में हर समाज आ वर्ग के लोग हवे. देवलास एगो सांस्कृतिक स्थल होखला के साथे स्थानीय स्तर पर शिक्षा केन्द्रो ह . साल भर में एक बेर छठ के बरियार मेला इहां लागेला , कातिक में दिया-देवारी के छह दिन बाद . वोम्मे लकड़ी आ लोहा के खूबसूरत सामानन के साथे रोजमर्रा के चीज मिल जाली सन . ई मेला बहुत पुरान ह आ ई बतावेला कि सूर्यपूजा के लोक परम्परा केतनी गहिर हवे . हो सकेला , छठ के सबसे पुरान संस्कृतियन में से ई एक होखे. एसे ई सिद्ध होला कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में छठ के सबसे प्राचीन परम्परा हई सन. ओके कुछ अनुष्ठान रूप बिहार में दिहल गइल होई. देवलास में उत्तर प्रदेश , आस-पास के प्रदेशन आ भारत के कुछ हिस्सन से मिठाई के दुकान, सर्कस , मनोरंजन के साधन, पथरचट्टन के कला , पशु आदि आवेलें . नौटंकी , कुछ दूसर लोकनाट्य आदि एह अवसर पर बहुत अच्छा किसिम के होला. मेला आ छठ के अलावा भी आम तौर पर आस-पास के देवकली, आरीपुर ,रुकुनपुर , वारा सलेमपुर, बरबोड़ी , सियाबस्ती ,इटौरा -चौबेपुर ,छपरा, बिजौली , मकरी, फुलवरिया , सहुआरी , रामपुर कांधी आदि गाँवन के लोग सांझि-सबेरे ओइजुके बैठिकी लगावेला . हमार प्राथमिक शिक्षा प्राइमरी स्कूल , देवलास में भइल. वोह घरी वोह स्कूल के प्रधानाचार्य हमरे छोटका बाबा श्री राजवंश लाल जी रहलीं . छठीं से आठवीं तक के शिक्षा देवर्षि जूनियर हाई स्कूल , देवलास , आजमगढ़ में भइल जेकर नाँव अब देवर्षि इण्टर कॉलेज , देवलास , आजमगढ़ ( अब मऊ ) हो गइल बा. उहाँ के प्राचार्य श्री वैदेही यादव जी रहलीं . भाषा के जनले-बुझले के बारे में माँ श्रीमती माधुरी देवी आ तीनों दादी श्रीमती शहजादी देवी, श्रीमती सिरताजी देवी आ श्रीमती मेवाती देवी क गहिर असर हम पर रहल. इहे लोग प्राथमिक रूप में भोजपुरी के मिठास , लोकगीत आ लोकाचार से परिचित करावल . बाद में गाँव के लोग , इलाका के लोग. माँ लोकगीत के कुशल गायिका रहलीं , ढोलक भी अच्छी बजावें. छोटकी दादी मेवाती देवी लोक शिल्पकार रहलीं. उनके हर भोजपुरी लोककला के ज्ञान रहे. उन कर भी असर पड़ल. श्री राजवंश लाल जी हमरे बाबा श्री चंद्रभान लाल जी के छोट भाई रहलीं. अपना पाठक लोगन के जानि के हर्ष होखी कि श्री राजवंश लाल जी ही हमरा भाषा आ साहित्य के संभावना के पुष्ट कइलीं. उनकर भाषा ज्ञान आ संस्कार के हमरा ऊपर बड़हन प्रभाव हवे. ऊ कक्षा पाँच में हमार हिंदी के गुरु भी रहलीं. उनके ही वजह से हमके भाषा आ साहित्य के बारीकी सीखे के मिलल. कक्षा पाँचे में मीराबाई, कबीर, रसखान , सूर , तुलसी से लेके व्याकरण तक के ज्ञान से परिचित करवलीं. कक्षा पाँच में हिंदी भाषा पर काफी पकड़ हो गइल रहे आ श्रुतलेख में प्रायः कवनो गलती ना निकले. चूँकि श्री राजवंश लाल जी के भोजपुरी बोलले, पढ़ले के तरीका बहुत उत्कृष्ट रहे , एसे हमके एगो मानक मिल गइल जेकरे आधार पर हम आगे बढ़ि सकीं. बाबा क उर्दू, अंग्रेजी पर भी अधिकार रहे. बाबा कहें , वोही घरी कि हम अगर साहित्य में जाई त अच्छा क सकीले . शुरू में संस्कृत के श्लोक रटवले से लेके उर्दू शायरी सुनावें. पहिली संस्कृत रचना जवन ऊ हमके रटवलें , ऊ रहे - ' या कुंदेंदु तुषार हार धवला ' . कक्षा ६ के पहिले उहे हमके अंग्रेजी सिखावे शुरू कइलें. उर्दू भी पढ़ावल गइल हमके , बाकिर अब खाली वोकर इयादे रहि गइल बा. एह तरह से उनकर हमरे जीवन पर मार्मिक असर ह. ऊ हमरे पिता जी क भी गुरु रहि चुकल रहलें. पूरा इलाका में शिक्षा के प्रसार में उनकर योगदान हवे. उनकर



पढ़ावल सैकड़न विद्यार्थी अच्छी अच्छी जगह पर गइलन . फ़ारसी शायरी , जइसे शेखसादी वगैरह के बारे में बड़का बाबा श्री चंद्रभान लाल जी , जे सहायक चकबंदी अधिकारी रहि चुकल रहलें , हमके बतवलें. उनके हिंदी, अरबी, फ़ारसी, उर्दू वगैरह के ज्ञान रहे. फ़ारसी के कविता कहत जांय आ वोकर हिंदी में अर्थ बतावत जांय. ऊहे हमार नांव रवींद्र नाथ रखलें . बता दीं कि हमार मूल नांव रवींद्र नाथ ह . कहल जाला कि बाबा श्री चंद्रभान लाल जी हमार नांव एह लिए रवींद्र नाथ रखलें कि उनके ऊपर रवींद्र नाथ टैगोर के बहुत असर रहे. ऊ गाँव के लोगन से कहलन कि हमर पोता रवींद्र नाथ टैगोर जइसन बनी. ई उनकर भावना रहे . रवींद्र नाथ टैगोर जइसन कृतिकार होखल आ ऊ सिद्धि पावल कवनहूँ रचनाकार के सपना हो सकेला . भोजपुरी खातिर हमनी के एक ठो छोटहन डेग रख देले बानी जा. खैर, अपना परिवार में सृजनधर्मिता त रहबे कइल. पिता जी श्री राजेंद्र लाल जी स्वयं भोजपुरी , हिंदी, अंग्रेजी , संस्कृत के जानकार हईं. ऊ डी. ए वी कालेज, आजमगढ़ से बी ए हईं आ शिब्ली कालेज , आजमगढ़ से एल एल बी के पहिला साल पूरा कइले रहीं. ऊ स्थानीय स्तर पर भोजपुरी के लोकगायक रहल हईं. होली के अवसर पर उनकर गावल गीत गाँव जवार में बहुते प्रसिद्ध ह. सावन, चैती वगैरह के अवसर पर भी ऊ अच्छा गावें. भजन आदि पर भी उनकर अधिकार रहल ह. गावे खातिर कुछ आपन गीत भी लिखें. उनकर लिखल गीतन क हस्तलिखित काँपी हम देखले हईं बाकिर पिता जी न कबहूँ खुद वोके छपवलें न कबहूँ हमसे कहलें . कई गो पत्रिको घरे आवे. बाबा आ पिता जी कुछ अच्छी किताबो ले आवें. राजवंश लाल जी हमके ढेर सारी किताब बचपने में ले आ के दे दिहले रहें जे के हम धीरे धीरे पढ़लीं , जइसे ईसप के कहानी, पंचतंत्र के कहानी, प्रेमचंद , सोहन लाल द्विवेदी , श्याम नारायण पांडेय , रवींद्र नाथ ठाकुर के बाल कहानी , मैथिलीशरण गुप्त के कविता, सियारामशरण गुप्त के कविता , सुदर्शन के कहानी आदि. कब्बो हिंदी व्याकरण आ अंग्रेजी व्याकरण के किताबो दें. भोजपुरी के किताब देवलास के मेला में मिले . ज्यादातर लोकगीत के. कुछ भोजपुरी लोककथा हिंदी में पढ़े के मिले जेवन सस्ता साहित्य मंडल से रहे . सोरठी बृजभार , नैका बंजारा के पँवारा वगैरह भी मिले , शायद ठाकुर प्रसाद एंड संस याकि कलकता के कवनो प्रकाशक से. पिता जी के नाते संस्कृत के कई गो किताब घर में रहली. जेके हम कब्बो कब्बो पढ़ीं.

साहित्य आ भाषा के प्रति हमार शुरुए से लगाव रहे. हर भाषा शिक्षक के पढ़ावल हम बहुत ध्यान से पढ़ीं आ ओके सीखीं. शिक्षक के मान देईं.स्थानीय स्तर पर श्री विजयशंकर पांडेय जी से संस्कृत , श्री विश्वनाथ यादव जी, श्री भृगुनाथ यादव जी, श्री दुब्बर राम जी, श्री सूर्यनाथ सिंह जी से हिंदी , श्री रवींद्र नाथ त्रिपाठी से साइंस , जनाब फारुकी साहब आ श्री जगरूप राम जी से गणित , श्री नन्हकू राम जी से सामाजिक विज्ञान के दिहल शिक्षा के असर हमरा पर बा. श्री विजयशंकर पांडेय जी के वजह से हमके संस्कृत के रूप से लेके साहित्य तक में गहिर रुचि पैदा भइल. श्री विश्वनाथ यादव जी खुद कवि हईं . उनकर लिखल ' बार बार बेहया का वंदन ' हमरा अंतस्थल में उतर चुकल रहे. श्री भृगुनाथ यादव जी के साहित्य के बारीकी रहे. उनकर पढ़ावल तुलसी के रचना के पंक्ति - ' बलि जाउँ लला इन बोलन की ' के साहित्य में अन्यार्थ के माध्यम से ' बलि जाउँ ललाइन बोलन की ' के रूप में व्याख्या कइले रहें. उनके अंदर क्षमता रहे कि भाषा के जइसे चाहें मोड़ दें , व्यंग्य के धार दे दें. बी ए में प्रोफ़ेसर अशोक कुमार जी से अंग्रेजी सीखे के मिलल . अशोक जी अंग्रेजी साहित्य के अलावा प्राचीन शास्त्रन में रुचि लें आ वोकर युगानुरूप व्याख्या करें. गीता प्रेस के किताब वगैरह भी पढ़ें. बी ए में हम राजकीय डिग्री कालेज , मोहम्मदाबाद गोहना, आजमगढ़ (अब मऊ ) के पत्रिका के छात्र सम्पादक भी रहलीं. बीच में इण्टर साइंस के पढ़ाई खातिर हम इलाहाबाद के सी ए वी कालेज में गइलीं . हमार पहली प्रकाशित रचना एहिजुके के पत्रिका में ह ( सन १९७९ ). अगले साल भी वोही पत्रिका में रचना छपल. सम्पादक रहलीं विद्वान् अध्यापक श्री नरेश

सहगल जी. हमके ना पता आज उनके ई याद होखी भी ना बाकिर श्रीमान सहगल साहब पहिल बार हमार रचना ( कहानी ) छपलन . उनके वोह रचना में कुछ स्फुरण दिखाई देहले होई. बाद में छपले के बाद ऊ हमसे कहलन - ' तुम्हारी कहानी में पिता शब्द आया था. इसे जरूरत के मुताबिक मैंने धर्मपिता कर दिया है ' . वोह समय के शिक्षक आ सम्पादक एगो श्रेष्ठ लैंगुएज ट्रेनर भी होखें. कालेज में एगो साधारण गाँव के साधारण विद्यार्थी के रचना इज्जति से छपल (१९७९ ). एही कालेज से हमके निबंध खातिर पहिला , कविता खातिर दूसरा आ व्याख्यान खातिर दूसरा पुरस्कार मिलल. सम्मान हमके बड़हन रचनाकार श्री नागार्जुन के हाथ से दियावल गइल. नागार्जुन जी मंच से कहलीं - ' अरे भाई , यह लड़का कौन है , अकेले ही जिसको तीन पुरस्कार दिए गए ? बेटा, मैं यहीं प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन में ठहरा हूँ , शाम को मिलना " . हमरा खातिर ई गौरव के बाति रहे . ऊँहें कालेज -मंच पर नागार्जुन के मुख से उनकर प्रसिद्ध कविता सुनलीं -- ' कालिदास सच -सच बतलाना ' . ऊ हँसि के हमनी के कालेज -प्राचार्य से कहलीं कि ई उनकर सौभाग्यवती कविता हवे , जेके प्रायः सुनावे के कहल जाला. खैर , हमनी तीन विद्यार्थी नागार्जुन जी से मिले गइलीं जा सांझि के बेरा हिंदी साहित्य सम्मेलन , प्रयाग में . नागार्जुन जी से पता चलल कि ऊ त कई भाषा में कविता लिखलन. हिंदी, संस्कृत, मैथिली , बांग्ला , पाली आदि. हम विद्यार्थियन से कहलन कि कई बेर अच्छी प्रेम कविता के हिंदी में ऊ स्वागत ना होला जइसे बांग्ला में होला . एही कारन हम अनेक बेर बांग्ला में ई कोमल अभिव्यक्ति आ ऐन्द्रिकता ले आईले. फिर हम से पुछलन - ' तोहार महतारी के बोली का ह ' ? ' भोजपुरी ' , हम बतवलीं . ' तब त तोहके भोजपुरी में भी लिखे के चाहीं ' . ई बाति ऊ खाँटी भोजपुरी में कहलन . ऊ बतवलन कि भोजपुरी के बहुत पुरान परंपरा ह. उनकर ई प्रेरणा काम कर गइल आ हम भोजपुरी में लिखे आ भोजपुरी साहित्य के ठीक से पढ़े शुरू कइलीं. हमरे अंदर भोजपुरी के लेके दृढ़ता आइल. आज हमार भोजपुरी आ हिंदी लेखन लगातार जारी हवे . इलाहाबाद के वातावरण वोह घरी बहुत रचनात्मक रहे . उंहां के गहिर प्रभाव बा हमरा उप्पर .कवि , लेखक , पत्रकार , वैज्ञानिक , अध्यापक , प्रेषक सब केहू कहीं न कहीं सृजनात्मक रहे. गणित के अध्यापक होके भी प्रोफेसर टी. पति साहित्य में गहिर रुचि लें . एह तरह भाषा -साहित्य के झंकृति उंहां के फिजा में रहे. उंहां कई गो प्रकाशन गृह रहलें . उसे ई होखे कि रुचि किताब लेके पढ़ल जाव. आकाशवाणी , इलाहाबाद में १९७९ में हमरा बारे में इंटरव्यू लिहल गइल आ रचनो प्रसारित भइल. इलाहाबादे में हम तीसरी कसम फिल्म इलाहाबाद पॉलिटेक्निक में देखलीं आ लगातार फणीश्वर नाथ रेणु के रचना लोकभारती प्रकाशन से कीन के पढ़लीं. ईहे हमार निर्मिति के समय रहे. इलाहाबाद में ओकरे फुलला फरइला के अवसर मिलल. फिजिक्स के क्लास में भी कब्बो -कब्बो ' मैला आँचल ' पढ़ीं. खैर , ई त ठीक ना रहे बाकिर शायद साहित्ये में गइला के ऊ रूप -रेखा तैयार होत रहे. श्री गाँधी पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, मालटारी , आजमगढ़ से समकालीन साहित्य के समझ आ गोरखपुर विश्वविद्यालय से साहित्य पर समालोचनात्मक दृष्टि मिलल.

सुमन सिंह -- लेखन के क्षेत्र में कब आ कइसे अइलीं ? प्रेरक के रहल ?

परिचय दास -- हमार परिवार , शिक्षकगण आ समाज हमके ऊ वातावरण दिहलन कि हम लिख पवलीं . जइसन कि पहिलहीं बता चुकल हईं कि भाषा आ साहित्य में हमार स्वयं रुचि रहे . भाषा के शिक्षकन के सनेह रहे , बाबा , माँ , आजी आ पिता जी सबही क्रिएटिव रहे. कुछ अंदर से स्फुरण , कुछ घर के प्रभाव , कुछ समाज के स्थिति आ अच्छी पुस्तकन के पढ़ले के कारन प्रेरणा भइल. तब लागल कि सृजनात्मक कार्य करे के चाहीं , लिखे के चाहीं. यानि लिखले बगैर आदिमी ना रहि सके. परिवारी

जन के भाव लोकपरक रहे. हम समकालीन परिदृश्य के मुताबिक रचना करे शुरू कइलीं , लोक आ परम्परा समेटत . भोजपुरी भाषा में एगो स्तर के निरूपण श्री राजवंश लाल जी से मिलल , आ भोजपुरी भाषा में साहित्य -रचना के निदेश नागार्जुन जी से . यद्यपि साहित्य के हमार रास्ता अलग संरचना , अलग शैली आ भिन्न मार्ग की ओर गइल , जवन स्वाभाविक बा.

सुमन सिंह -- पहिले हिंदी में लिखे शुरू कइलीं कि भोजपुरी में ?

परिचय दास -- निश्चित रूप से भोजपुरी में . १९७५ में पहिल भोजपुरी रचना : मजदूरन के हड़ताल पर . बाकिर प्रकाशित रचना के रिकॉर्ड हिंदी खड़ी बोली के नांव बा- १९७९ में इलाहाबाद के सी ए वी कालेज पत्रिका में.

सुमन सिंह -- भोजपुरीआप भोजपुरी आ हिंदी दूनो में कविता , लेख , निबंध , कहानी , आलोचना , संस्मरण वगैरह लिखीलां . कवन विधा आप के ढेर निकट हवे ?

परिचय दास -- ई कहल मुश्किल हवे . हर विधा के आपन संरचना आ तमीज़ हवे . एसे जवन बात एक विधा में पूरी ना हो पावेले ऊ दूसरी विधा में हम कहीले. जइसे ई बुज्झीं कि संश्लिष्ट गद्यात्मकता के आपन स्वरूप हवे आ कविता के आपन. हमके निबंध लिखिके आपन बात लालित्यपूर्ण ढंग से कहला के अवसर मिलेला , जबकि कविता में एगो विशिष्ट तरलता . कहनी त बहुत कम लिखले हईं , यद्यपि पहिल प्रेषित रचना कहनिये हवे. उपन्यास लिखला के मन बा , महाकाव्यात्मक फलक पर . ई आरम्भो कइले हईं. एक तरह से गद्य के महाकाव्य. आलोचना में हम संतुलन के प्रयत्न करीले . कविता क एगो अइसन रूप हम ले आवे जा रहल हईं जवन विशिष्ट होखी. कोशिश हमार ईहे ह कि अद्वितीयता आवे , कुछ अलीक होखे.

सुमन सिंह -- आप के व्यक्तित्व के विविध आयाम हवे. आप साहित्यकार , चित्रकार , नाट्यकर्मी, गायक हईं. कइसे संभव भइल , कला के विविध पक्ष के निबाह ?

परिचय दास -- देखीं , सगरो कला के मूल एक्के ह . हर कला के दूसर कला से एगो सहित-सम्बन्ध हवे , गहिर जुड़ाव हवे. जवन बात साहित्य में ना पावेला ऊ चित्रकला में आ जाला . गायन से अलग खुशी मिलेला. हमके लोकशैली के गायन ढेर पसंद ह आ समय -समय पर हम गइबो करीले. नाट्यकर्म सबकर मेल हवे. नौटंकी में बहर-ए -तबील में गावल एगो अलगे रंग जमावेला. चैती, कजरी, होरी, सोहर आदि त गइबे करीलां. कई बेर प्रयोगो करीलां - एगो कविता पर चित्र , फिर वोकर सांगीतिक प्रस्तुत . इन सबके बीच एक अंतर अनुशासनिक अन्तर्सम्बन्ध हवे. भरथरी जी के कहनांव ह कि साहित्य, संगीत आ कला के बगैर कवनो जिनिगी ह ? बस हमार ईहे पक्ष रहेला कि वास्तविक सृजनकर्म मात्र प्रचार क साधन ना हो सकेला. वोके अइसन रचे के चाहीं कि वोकर अंतस मर्म प्रकटित होखे.

सुमन सिंह -- आखिर का कारन ह कि भोजपुरी भाषा आ साहित्य के उत्थान खातिर व्यक्तिगत आ संस्थागत स्तर पर जवन कदम उठावल जात ह ऊ कारगर ना हो पावत ह ?

परिचय दास -- व्यक्तिगत स्तर पर उत्थान साहित्य , कला, संगीत आदि सृजन के रूप में होखी. ऊ श्रेष्ठ कोटि के रही त वोकर भविष्य ह. संस्थागत रूप से साहित्य आ भाषा के उचित प्रसार , सही लोगन ले पहुंचावल जरूरी ह. यदि उहाँ से अल्पमोली संस्करण के रूप में श्रेष्ठ साहित्य दे पावल जाय त बहुते अच्छी बात . संस्था के शीर्ष पर आ सगरो ढांचा में साहित्य -संस्कृति -सुधी व्यक्तियन के रहला से गति आई. भोजपुरी समाजो के चाहीं कि अपना भाषा आ साहित्य में रुचि देखावो .वोके चाहीं कि अइसन माहौल बनावो कि भोजपुरी के पठन -पाठन हो सके , वोह संस्कृति के सहज विकास हो सके. गाँव -गाँव में एह ढंग के प्रयास चाहीं. लेखक आ कवि लोगन के छोड़ के केतना लोग सामान्य जनता से बा जे भोजपुरी बोलला के साथे भोजपुरी में लिखला के प्रयत्न करेला ? लिखला के त बात छोड़ दीं , चिट्ठी -पत्री आदि भी भोजपुरी में लिखेला ( ? ) . अगर चिट्ठी के जमाना खतम हो गइल बा त संचार के माध्यमन में भोजपुरी के उपयोग करेला ( ? ) . जरूर भोजपुरी में कमेंट करीं . न लिखत होखी त कब्बो -कब्बो लिखीं. वोसे एगो माहौल बनी , सक्रियता आई. शासन के चाहीं आ समाज के भी कि अच्छी पुस्तक आवें, अच्छा संगीत आवे ,अच्छी कला के विस्तार होखे . ई कोशिश जारी रहे. अगर कहीं कमी बा त अंतस -चिंतन क के वोके दूर करे के चाहीं. सबसे पहिले त भाषा -साहित्य -संस्कृति के प्रति अनुराग होखे आ वोकर प्रस्तुति भी. अगर भोजपुरी में अच्छा साहित्य , संगीत , कला निखर आई आ जन-मानस में सहज स्वाभिमान त दुनिया क कवनो समाज हमनी के इंकार ना कर पायी. कोशिश त बा हम सबकर , बाकिर एम्में अउर गति आवे के चाहीं.

सुमन सिंह -- आप नाट्यकर्मी हईं .एसे जानल चाहब कि भोजपुरी नाटकन क वर्तमान में का स्थिति ह ? काहें भोजपुरी सिनेमा क अश्लीलता से भोजपुरी क कुल गौरव ढंका-टोपा गइल ह ? भोजपुरी सिनेमा के भूत , भविष्य आ वर्तमान पर कवनों टिप्पणी कइल चाहब ?

परिचय दास -- भोजपुरी नाटकन के आज के प्रोफेशनल लोगन से ई सवाल पुछाइत त ज्यादा ठीक रहित बाकिर कुछ जवन आपन नाटकन के सैद्धांतिक अध्ययन , नौटंकी आ लोकनाट्य में अभिनय -निर्देशन आ नाट्यसमीक्षा से जुड़ाव के जवन अनुभव आ दृष्टि बा वोकरा अनुसार राउर सवाल के जवाब दियाई . भोजपुरी नाटक अपना बले पर करे के होखी. कुछ लोगन के संस्थागत सहयोग मिल जाला बाकिर जियादातर के त संघर्ष करके पड़ेला . उत्तर भारत में नाटकन के स्थिति कठिनाई भरल हवे . एक त अच्छे लेखक के रचना मिले , दूसर ऊ टीम वर्क हवे त वोकरे तैयारी , रिहर्सल आदि में खर्चा. सेट , डिज़ाइन , हाल आदि के व्यय. कलाकारन के भी कुछ देवे के होखी. सबसे बाद बाति ह - लोगन के रुचि पर सवाल .ई रुचि विकसित करे के होई. गाँव-गाँव में , शहर-छोट शहर में एगो लहर ले आवे के होखी. ई आसान नइखे. सबसे कठिन ह रुचि -बोध के परिष्कृत कइल. गाँव में जवन लोकपरम्परा रहे वोके जगावे के होखी , समकालीन रूप में. नई दृष्टि के साथे. रचना के प्रस्तुति में स्तर पर धियान देवे के होखी. आज के समझ के साथ कुछ रुचिशील बिंदु डाले के चाहीं जैसे नाटक में उत्सुकता बनल रहे. गवई राजनीति के थोड़ा कम क के संस्कृति पर भी धियान देवे के होखी. ' एक महीना में एक नाटक ' -- ई अभियान छेड़े के चाहीं . गाँव के नवछेड़िया लइका बढ़- चढ़ के हिस्सा लें .

गाँव के लइका पारी -पारा अलग अलग भूमिका करें. अगर पैसा ना जुटे त अतवार के दुपहरिया में गाँव के सामने प्रस्तुति होखे , सामान्य तौर पर , एगो चौकी रख के. वइसे हर प्रदेश में नाट्य अकादमी हईं सन , उनके भी चाहीं कि एह अभियान में यथासंभव सहयोग करें. एक ढोलक , एक हारमोनियम , झाल वगैरह से संगीत के प्रस्तुति हो सकेला. बाकिर महत्वपूर्ण ह -- नाटक में नई

तकनीक के प्रवेश. वोकरे बगैर नाटक पिछड़ल लगी. त बीच बीच में जिला ,प्रदेश आ देश स्तर पर कवनो नाट्य निर्देशक के ले अइले के प्रयत्न करीं. एसे ई होई कि नाटक में प्रोफेशनल टच आ जाई . जिला सूचना अधिकारी से बात करीं . ब्लॉक , तहसील, जिला, प्रदेश के अलावा राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग के कवनो न कवनो आधार मिली , वोके लीं. सूचना प्रसारण मंत्रालय के गीत- नाटक प्रभाग से सहयोग लीं . शिक्षा , संस्कृति आ दुसरा विभागन से बात-चीत करीं. आर्थिक आ अकादमिक सहायता कवनो ना कवनो विधि मिली . जनता से सहयोग लीं. आपन प्रयत्न त राखबे करीं. सबसे बड़हन बाति ह - निरंतरता , दृष्टि के परिष्कार आ रुचिबोध . नाटक दिल्ली, पटना, कोलकाता , जमशेदपुर, रांची , बनबारास, गोरखपुर वगैरह में भी खेलल जालें . नाटकन में आर्थिकी के साथ-साथ वोकर अकादमिक पहलुओं देखे के चाहीं. कुछ प्रोफेशनल लोग अच्छा कर रहल बा . ई थोड़ा व्यापक होखे के चाहीं. विशेष कर भोजपुरी में. भिखारी ठाकुर के सम्मान बा सबके मन में , बाकिर उनका बाद के लिखल नाटक पर भी जाए के चाहीं. हो सकेला बाद वाले उन्हनिन में से क्लासिक निकरि आवे. क्लासिक त क्रिएट करे के पड़ी. आखिर 'अंधा युग ' कइसे हिंदी में क्लासिक हो गइल. एम्मे खाली एह नाटक के श्रेष्ठ सर्जने के भूमिका नइखे बलुक वोकरा प्रस्तुति , पात्र- चयन , सेट , जगह , निर्देशन , संगीत , वगैरह के भी भूमिका बा. जरूरी प्रयोगशीलता भी चाहीं. खराब रचना या नाटक के लाइजनिंग के बल पर कवनो प्रस्तुति समय के बाद ना टिकी. लाइजनिंग के बल पर कवनो साहित्य आ रचनाकार समयोत्तर ना टिक पावे.

जहां तक भोजपुरी सिनेमा ( पुरान भोजपुरी में ' सलीमा ' शब्द ) में अश्लीलता के सवाल ह त ' अश्लीलता ' अमूर्त शब्द हवे. काम -भावना आ ऐन्द्रिकता के चित्रण एगो अलग बाति हवे जब कि सामाजिक रुग्णता भिन्न चीज. निश्छल तरलता प्रेम ह जब कि काम -भावना के भद्द पेशगी इन्द्रिय -उत्तेजना आ जुगुप्सा की ओर. एह तरह से ई कुंठा के स्तरहीन प्रस्तुति होला. आ ई कुल्हि व्यापार आ बेंचे खातिर होखे त प्रश्न उठेला. खजुराहो में सब कुछ के बादो अश्लीलता नइखे , सूर , विद्यापति , जयदेव आ चंडीदास में एगो ऊंचाई हवे. सिनेमा में अगर कहीं छिछल फुहरपन आ रहल बा त वोकर कारन क्षणिक उत्तेजना के भँजावल आ बेचल ह. एसे सिनेमा के स्तर गिरी. भोजपुरी के लग्गे सिनेमा खातिर स्ट्रांग विजुअल , कॉन्टेंट आ सिचुएशन हवे , ऊ सामने ले आवे के चाहीं. एसे ओके मान बढ़ीं . ओकरे पास ' गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबों ' जइसन क्लासिक फिल्म हवे , ओकर धियान करे के चाहीं. कवनो चीज में सुंदरता देखल दृष्टि आ अंतर्भाव पर निर्भर हवे. दृश्य , वाक्य , शब्द के उपयोग सापेक्षिक होला आ एही आधार पर मूल्यांकनो . फिल्म में भाषा के गिरावट आ स्तरहीन द्विअर्थी संवाद ऐन्द्रिकता के भद्दगी में बदलला से , चाहे कवनो दृश्य में स्त्री-पुरुष के प्रसंग के ' सिर्फ उत्तेजना ' के कारन बनवला से मूल सृजनात्मकता पर आँच आई. अच्छी सोच , अच्छी दृष्टि आ अच्छे प्रोफेशनलिज्म के साथे सिनेमा के निर्माण होखे के चाहीं. अच्छा संवाद , अच्छी सिनेमेटोग्राफी , अच्छा निर्देशन, अच्छा अभिनय आ सही जगह प्रदर्शन .रिस्क ले के दर्शकन के रुचि परिष्कार भी करे के चाहीं. ई सही ह कि फिल्म में पड़सा लागल होला त पड़सा आवेके चाहीं बाकिर कवनो सिनेमा कृति अच्छी होई त ऊ समय के सन्दर्भ बन जाई आ हमनी के अस्मिता के रूप में ठाढ़ हो जाई. अगर ' गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबों ' क्लासिक फिल्म हवे त वोकरे पाछे क्लासिक दृष्टियो रहल होखी. आज के समय के देखत फिल्म के शिल्प में बदलाव ले आवत निर्माण होखे के चाहीं . फिल्म निर्माण में स्तरीयता चाहीं , भोंडापन से दर्शकन के क्षणिक रूप से उत्तेजित कइल जा सकल जाला बाकिर चित्त के परिष्कार संभव नइखे. भोजपुरी के आत्मा के जगावे खातिर स्तरीय सृजनात्मकता ले आई . भोजपुरी सिनेमा के पास व्यापक क्षेत्र ह. उत्तर प्रदेश , बिहार, झारखण्ड, मध्यप्रदेश , छत्तीसगढ़, दिल्ली , बंगाल के शहरन में , ओड़िशा , असम के शहरन में , पंजाब के शहरन में , महाराष्ट्र के शहरन -जइसे मुंबई आदि में, गुजरात



के सूरत आदि में भोजपुरी फिल्मन के प्रसार ह. एकरे अलावा देश से बहरे मारिशस , त्रिनिदाद , सूरीनाम ,नेपाल , फिजी, गुयाना, नीदरलैंड आदि में भी भोजपुरी सिनेमा के दर्शक हवें. भोजपुरी आदिमी के सम्मान आ इमेज के ध्यान देत भोजपुरी फिल्म के निर्माण करे के चाहीं. यद्यपि मल्टीप्लैक्स सिनेमा हाल के कारन भोजपुरी सिनेमा के प्रदर्शन पर असर भइल हवे. छोट शहरन के छोट सिनेमा हालन के बंद होखले के स्थिति में ई दिक्कत आ रहल बा. बाकिर एकर उपाय निकारे के होखी , एकर समुचित हल ढूँढे के होखी .जवन फिल्म साफ़ -सुथरी बन रहल होखें , उनके प्रमोट कइले के तरीका ले आवे के होखी. अच्छी कलाकृति के जनता ले पहुँचहीं के चाहीं.

सुमन सिंह -- का भोजपुरी साहित्य के मूल्यांकन वइसे ना हो पाइल जइसे अन्य क्षेत्रीय बोली भाषा के भइल ? का कारन ह ई उपेक्षा के पीछे ?

परिचय दास -- ई मूल्यांकन के करेला ? मूल्यांकन वोकरे के लिखनहार लोग करेला. जब समाज अपन भाषा के बरती , आपन साहित्य के पढ़ी त एगो दृष्टि बनी. अबहिन ले इहो नइखे हो पावल कि भोजपुरी में का लिखाता आ का पढ़ाता ! एकर कवनो ठोस डाटा नइखे. एकाध जो एन्साइक्लोपीडिया आइल बाड़ी सन बाकिर ऊ पर्याप्त ना. त जब कवनो पाठक , चाहे भाषा -प्रेमी के अपना धरोहर के पुरहर पते ना रही कि पाहिले का लिखाइल बा आ यह टाइम का श्रेष्ठ लिखाता त कैसे मूल्यांकन होई ! दूसर बात ई ह कि भोजपुरी में श्रेष्ठ रचना के मूल्यांकन खातिर जवान मनोयोग चाहीं वोकर लगातार बनल रहल जरूरी हवे . भोजपुरी साहित्य के मूल्यांकन खातिर एगो जाहिर वस्तुनिष्ठ दृष्टि चाहीं . एह भाषा के बोले -बरते वाले लोग पहिले खुद मूल्यांकन करें , समाज आपन साहित्य के इज्जति दे. ई बहुत महत्वपूर्ण हवे. एह भाषा के सत्ता के पूरा समन्वयन न मिलल . एकर जगह वैधानिक रूप में भी होखे के चाहीं. बाकिर वैधानिकता कवनो भाषा के श्रेष्ठता न दियवा सकेले . वोकरे खातिर भाषा आ साहित्य के श्रेष्ठता होखे के चाहीं. जब साहित्य के श्रेष्ठता रही , जब भोजपुरी भाषा के आपन थिएटर के क्वालिटी रही , जब फिल्मन के गुणवत्ता रही , जब साफ़ सुथर ( द्विअर्थी ना ) भोजपुरी संगीत के तूती बोली त कवनो वजह न कि भारतीय समाज एके प्राथमिक वैल्यू न दे. आखिर असमिया फिल्मकार जाहनु बरुआ के फिल्मन के दूसरी भाषा में पुरहर सम्मान हवे , सब केहू अडूर गोपालकृष्णन के इज्जत देला . उनकर मलयाली फिल्मन के सम्मान करेला , चाहे ऊ मलयालम जानत होखे चाहे ना. कुछ अपना संस्कृति के उत्कृष्टता खातिर जनता से लेके बौद्धिक आ लिखनिहार लोगन के भी प्रयास करे के चाहीं कि ऊ अउर लोगन ले पहुँचे .

सुमन सिंह -- आप क ललित निबंध की ओर कइसे झुकाव भइल ? ललित निबंध वइसहीं बहुत कम लिखल गइल बा , ओकरा बादो ओकर उपलब्धता नइखे ?

परिचय दास -- हमार बचपने से निबंध की ओर झुकाव ह. ई काहें ह , एकर व्यक्ति के मनश्चित से सम्बन्ध ह. परीक्षा में उत्तरन के अलावा पहिल बेर हम निबंध कक्षा १२ में अपना विद्यालय -- इलाहाबाद के सी. ए. वी. इण्टर कालेज के विद्यालय शैक्षिक -सांस्कृतिक समिति द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में 1979 में लिखलीं. वोमे कई जो विषय राखल रहल . हम विषय चुनलीं - ' सत्य ' . वोह निबंध में हम लिखलीं - ' सत्य बोलला के अभ्यास से अइसन हो जाई कि जवने बोलबा उहे सत्य हो जाई . ई सत्य के आचरण में उत्तरला के प्रतिश्रुति हवे ' . ऊ निबंध एक तरह से ललित निबंध ही रहे. वोके प्रथम पुरस्कार दिहल गइल . अध्यापक लोग वो निबंध के पढ़ी के विद्यार्थियन के सुनावें. हम सोचीं कि अइसन का लिख दिहली अपना निबंध में कि एतना ..... ! शिक्षक लोग

हमरा भीतर एगो सम्भावना देखल कि गद्य के ईहो रूप हो सकेला. बाद में निर्णायक मंडल खुदे हमसे ई बात कहलस. हमके पुरस्कार श्री नागार्जुन के हाथ से दियावल गइल. जहां ले ललित निबंध विधा के बाति बा , ई सच बा कि एह में सर्जना कमें होला. गद्य कवीनां निकषं वदंति. अच्छा निबंध गद्य के प्रतिमान ह आ ललित निबंध हमरा दृष्टि में निबंध के प्रतिमान. एम्में कल्पना के स्फीति , परम्परा के अवगाहन , समकाल पर दृष्टि आदि जरूरी ह. एसे आज के भाग-दौड़ के समय में प्रसन्न गद्य कठिन हो गइल बा हॉ , ई जरूरी बा कि निबंध अगर मिल जाय त पढ़े के चाहीं , विशेषकर ललित निबंध. हमार ललित निबंध में कई जो विधा के समुच्चय आ विषय के अलग निबाह होला . वोकरा विशिष्ट ट्रीटमेंट से ही हमार भिन्नता आ साहित्य में नवता के प्रवेश के प्रयत्न बा. एकरे अलावा हमार निगाह भारतीय साहित्य पर रहेला , जवन गद्य आ कविता दोनों में बा .

सुमन सिंह -- लोक साहित्य अउर लोक संस्कृति में , भोजपुरी अउर हिंदी में तमाम शोध हो रहल ह. तब्बो वोमे समय आ समाज अपने मूल रूप में प्रतिबिंबित न हो पावत ह . का कारन ह ? मातृभाषा पर राउर विचार ?

परिचय दास -- शोध के मूल में जाए के चाहीं . लोक पर कार्य आसान ना ह. लोक साहित्य के समझला के एगो वैज्ञानिक तरीका ह. लोकसाहित्य में साहित्य, लोकजीवन , भाषा, समाजशास्त्र , मानवशास्त्र , कृषि, रोजमर्रा के जिनिगी , मिथक, इतिहास आदि सगरो बा. भारत में लोकसाहित्य के समझले के अकादमिक प्रयत्न में अउर गहराई आ धरती से जुड़ाव चाहीं. लोक के बीच भी जाए के चाहीं. लोकसाहित्य के संरक्षण जरूरी बा. आ ई गाँव गाँव में अभियान नीयन होखे के चाहीं. जहाँ ले मातृभाषा के सम्बन्ध बा त ई अपने परिवेश आ पर्यावरण के अवबोधन होला .मातृभाषा से ऊ मौखिक लय प्रकट होले , जेम्में प्रकृति आ परिवेश के साथे सामाजिक संघर्ष भी प्रकट होला . एसे साहित्य आ संस्कृति के सकारात्मक, मानवीय जनतांत्रिक तत्व सामने आ जालें. मातृभाषा अपन संस्कृति के जड़ में जाके हमनी के भीतर आत्मविश्वास के अनुभूति होला .उधार लीहल गइल भाषा संपूर्णतः हमनी के साहित्य आ कला क विकास न कर सकेलें , काहें से कि उनकर कंसर्न हमसे रागात्मक रूप से जुड़ले नइखे .उधार के भाषा क सत्ता केन्द्र कहीं अवरू होला आ ऊ मातृभाषा जइसन आकांक्षा के पूर्ति क वाहक ना हो सकेला . मातृभाषा में धरती के जवन गंध हवे आ कल्पनाशीलता क ऊ पारंपरिक सिलसिला ह जवन अन्य भाषा में संभव नइखे .विशेष रूप से औपनिवेशिकता के साथ थोपल भाषा में त कतई ना . मातृभाषा में जनता के संघर्ष बोलेलें.कवनो व्यक्ति जे मातृभाषा के महत्ता जानेला वोके पता ह कि आंदोलन, लोकछवि, आत्माविष्कार आ बदलाव खातिर एह से बेहतर कवनो माध्यम ना . काहें से कि वोकर वास्ता वोह भाषन से पड़ी जवन उहाँ के जनता बोलेले आ जिनकर सेवा खातिर ऊ कलम उठौले हवे .मातृभाषा के माध्यम से अर्थ सीधा-सीधा सरोकार से ह । वोह से वोह माध्यम के सामाजिक आ राजनैतिक निहितार्थ क बोध होला . मातृभाषा के माध्यम से भाषाई अस्मिता द्वारा लोगन के वास्तविक आवश्यकता के गीत, नृत्य, नाटक , कविता आदि के जरिए वास्तविक अभिव्यक्ति दिहल जा सकल जाला आ नई चेतना के आकांक्षा के स्वर दिहल जा सकल जाला .

सुमन सिंह -- आप सम्पादन कार्य से भी जुड़ल हईं . एह क्षेत्र में कइसे अइलीं ?

परिचय दास -- सम्पादन कार्य के हमार दू गो लक्ष्य रहे . पहिला : पहिला श्रेष्ठ साहित्य के सामने ले आवल आ दूसर रोजगार. हमरे द्वारा सम्पादित पत्रिकन के नांव ह - प्रद्व्या, स्रोतस्विनी, सांस्कृतिकी, इंद्रप्रस्थ भारती, परिछन आदि. सीताकांत महापात्र के साहित्य पर दू पुस्तक सम्पादित कइले हईं -'

मनुष्यता की भाषा का मर्म ' आ ' सीताकांत महापात्र : स्वप्न, सम्पर्क , स्मृति '. भोजपुरी में भिखारी ठाकुर के साहित्य पर पुस्तक सम्पादित कइलीं. एकरे अलावा अनेक सम्पादित आ पाठ सम्पादित पुस्तक, पुस्तिका हई.

सुमन सिंह -- भोजपुरी आ हिंदी में आप क पसंदीदा लेखक के ह ?

परिचय दास -- भोजपुरी में धरनी दास , रघुवीर नारायण, बिसराम , विवेकी राय आ पांडेय कपिल के प्रति मन में विशेष आदर बा. भारतीय साहित्य में शंकर देव , गोरखनाथ , गोपीनाथ महान्ति, वीरेंद्र भट्टाचार्य , विजयदेव नारायण साही, जगदीश चंद्र माथुर, फणीश्वरनाथ रेणु , सीताकांत महापात्र आदि. पत्रकारिता में अज्ञेय , रघुवीर सहाय , राजेंद्र माथुर , सुरेंद्र प्रताप सिंह ,प्रभाष जोशी आदि .

सुमन सिंह -- आजकल का व्यस्तता हवे ?

परिचय दास -- कई गो निबंध संग्रह , कई गो कविता -पुस्तक, कई आलोचना पुस्तक आवे वाली हई सन . कुछ पर कार्य समाप्त हो गइल बा , कुछ पर कार्य चल रहल बा. ललित निबंध के एगो नई संरचना दिहला के प्रयत्न बा. एगो उपन्यासो पर कलम चल रहलि बिया. संस्मरण भी जारी बा. आलोचना -सैद्धांतिक आ व्यावहारिक - दूनों तरह के आई. कविता -रचना में एकदम अलग प्रयोग बा. भारतीय साहित्य के आलोचना पर काफी कार्य कर चुकल हई .ऊ भी क्रम में बा. उत्तर पूर्व के साहित्य पर कालम लिखीले. ओकर संशोधित भी प्रकाशन की ओर बा. धरनीदास , शंकर देव आ गोरखनाथ पर भी नई दृष्टि डारि रहल हई . इन पर भी आलोचना पुस्तक लिखात हई. समकालीन भारतीय कविता नाँव से आलोचना पुस्तक प्रस्तावित हवे. उम्मीद ह , निकरि के कुछ अच्छा सामने आई.



☞ सुमन सिंह

## समय

एगो विशिष्ट सामाजिक संस्था द्वारा नगर के मुख्य सभागार में 'सम्मान समारोह' के आयोजन भइल रहे। सामाजिक विकास में भरपूर योगदान पुगावेवाला व्यक्तित्व के साथे बड़-बड़ नेता, व्यापारी, उद्योगपति, मीडिया से जुड़ल लोग आ कुछ साहित्यकार के भी उहँवा उपस्थिति रहे।

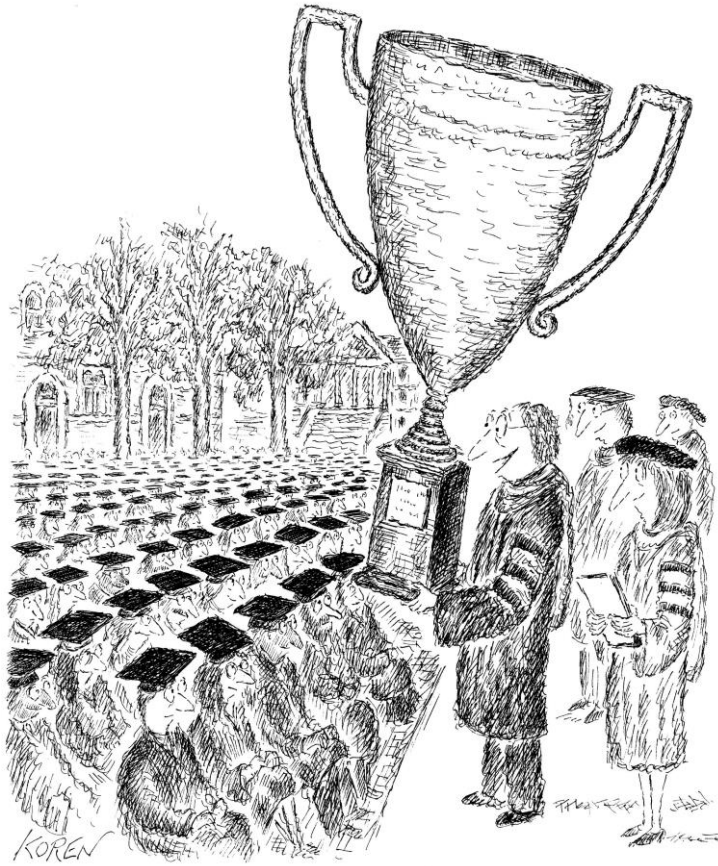
आधुनिक ढंग से सजावल मंच पर उदघोषक महोदय सम्मानित होखेवाला लोग के व्यक्तित्व आ उनका कार्य के बढ़ा-चढ़ा के बतावत रहस। ताली के गड़गड़ाहट के बीच 'सम्मानित' बंधु आपन-आपन प्रशस्ति-पत्र, उपाधि, नगद आदि ग्रहण करत नतमस्तक मुद्रा में संस्था के प्रति आभार भी प्रकट करत रहस।

सभागार में पधारल साहित्यकार प्रवीण के संघतिया प्रकाश जब देखलन कि सम्मानित होखेवाला में शहर के अधिकांश माफिया, चरित्रहीन, चुनावी दंगाबाज आदि ही लिस्टेड बा त ऊ रोष में आयोजक मंडल लगे पहुँच के शिकाइत कइलन। ए पर अध्यक्ष महोदय मुस्काके धीरे से सफाइ दिहलन, "देखीं प्रकाश जी --- रउआ खिसियाइ मत --- ऊपर के आदेश ही अइसन बा--- --- चुनाव भी त आ रहल बा--- ओह में प्रत्याशी जितावे में अइसने 'सम्मानित' लोग के

प्रत्यक्ष भूमिका रही---। रहल बात साहित्यकार बंधु के त रउवे कहीं ना--! अब वो लोग के कृति के पढ़े के फुरसत केकरा लगे बाटे--? लोग अप्रत्यक्ष फायदा से बेसी प्रत्यक्ष लाभ के ओरिया ध्यान दे रहल बा---। चलीं ---राउर भावना के भी हम कदर करत बानी। चुनाव के बाद फेरु कवनो सम्मान समारोह के

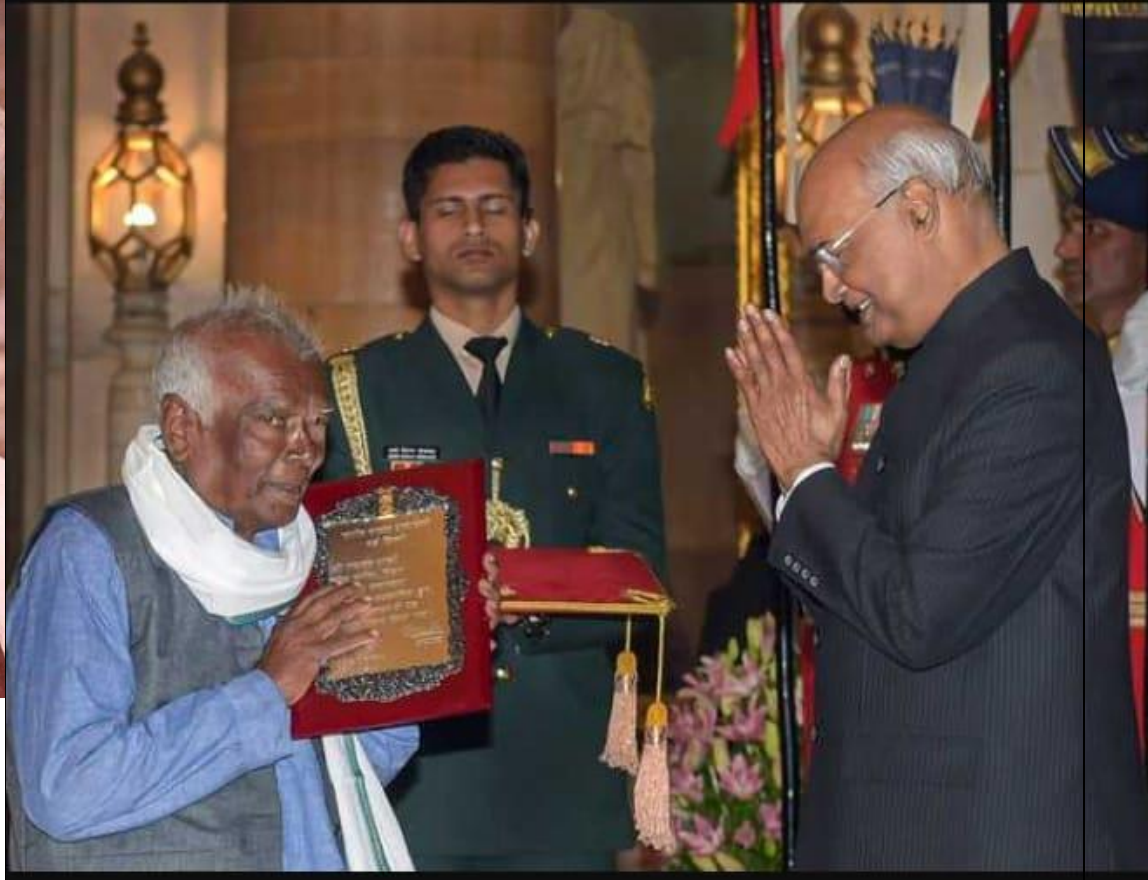
आयोजन होई त जरूर एक-दूगो साहित्यकार के नाम सुझावल जाई--!"

प्रकाश सोचे लगलन----- अइसे त कवनो साहित्यकार मान, पदवी भा इनाम पावेला अमूल्य रचना ना करेला। बाकिर ऊ आश्चर्यचकित रहस कि आज के समय में अइसने बदनाम लोग के सम्मानित कर के ताली के गड़गड़ाहट मिल सकत बा---। -----



☞ सुरेन्द्र प्रसाद गिरि  
देवताल -5, पिप्राढी, बारा, नेपाल





सोनहुला अतित के धनी जेकरा लगे गौरवमयी इतिहास रहल बा, लेकिन बर्तमान में ज्यादातर आपन गरीबी बेरोजगारी सूखा बाढ़ रंगबाजी खातीर आ कोरोना महामारी काल मे सैकड़ो किलोमीटर के दूरी पैदल मापे के जिजीविषा देखलस दुनियाँ ओहि खातिर सुर्खी में बनल रहे वाले बिहार से बीते दिन एक नीक खबर आइल । एह राज्य के सारण जिला के नगरा, तुजारपुर के रहे वाला भिखारी ठाकुर के नाच मण्डली में 10 बरिस के उमिर से ही लौंडा के रूप में जुड़ल लोक कलाकार रामचंद्र माँझी के 94 बरिस के उमिर पर पद्मश्री सम्मान से नवाजल गइल । लौंडा के रूप में कला के सफर आजुवो जारी बा । 94 साल के रामचन्द्र माँझी के नाम के आगे अब भारत के श्रेष्ठ सम्मान पद्मश्री जुड़ गइल बा। जवन लोक कलाकार खातिर बहुते गर्व के बात बा।

अपना देश के पिछड़ल राज्य में शामिल बिहार लोकबिधा के क्षेत्र में राज्य अउरी देश खातीर एगो मिसाल पेश कइले बा। कवनो काम छोट ना होला जरूरत बा साँच मन अउरी लगन से ओके कइल, गाहे बगाहे शासन के नजर में आ ही जाला अउरी सम्मान से भी नवाजल जाला । रामचन्द्र माँझी जइसन लोक कलाकार के ई सम्मान दिवा स्वप्न सा ही नजर आ रहल बा।

लोक कलाकार रामचंद्र माँझी जी के एकरा पहिले संगीत नाटक अकादमी अवार्ड 2017 से भी नवाजल गइल बा । जेमा राष्ट्रपति जी के हाँथे प्रशस्ति पत्र के साथ एक लाख रुपये के पुरस्कार राशि भेंट के रूप में प्राप्त भइल रहे। पद्मश्री से नवजला खातीर पूरा भोजपुरिया बघार गौरवान्वित बा । टीम सिरिजन की ओर से रामचन्द्र माँझी जी के हियरा से बधाई अउरी शुभकामना बा।



## योग अउर योगी- 11

नमस्कार योग गुरु शशि प्रकाश तिवारी के रउरा सभी के प्रणाम योग अउर योगी का अब तक के संस्करण में योग के परिभाषा, आसान एवम् प्राणायाम का बारे में पढ़नी। हमनी के पिछला अंक में भस्त्रिका प्राणायाम तथा भ्रामरी प्राणायाम से रूबरू होखनी। एह संस्करण में हमनी के षटकर्म में जल नीति का बारे में जानकारी लीहल जाई।

एह सभी स्थिति के प्राप्त करे खातिर योगी महर्षि घेरण्ड जी छह प्रकार से शरीर के शोधन करे के साधन के सूत्र बनवले बानी। एही सब के षटकर्म कहल बा। नेती, धौती, नौली, वस्ति, कपालभाति आ त्राटका एह सब क्रिया के नियमित अभ्यास से आहार नाल, स्वर तंत्र, श्वासनाल आ मस्तिष्क के भली भांति सफाई हो करके शरीर दोष रहित हो जाएला।



## षटकर्म

शारिर्मध्यम खलु धर्म साधनम्।

अर्थात् धर्म, अर्थ, मोक्ष आ काम के प्राप्त करे के एकमात्र साधन इहे मानव शरीर बा, जब तक ई शरीर स्वस्थ ना रही, तबतक एह मानव जीवन के वास्तविक लक्ष्य के प्राप्ति ना हो। जावाना मानव के भीतर वात, पित्त आ कफ सम होखे, मंदाग्नि, तिष्णाग्नी, विष्माग्नी सम होखे, मल निकाले वाला प्रणाली ठीक ढंग से कार्य करत होखे आ मन हरमेशा प्रसन्न रहत होखे ओहि मनुष्य के पूर्ण रूप से स्वस्थ जानल जाएला।

नेती कई प्रकार से होखेला घृत नेती, तैल नेती, रबर नेती, जल नेती। एह सबमें सबसे सरल बा जल नेती।

## जल नेती

हमनी के जीवन के आधार वायु (ऑक्सीजन) के नासिका छिद्र द्वारा फेफड़ा तक चहुपावल जाएला। फेफड़ा से ई वायु हमनी के रक्त का साथे मिल के हमनी के शरीर के सब अंग में चहुपेला आ शरीर में नाया ऊर्जा के संचार उत्पन्न हो जाएला। यदि साफ मात्रा में कोषाणु के ऑक्सीजन ना मिल पाई त कोषाणु अस्वस्थ हो जाई, जेहसे शरीर में रोग होखे के शुरुआत हो जाई।

अतः नासिका छिद्र के साफ राखल अति आवश्यक होखेला। जलनेति से हमनी आपन नासिका छिद्र के सफाई का साथ कीटाणु मुक्त भी रख सकिले।

**विधि**

जल नेती करे से पहिले पेट बिल्कुल साफ रहे के चाही, 1 लीटर पानी के सुसुम कर के ओहमे तकरीबन 10 ग्राम शुद्ध नमक(सेंधा नमक) मिलाके घोर लिहिं। सुबह में स्नान कईला के बाद एह सुसुम पानी के कवनो लंबा टोंटी नियर मुंह वाला बर्तन(केतली के प्रकार के) ले के भूमि पर अपना तलवा पर बइठ जाइं। अब अपना गर्दन के बावां तरफ तनकी सा झुका के दाहिना नाक में बर्तन के लमका पाईप (केतली नियर) घुसा के धीरे धीरे सांस लेहला के साथ सुसुम पानी के नाक में भरे के बा, उ सुसुम पानी स्वतः ही नाक के सफाई करके आ बावां नाक से बाहरा गिरे लागी, अब गर्दन के दाहिना तरफ झुका के बावा नाक से एह प्रक्रिया के दोहराइं। एहि प्रकार से 2 से 5 मिनट दुनु नासिका से एह प्रक्रिया के नियमित अभ्यास करे के चाहिं।

**लाभ**

हमनी के मस्तिष्क के तरफ से एक प्रकार के विषैला रस नीचा का तरफ बहत रहेला, यदि ई तरल पदार्थ हमनी के कान में आ जाए त बहरापन, आंख का तरफ आए त आंख के रोशनी पर असर, आ यदि गला में उतर जाए त गर्दन से संबंधित कई प्रकार के रोग के जनक बन जाएला। नियमित रूप से जलनेति काइला से उ विषैला पदार्थ बाहरा ना आविला। आंख के रोशनी में बढ़ोतरी करेला, यदि चश्मा होखे त धीरे धीरे चश्मा हट जाएला। स्वासोच्छवास के मार्ग साफ रहेला जेहसे स्नायुविक थकान कम होखेला, सर्दी जुखाम ना होखे, अनिद्रा के नाश, आ सिरदर्द में आराम का साथ साथ मस्तिष्क में ताजगी, दमा, टी.बी., खांसी, नकसीर, बहरापन, चित्त में प्रसन्नता इत्यादि बहुत सारा लगभग 1500 छोटा मोटा बीमारी से छुटकारा प्राप्त हो जाएला।

**सावधानी**

सामान्य रूप से त योग केहू योग चिकित्सक का देख रेख में ही करे के चाही बाकी थायरॉइड का अति विकास भइला पर, कमजोर दिल वाला, मस्तिष्क के कवनो रोग भइल होखे, चक्कर आवत होखे, नेत्र, कान का रोगी खातिर बिना परामर्श के ना करे के चाहि।

विशेष रूप से ध्यान राखे के बा कि सुबह में शौच इत्यादि कइला के बाद ही नेती क्रिया करे के चाहि। एह भाग में अतने रहे देवे के, शेष अगिला पुस्तक में रही। योग से संबंधित कवनों प्रकार के सहायता आ भा कुछऊ पूछे के होई त हमरा से [shashiprakashitiwari640@gmail.com](mailto:shashiprakashitiwari640@gmail.com) पर आ भा 9599114308 / 7217897727 पर हमरा के फोन/वॉट्सएप कर के हमरा से संपर्क कर सकत बानी। यदि रउरा चाही त यूट्यूब पर भी हमके **yogguru shashi prakash tiwari** का नाम से खोज सकतानि जाहवा रउरा योग से संबंधित नाया नाया जानकारी लगातार मिलत रही। रउरा सभे के एक बार फेरु से हमरा प्रणाम का संघे संगे दूनु हाथ जोड़ के जय श्री राम



**योगगुरु शशि प्रकाश तिवारी**

**जिला प्रभारी छपरा (अखिल भारतीय योग शिक्षक महासंघ)**

**परफेक्ट जिम व योगा केन्द्र**

**भटकेशरी, जलालपुर, छपरा (सारण) बिहार**

**841403**

## कहाँ गईल

कहाँ गईल  
खेत के मचान  
साझा खरिहान  
घर के दलान ।

कहाँ गईल  
डोली- कहार  
पोखरा- इनार  
विधि- बेवहार ।

कहाँ गईल  
घोठा- बथान  
आदर आ मान  
देहाती पकवान ।

कहाँ गईल  
गँवई बाट  
ओखर आ जात  
रहट आ घाट ।  
कहाँ गईल  
देहाती खेल  
कठई गाड़ी आ रेल  
भाई-भाई के मेल ।

कहाँ गईल  
लीपल घर- दुआर  
कऊड़ा बइठल सगरे परिवार  
किसिम- किसिम के घरऊ अँचार ।

कहाँ गईल  
फगुआ के हुड़दंग  
ढोल- मृदंग  
टेसू के रंग ।

कहाँ गईल  
समियाना आ कनात  
भोज में बइठत पाँत  
भैवद्दी के भात ।

कहाँ गईल  
आखाड़ा के माटी  
दूध- दही खॉटी  
झमड़ा आ टाटी ।

कहाँ गईल  
लिट्टी आ चोखा  
चऊक पर के खोखा  
गँवई ओझा आ सोखा ।

कहाँ गईल  
आपन माई भाखा  
लंगोटिया इयार भा सखा  
घर के दिआरखा आ ताखा ।

सुनि के "भोकल फॉर लोकल" के नारा  
उमेद बा आधुनिकता के साथे-साथे  
धरोहरो के मिली सहारा ।



अशोक मिश्र  
प्राचार्य, डीएवी कैमोर  
कटनी, म प्र

## रमावती

"का हो रामचनर... तहरा तऽ मुखड़ा पर चमक आ गइल बा ? अरे भाई तनी हमनियो के अपना नवकी समधिन के भेजल कसार चिखड़ब कि अकेलही सब दबावल चाहत बाड़ऽ मर्दे।" - फिरंगी पेटाहीं के गतान बनावत कहले।

रामचनर एक हाथ में हँसुआ आ दोसर हाथ पानी के बोतल लेले अपना खेते जात रहले। होरी में उड़ल धुरखेल के गर्द अब साफ हो गइल रहे। चइत के ताल ठोकात चइतार आपन पैर पसारत रहे। सभे अपना काम में भागल फिरे कहि कटिया तऽ कहि दँवरी के हल्ला रहे। बगइचन में गझिन मोजर अब फल के रूप लेले रहे।

"अबहीं तऽ दिनों बार नइखे धराइल फिरंगी

बाकिर समधियाना से रामचनर के जोड़ा पियरी धोती आ गइल बा" - गतान मुठ्ठी से पकड़ के घुमावत मँगरू कहले। फिरंगी गतान ला पेटारी बढ़ावत रहले आ मँगरू पेटारी के घुमावत ओकर आकार बदलत रहले।

" तहरा लोग के केहू रोकले बा जाके अपना भउजाई से माँग लऽ जा आ समधिन अकेल के एगो हमरे थोड़ी बाड़ी, ऊ तऽ तहनो सबके लगिहें।" - रामचनर तनी मुस्किआत कहले।



ई नेह, ई नाता ना जाने कबसे चलल आवत बा गाँव आ समाज मे कि केहू के रिश्ता केहू के हो जाला केहू के हित-पाहुन केहू के हो जाले।साइद इहे तऽ मेल बा गाँव में जवन आपन-गैर के फरक ना होखे देवे ला।

"ह. ह.. तू काहे ना बोलबऽ जब दसों नाँह घिउ में बा।" फिरंगी टोन कसले आ सभे हँसे लागल।

"ठीक बा भाई, अब चले दऽ जा, ना तऽ ज्यादा घाम होइ खराई मार दी चइत के घाम हऽ।" - रामचनर चलत-चलत कहले।

"काहे हो पन-पियाव ना ले लेवे लऽ घर से तनी।" मँगरू कहले बाकिर

रामचनर अपना राहे बढ़ गइले। आ दुनू जाना हँसे लागल लोग।

मँगरू आ फिरंगी पकिया संघतिया रहे लोग। दुनू दू जाति के रहले बाकिर तनिको भेद न रहे। गाँव मे सभे के मुँहलग्गु हो गइला के चलते सभे से कुछ ना कुछ नाता जरुरे रहे दुनू जाना के। भले केहू पद में बढ़ रहे बाकी ई दुनू जन उमिर देख के आपन रिश्ता फिट करे लोग। ताकि हँसी-ठिठोली में सुबिस्ता रही।

जब रामचनर खेते से घरे अइले तऽ घर के माहौल अशांत रहे। बड़की पतोहू से बाता-कहनी होत रहे रमावती के। रमावती रामचनर के संगिनी रहली आ उनकर बड़का बेटा देवेन्द्र बहरा रहत रहले उनकर मेहरी के नाँव रहे लखिया। लखिया के देहे एगो छोट लडकी रहे जवना के नाँव रहे लाली, ई बखेड़ा इहे लाली ला होत रहे। रमावती तनी पुरान बिचार आ पुरनका जमाना के रहली तऽ लखिया नया जमाना के । लखिया के मन में रहे कि हम कब अपना मरद के साथे बहरा जाई आ ओहिजा रही जबकि रमावती के बिचार ई रहे कि अब छोटको पतोहो के आ गइला के बाद बड़को के देवेन्द्र के हिले लगा दिहल जाई बाकिर पाँच बरिस से इहे अधेड़-बुन में अइसन नउबत आइल कि अब कुछ महीना से सासे-पतोहू में कवनो ना कवनो बात के झगड़ा शुरू हो जात रहे। बात ज्यादा ना रहे लाली जिद्द करत रहे गाटा (चीनी के मिठाई) खाये खातिर आ लखिया मना करत रहे, लेकिन बच्चा के जीव मना कइला पर कई घड़ी मानल बा जे मानी। ऊ रोअत अपना इया (रमावती) के लगे चल गइल आ रमावती सरसो फटकत रहली तऽ अपना अँजुरी से दू अँजुरी लाली के फराक में सरसों दे दिहली आ कहली- "जो किन ले गाटा.. रों जनि।"

जब लाली गाटा खात अपना माई लखिया लगे चल गइल तऽ लखिया के टम्प्रेचर माथे पर चहड़ गइल। आदमी के मन सब कुछो करावेला पता ना दिमाग के अंदर कइसन-कइसन कनेक्शन बा जवन कब कइसन मूड बना दी केहू नइखे जानत। हालांकि ऐजा त मूड पहिलहीं से सेट रहे कि घर मे शान्ति नइखे रहे देवे के तऽ कहा से शान्ति रही।

लखिया के मन में रोजो अपना मरद के साथे बहरा में बितावत जिनगी के कल्पना के सतरंगा

बादर घिरे आ ऊ रमावती, रामचनर भा लाली पर बरिस जाय। आजो उहे मेघ गरजल आ आके रमावती प बरिस गइल।" जब हम मना कइनी तबो आप काहे देनी हऽ एकरा के अनाज मे से। आप बिगाइल चाहत बानीं हमरा बेटी के तऽ कहि दीं हम एकरा के लेके कहि अउर चल जाएम।"

रमावती अनीच्छा से बोलली- " मने तू ई.. का केहेलू तहरा तनिको ना बुझाला। केहू अपना औलाद के बिगाइल चाहेला? आ ई अभी केतना उमिर के बिआ कि केहू बिगाड़ दी एकरा के। तनी बोले के सिखऽ।"

"अब रउआ हमरा के बोले के सिखाएम ना..। हम ना जानत रही कि हमर करम कुटाई ई घर में। उनका से केतना हाली कहनी फोन पर कि हमरा के ना होखे तऽ नइहर पहुँचा दऽ ना त अपना भीरी लेके चल चलऽ बाकिर ऊ तऽ अपना मउज में बाड़े।" एतना कह के लखिया अपना कमरा में चल गइल लाली के साथे लेले। तबे रामचनर आ गइले खेत से।

लखिया के बात से रमावती के आँखिन के कोर भींज गइल रहे। अपना अँचरा से आँखिन के पोछत कहली- "आगइनी आप बैठीं हम पानी लावत बानीं।"

एतना कह झट से उठ के पानी लेके आ गइली आ रामचनर के ओर पानी के लोटा आ मीठा के छोट भेली देत कहली- "ली पानी पीहीं ।"

रामचनर, रमावती के आँखिन के कोर छलकत देखि के कहले- "हमरा के माफ कर दिहऽरमा, हम बहुत जल्दी कर देनी देवेन्द्र के बिआहे में।"

"ना-ना, आप अइसन ना बोलीं, ई ठीक ना कहाई। आज काले के सभे लोग इहे तऽ चाहत बा



कि हम रही हमार मरद रहे या बेटा-बेटी बाकी लोग के स्थान कहा रह गइल बा। शहर के दियासलाई नियन डब्बा जस घर में रहल मंजूर बा बाकिर गाँव के दुमंजिला कोठी में ना।" अपना काम मे लागत ई बात रमावती कहली।

"खाली रवीन्द्र के बिहाये हो जाये दऽ तब इनका के देवेन्द्र के भीरी हम खुदे छोड़ आएम।" गमछा से मुँह पोछत रामचनर बोलले।

समय में ना लउके वाला पाँख होला जवन केहू के लउकी ना बाकिर उड़त रही। समय आपन गति में उड़त रहल धीरे-धीरे सब बिधि भइल आ रविन्द्र के बिआह के दिन आ गइल। घर मे हित-पाहुन दूर-दूर के सम्बन्धी लोग आइल बा। रमावती सभे के सेवा-टहल के साथे बिआह के काम में लागल बाड़ी बाकिर लखिया अपना उहे रूप में बाड़ी, उनका लागत बा कि ई बिआह हमरा शहरी जीवन के जिये में बहुत बड़का बाधक बा। मौका मिलते अकेल में ऊ देवेन्द्र से बोलली- "अबकी ना लेके चलम अपना साथे तऽ हम हमेसा खातिर नइहर चल जाएम। तब आप आराम से रहब हमसे ऐजा रहल ना जाई हम केतना बार कहले बानी आपके।"

"देखऽ लाखो, हम तहरा के तरी अपना भीरी लेके चलीं, अभी हम सेट नइखी भइल आ ओजा लोड ही बढ़ी। तू जानत नइखू, शहर के रीत बहुत उलटा हऽ। एक टाइम के खर्ची केहू मुफुत में ना दी। जवन करे के बा अपना कमाई से करे के बा। हमरा के थोड़ा अउर वकत दऽ हम सब सेट कर देम फिर लेके चलम।" देवेन्द्र लखिया के समझावत कहले।

"हमरा कुछो नइखे सुने के आप अपना साथ हमरो टिकट कर दीं ना तऽ हमरा से बेजाँय केहू ना होई।" गुस्सा में लखिया बोलली।

"अच्छा भाई, तू नाराज जनी होखऽ हम टिकट करा देम। अब तनी हँस दऽ मोर लाखो रानी..।" लखिया के गुदगुदावत देवेन्द्र कहले आ लखिया मुस्किआ देहली।

सज-धज आ बन-ठन के बरात अउर बराती लोग लइकी इहाँ पहुँचल। जेठ के साँझ रहे रामचनर के अंतिम आ छोट बेटा के बिआह रहे तऽ घोड़दउड़ खातिर एकइस गो घोड़ा, चार गो हाथी, तीन गो ऊँट भइल रहे। दुआरे बरात लगावे के बेरा एकइस गो सिंघा लेले डोम रहले, हुड़का नाच अलग रहे, डफरा नाच आ फररी नाच अलगे रहे। साथ मे अंग्रेजी बाजा अउर ओकरा धुन पर थिरके खातिर चार गो लौंडा अलग रहले। हर नाच आ बाजा के ताल अलग रहे बजावे से लेके नाचे तक के तरीका अलग रहे।

जब सिंघा बजे तऽ लागे कि भगवान भोले नाथ के दुआर पूजाई होता। हुड़का के ताल अइसन रहे कि छोट डमरू के बड़ आकार वाला डमरू पर अँगुरी के थाप आ झाल के खनक ओमें गावे वाला के राग एक कर देव साथ मे अँगोछी के माथे पर डालि के मर्दाना से बनल मेहरारू के रूप में नाचे वाला के कलाकारी ओकरा में अउर रंग भरत रहे। हुड़का से तनी मिलत-जुलत डफरा के नाच होला लेकिन एकर बड़ डमरू के जगह छितनदार आ एक ओर चढ़ल चमड़ी के परत रहे ला जेके डफरा कहल जाला। एहू के साथ झाल वादक रहे ले बाकिर ऐमे तनी मोर-मोरिन भा अउर कवनो मन भावक दृश्य दरसावल जाला जवना से देखे सुने वाला के अउर मजा मिले। सबसे अगल आ जोश वाला नाच होला फररी नाच जवना में चार लोग के टीम होला आ चारो जन के पहनावा एक रहेला सबके पैर में घुंघरू बाँधल रहेला। सबके हाथ में झाल होला जे से ताल ठोकल जाला आ कवनो ना कवनो भजन भा गीत गावेला सभे, जइसे कि

जोश उठे आ उहे जोश के साथे बीस से तीस फिट के दूरी पैर के घिरनी जइसन नचावत चक्कर काटल जाला। बिजली से तेज, पलक झपकत एक कलाकार एक कलाकार से दूर हो जाले जे से देखे वाला के अउर ही जोश आवेला आ अपने सभे के मुँह से वाह-वाह के आवाज लगावेला। अब अंग्रेजी बाजा आप सभे त जानते बानी कि कइसन होला। दूगो बड़का भोका वला स्टील के पिस्टिन रहेला आ दूगो छोटका वाला, एगो झुनझुना वाला, दुगो इम वाला आ एगो बहुत पातर काठ के पिस्टिन लेले रहेला आदमी, जवन कि सबके मास्टर होला। ओकरे निर्देश पर सब साज चले ला आ सब साज के धुन पर थिरके खातिर एगो महिला रूप में बनल मर्दाना होला जवना के सभे लौंडा कहेला।

बारात के देख के सभे आपन अँगुरी दाँते दबावत एके बात कहत रहे- " सुघन्धु के भाग केतना सुनर बा जे अइसन घर-वर मिलल बा। लइका के सूरत जेतना चमकत बा ओतने सब बारातियो चमकत बा।"

घोड़ दउड़ भइल, हाथियों सभ के तनी दौउड़ भइल। बारात दुआरे लगला के बाद जनवासा पहुँचल तऽ फिरगी आ मँगरू दुनू के कुछ कमी बुझाइल। फिर ऊ लोग देवेन्द्र के लगे गइल आ उनका से कहल- "का हो, देवेन्द्र हेतना कुछो भइल तनीसुन खातिर ला काहे रंग में भंग होखत बा। अरे बबुआ हमनियो के रंगीन पानी के दर्शन करा दऽ तब नु जानम जा कि बारात खूब भइल।"

"तुहु नु फिरगी काका.. ई कुल बात हमरा से कहत बारऽ। तू जाने लऽ नु कि हम ई सबके पँजरा ना जानी जल्दी। ई कुल के ठीका देवरिया वाला फूफा के लगे दिहल बा। तू दुनू जन उन्हीं लगे चली जा।" एतना कहि के देवेन्द्र अपना काम मे ब्यस्त हो गइले।

अब मँगरू आ फिरगी देवरिया वाला फूफा के खोजत बा लोग। बहुत खोजला के बाद पता चलल कि ऊ अपना खातिरि अलग व्यवस्था कइले बारे। एगो अलोता गिरल राउटी में आराम से पसर के पटाइल बारे तबे दुनू जाना पहुँचत बा लोग- "अरे पाहुन प्रणाम.. कहाँ रहनी, हमनी कब से खोजत बानी जा।"

"पाहुन के मूड तऽ पहिलही से फिट बा.. का पाहुन? " मगरू मजाक कइले।

"हमार फिट बा तऽ तोहनी के हमरा के काहे खातिर खोजत बारअ जा?" पाहुन तनी तुनक के बोलले।

"अरे जवन देवरिया से लेके आइल बानी ओकर दर्शन ना कराइब हमनी के।" फिरगी आपन आँख घुमावत कहले।

"काहे रे, तोहनी अभी ले अपना बहिन के दर्शन ना कइल सन का।" मजाक के लहजा में पाहुन बोलले।

"अरे पाहुन, पहिले आप दर्शन कराई अपना इहाँ के रंगीन पानी के.. मजाक तऽ बादो में होत रही।" मँगरू पाहुन के गोड़ दबावत कहले।

तब तक पाहुनो के मूड बन गइल आ अपना बैग से एगो अंग्रेजी शराब के बोतल निकाल के कहले- "ठीक बा, ई ल सन, पैग बनावसन हम तनी लघुशंका करि के आवत बानी।"

"ठीक बा पाहुन, जाई-जाई, हमनी बना के रखत बानी जा पैग।" पाहुन के जाते मँगरू आ फिरगी रम के बोतल लेके रफूचक्कर हो जाता लोग। जब पाहुन आवत बारे तऽ राउटी में केहू के ना देख के

मछिया जात बारे आ मने-मने कहत बारे- " हम भुला गइनी कि दुनु बिकरा हवे जा।"

जबसे सुघन्धु अपना ससुरा आइल बारी घर के माहौल में एगो अलग मादकता बा। लखिया के लहजा में बदलाव बा बाकिर दिमाग रोष में रहत बा। अबहीं सवा महीना पूरा ना भइल कि सुघन्धु रसोई सम्हारे लगली। एने देवेन्द्र इहे फिकिर में बारे कि बहरा जाए के दिन आ गइल आ हम लखिया से का कहब? शादी के माहौल में हम उनका के खुश राखे खातिर झूठ बोल देनी बाकिर अब कइसे बचब। इहे सोचत देवेन्द्र दतुअन करत रहले तबे रवीन्द्र आके टोकले- " का भइया, का सोचत बारअ..? परसो के टिकट बा नु तहरो।"

"ह टिकट तऽ परसो के बा बाकिर...।" फिर दतुअन के कूचत- "सोचत बानी कि तहरा भउजाई के कइसे समझाई? ऊ अलगे अपना जिद्द पर अइल बाड़ी कि अबकी हमू चलब बहरा।"

"ह.. बात तऽ तहरो सोचे जोग बा। अरे तऽ भउजाई के सब बता द ना ऊ मनिहे काहे ना?" देवेन्द्र के समझावत रवीन्द्र कहले।

" अरे भाई अब कइसे समझावल जाला। अभी हमरा कुछ महिना लागी परिवार राखे लायक व्यवस्था बनावे में। हमरा त कुछो समझ में नइखे आवत आ बाबूजी-माई से हम कह नइखी सकत कुछो।" देवेन्द्र दतुअन के पिक फेंकत कहले।

इंसान तराजू के पलड़ा पर तबे खाइ साबित होला जब ओकर झुकाव कवनो ओरि ना होखे आ डंडी सोझ रह जाओ। इहे भार से भ्रमित होखत रहले देवेन्द्र।

"ह.. बात त सही कहत बाइऽ भइया, हमू माई-बाबूजी से नइखी कह सकत कि हम सुघन्धु के अपना साथे ले जाये के चाहत बानी। ऊ सभे के

अच्छा ना लागी।" रवीन्द्र आपन दिल के बात कहले।

दुनु भाई के स्थिति एक जइसन रहे बाकिर केहू कहल ना चाहत रहे। देवेन्द्र के कमीनी तनी कम रहे ऐसे ऊ परेसान रहले आ रवीन्द्र के नया-नया बिआह भइल रहे तऽ उनकर आपन सवख रहे।

जब रात भइल आ सभे खा के आंगन में बतकही करत रहे रमावती आ रामचनर खाट पर बइठल रहे लोग तबे रमावती बोलली- "हमरा मन में बहुते दिन से एगो बात घुमइत रहल हऽ देवेन्द्र, तू बुरा ना मानअ तऽ आपन परिवार के लेके अपना संघहि चली जा। लाखो के मन केतना दिन से तहरा साथ शहर में रहे के करत बा।"

ई बात सुनके लखिया के मुह सन्न हो गइल उनका समझ मे कुछ ना आवत रहे आखिर ई कुल का होता आ आज अम्माजी के का हो गइल बा जे अइसन बात बोलत बानी? फिरो लखिया आपन मुँह पर झूठ हँसी राखत कहली- "अरे, अइसन काहे कहत बानी अम्माजी, हम का कइनी अब जे अइसन बात बोलत बानी?"

"बात कुछो कइला ना कइला थोड़ी बा। हमनी दुनु बूढ़ा-बूढ़ी के जबले देह चलत बा तब तक तू दुनु जनी आपन जिनगी जी लऽ जा। हमनी के थकला पर करिहऽ जा सेवा-पानी। हम त बहुत दिन से इहे चाहत रही कि रवीन्द्र के बिआह करि आ तहन लोग के जिम्मेदारी दे दी।" रमावती तनी थाकल मन से ई बात कहली।

"माई, तू अइसन बात काहे कहत बाइ? हम तहरा लोग के अकेल नइखी छोड़ सकत।" रवीन्द्र आपन ऊपरी मन से कहले।

"ना रवीन्द्र हमनी अकेल कइसे रहम जा। ई घर बा, खेती बा, गाँव बा आ पर-पाटीदार बारे। सभे तऽ बा हमनी के साथे तू लोग आपन जिनगी जिअजा बेटा।" रामचनर रमावती के ओर देखत आ रवीन्द्र के माथे पर हाथ फेरत कहले।

देवेन्द्र कुछो ना बोलत रहले उनका फिकिर रहे कि हम एतना जल्दी ई कुल कइसे कर पाएम। अगर परिवार के लेके शहर में गइनी तऽ पइसा के तंगी रही। तबे रमावती अपना कमरा में गइली आ कुछ लेके अइली।

"ई लऽ देवेन्द्र, पचास हजार रुपया, अब तहरा कवनो परेशानी ना होई। शहर जाके रहे में तू कुछ महीना तक आपन परिवार के रख सकत बारअ आ फेर तऽ सब ठीक हो जाई जब तहरा काम अच्छा से चले लागी।" एगो कपड़ा के टूक में लपेटल सौ-सौ के बंडल निकालत रमावती कहली- " आ तुहु लऽ रवीन्द्र पचास हजार रुपया। इहे हमनी दुनु बेकत के जोगावल धन रहल ह बाकी सब तहरा लोग के हाथ में बा। अब कइसे रहबऽ जा आ का करबऽ लोग।"

देवेन्द्र आ रवीन्द्र अपना परिवार के साथे अपना-अपना कमरा में चलि गइल लोग। जब आँगन में रमावती आ रामचनर रह गइले तऽ रामचनर पूछले-"जिनगी के इहे सच्चाई हऽ का कि जेकरा से जेतना लगाव होला उहे दूर चली जाला। का तू अपना ई निर्णय से खुश बाडू? हम एतने जानल चाहत बानी।"

"हम एकर उत्तर अबहीं नइखी दे सकत आपके।" खाट प करवट बदलत रमावती कहली।

भिनुसहरा सभे जल्दी उठल आ सब कुछो आज जल्दी में होखत रहे काहे कि दुनु भाई के आज के टिकट रहे बहरा जाये के। जब सब कुछ

हो गइल तऽ अपना बेटा-पतोहू के बस धरावे बदे रामचनर आ रमावती सड़के पर आइल लोग लाली रमावती के गोद में रहे। लखिया के आँखिन में पझतावा के लोर रहे। ऊ इहे सोचत रही कि हम अम्माजी के ना समझ पवनी। अभी बस आवे में टाइम रहे तब तक लखिया रमावती के पाव पकड़ के फफक के रोये लगली- "हमरा के माफ कर दी अम्माजी, हम बहुत मूरख बानी जे आपके ना समझ पइनी आ आप से हर बात पर लड़त रहनीं। हमरा के माफ कर दी..माफ कर दी हमरा के..।"

लाली के गोद से उतारत रमावती लखिया के उठा के लोर पोछत कहली- "अरे पागल, तू ई कुल ना सोचअ, ई सब होत रहेला घर-परिवार में। तू खुशी-खुशी जा आ आपन गृहस्थी अच्छा से सम्हरिहऽ। ज्यादा कुछो सोचला के जरूरत नइखे।"

तब तक बस आ गइल आ सभे, सभे से मिलल। दुनु बेटा लोग बाबू-माई के पाव छुअल आ रमावती दुनु पतोहू के अपना गले लगा के बिदा कइली। लाली के करेजा से साट के प्यार दिहली। जब तक बस धुर उड़ावत आँखिन से औझल ना भइल तबले दुनु बेकत बस के देखत रह गइल लोग। तले ले मँगरू आ फिरंगी कहि से आ गइले।

" का हो भउजाई, आज तऽ तू बहुत चमकत बाडू हो बेटा पतोहू के बहरा चल गइला पर। का बात बा, आज से तूहीं दुनु बूढ़ा-बूढ़ी के जवानी वाला दिन आ गइल का।" फिरंगी रमावती के मुरझात मुँह पर खुशी के गुलाब खिलावल चाहत रहले। ऐसी उद्देश्य से मज़ाक कइले। मज़ाक तनी भददा रहे लेकिन सुखद रहे।

"ना मनबऽ तू लोग, अब ई बुढौती में मज़ाक सूझत बा?" रमावती मुस्किआत अपना अँचरा से आँखिन के कोर पोछत कहली।



"अरे भउजी, मज़ाक के आ रिश्ता के उमिर ना होला। अच्छा कइलू जवन दुनू के बराबर तराजू पर तउल के परखलू हऽ। तहरा हिम्मत के दाद देवे के पड़ी अब तनी हमनियो पर ध्यान दी हऽ।" गमछा के माथ में बान्हत मँगरू ई बात कहले आ दुनु जाने अपना रहता चल गइल लोग।

अब रामचनर संकोच के नजर से कबो रमावती के देखस तऽ कबो जात फिरंगी, मँगरू के। रामचनर के दुबिधा में देखी के रमावती कहली- "आप काल रात पूछत रहीं नु, हम सही करत बानी कि गलत तऽ आज उत्तर मिल गइल आपके नु हमार फैसला सही बा कि गलत। काहे कि हम जानत रही आज ना काल रवीन्द्र अपना परिवार के बहरा लेके जरूर जइते तऽ काहे ना अभी से ऊ लोग के मन साफ राखत ई काम कइल जाव। काहे कि लखिया नियन अब अउर जबाब देहि हमरा से ना सहाइत।" एतना कह के रमावती रामचनर के छाती पर आपन मुड़ी रख के रोये लगली।

रामचनर के आँखिन में एगो चमक रहे जवन कि अपना संगिनी के लिहल पैसला पर गर्ब के साथ लउकत रहे। ऊ रमावती के माथ के चूमत कहले- "ऐमे रोये के कवन बात बा हम बानी, तू बाड़ू आ ई घर-दुआर बा सब तऽ उहे बा जवन बरिसो पहिले रहे। देखअ तहरा आँखिन के काजर बहल जाता।"

एतना सुनत रमावती हँसे लगली आ रामचनर मुस्किआये लगले। दुनू बेकत अपना घर का ओरि चल दिहल लोग...।



विवेक सिंह  
सिवान(बिहार)



ORFO A15 ©babalrai  
2021/05/01 07:45



## हिजड़ा

ओहि दिन नौ बजिया गाड़ी के गइले घरी भर बीतल होखी..... कि ई का?... सुरुज भगवान मुहँ चोरा के कहवाँ लुका गइलन ? दिन के पहिले उठान में साँझलउका नियन बुझाए लागल। आकास में बदरी छवले रहे एकदम करिया कलूट। बयरियो झझकत बहत रहे । बुझाय जे कुल्हि बादर धरती पर अँउधिया पड़िहें।

तबहीं दरवाजा के घण्टी बाजल.....संगहीं एगो बिशेष ढंग से थपरि के आवाज निकालत ऊ लोग आपन आगम जना देल। ढोलकी के बेताला थाप प सुर मिलावे के असफल कोशिश में फाटल राग के बेसुरापन कान तक ससर आइल। "पूरा एगारह हजार लेइब दुलहिन, ओकरा से एको नया कम नाहीं..... आखिर नाती भइल बा।" अम्माँ ओहन लोग के कम में मनावन के जद्दोजहद में लागल रही।



रिंकू, घर के पढाकू लइका कम्पटीशन के तैयारी में जी जान से लागल रहलन । देखि के कहलन- "सबेरे-सबेरे मुफ्तखोरन के दर्शन भइल, पता ना दिन कइसन बीती.....।"

"ए बाबू .... मुफ्तखोर केकरा के कहल ह ? हमनिके ?..... समाज के एगो उपेक्षित वर्ग शारीरिक अपंगता के शिकार..... जे चाह के भी.... अब तक अपना अस्तित्व से हीन-भाव के नइखे निकाल सकत... ओ के? हमनी त लाद के जरूरत का आगा बेबस बानी जा।"

"हमनिके कमजोर भा कमतर नइखी जा....सामान्य इन्सानी चेहरा मोहरा बा... हमनियो के समाज के मुख्यधारा के प्रवाह बने के बा... परजीवी बने के चाहत नइखे । उमिर के सोरह बरिस लइका के वजूद में बीतल बा, दसवीं में पढ़त रहीं जब आपन खून के रिश्तेदार के हाथे जलील होखे के पड़ल आ जबरदस्ती एह बेवजूद समाज के हिस्सा बने के परल, कवनो चारा ना रहे ए बाबू! एक झटके में सगरी खून के रिश्ता-नाता पर पूर्ण बिराम लाग गइल। हमनियों के जनम कवनो माइए- बाबू दिहले रहलन, बदरी से ना गिरल रहनी जा.... लेकिन घर

से बहरियाते अब ऊ ना बेटा रहल.... ना बेटा... ना दोस्त.... न बिद्यार्थी..... । बस एगो नावा पहिचान भँटाइल "हिजड़ा"। अब तनी एकरा के मीठ बोली में "किन्नर" कहाता पढ़ल- लिखल उन्नत समाज । हमनीके वजूद हमनी के

करनी के फल ना ह बल्कि बिधना से जननांग देवे में तनी चूक हो गइल..... जेकर खामियाजा हमनी के ता जिनिगी भोगे के परेला... हँसी ठिठोली के पात्र बने के परेला। "

"कहेके त कानून से वजूद के नावा पहिचान मिलल बा "ट्रांसजेंडर" लेकिन ई ना चाही, चाही..... स्वेच्छा से स्त्री भा पुरुष चुने के छूट चाही।"

"अगर भूर्ण हत्या कानून के नजर में अपराध बा त माई- बाबू परिजन द्वारा जननांग दोषी बच्चा के परित्याग भी जघन्य अपराध घोषित होखे के चाही। किन्नर पूर्णतया पुरुष भा स्त्री ना भइला के बावजूद भी इन्सान त बटले बा एमा कवनो

असहमती नइखे। ई खाली प्रजनन छोड़ के इन्सान के कुल क्रिया के सम्पन्न क सकत बा ।"

"बस एगो भोग सुख ले या ना दे सके, बस इहे काल हो गइल.... बड़का अक्षमय्य अपराध हो गइल.... एह कमी के कारण हमनीके दुत्कार, फटकार, हिकारत के जूता से पीटल जाला, ता जनिगी। मुअला के बादो ई जूतम पैजार बन्द ना होला ओसे पीट-पीट के ही किन्नर समाज द्वारा अंतिम बिदाई दिहल जाला। रुखसत पर भी इज्जत नसीब ना होला।"

"हैरानी के बात बा कि दिब्यांग के अक्षमता के बावजूद माई बाबू निकट परिजन आ समाज के ऊ स्वीकार्य बा... लेकिन जननांग दोषी नाहीं ...अइसन दू बिनाय काहें ? काहें ना माई बाबू हमनीके परवरिश भी सामान्य बिकलांग बालक के तरह ही करे आ समाज भी हमनिके एह कमी के बावजूद भी स्वीकार्य करे, हमनी के अंदर भी सारा मानवीय खूबी बा सभकरा नियन।"

"किन्नर समाज के भी कसम खाये के परी की जननांग दोषी शिशु के ऊ परिवार से अलग क के एगो शापित अउरी नारकीय जीवन जिये के बेचारगी देवे के अपराध ना करी....। हमनियो के इंसान हई जा समता, समानता अउरी जिये के अधिकार हमनियो के मिले के चाही तबे हमनीके जन्म अपशकुन अउरी कलंक ना मानल जाइ। समाज पर बोझ ना बनल जाइ। हमनीके श्राप से सभे डेराये के ढोंग करेला नेग देके बचल चाहेला। लेकिन अपना समाज के हिस्सा ना मानेला।"

ई नइखे हो सकत का ? केतना बड़ बड़ परिवर्तन त हो रहल बा समाज में । सब कुछ बदल रहल बा त सदियों से चलल आ रहल ई परम्परा भी बदले के चाही कि ना ?"

"खाली कानून बना दिहला से समाज मे तिसरका लिंग के पहिचान दे दिहला से भला ना होई ।"

सामान्य बिकलांग नियन परिवार के साथे रहे पढ़े लिखे पसन्द के काम करे के अधिकार मिलो। दया ना क्षमता के आधार पर काम मिलो तबे बदली जिंदगी किन्नर के, नेग दिहला से, बक्शीस देहला से ना।"

लोर भरल आँख जवन आस-उम्मीद के सुनहरी किरण के झेले के माद्दा के भुला चुकल रहे.... ओहि किन्नर मण्डली में से बाहर निकलल आ कहलस- "अरे! बेटा काहें आपन आस-विश्वास के परवाज देत बाड़... ई जानवर के समाज ना ह....जहवाँ सूँघ के आपन पराया के पहिचान कइल जाला आ अपना लिहल जाला। बलु ई त इंसान के समाज ह .... एहिजा रिश्ता के इमारत फायदा नुकसान के नीव पर राखल जाला... ना कि मानवता आधार बनेला ।"

जवान किन्नर के मुहें कुल बात सुनके रिकू के त काठ मार देले रहे । उनकर अब तक ले किन्नर के प्रति कुल्हि सोच-समझ टेघरे खातिर आतुर रहे । उनकरा जेहन में किन्नर शब्द टेघर के बिलुप्त हो गइल रहे ओकरा जगह मनुष्य शब्द काबिज होखे के जद्दोजहद में लागल रहे।

"अरे!अरे आपन नेग त लेले जा ..... ।"

लेकिन किन्नर मण्डली के त लागत रहे कि एह दहलीज पर आपन दर्द उधार रह गइल रहे..... ओकरे के अपना झोरी में बटोर..... अपना सुर नशा में मंडली आगे का ओरि कदम बढ़ा दिहलस ।



✍️ तारकेश्वर राय "तारक"

ग्राम : सोनहरियाँ, पोस्ट : भुवालचक  
जिला : गाज़ीपुर, उत्तरप्रदेश

मत्तगयन्द सवैय्या

बासठ की गलती बड़की अबकी फिर ना दुहरावल जाई,  
देश क भूमि न छीन सकें रणबैरिन के समझावल जाई।  
ड्रैगन के पग में घुँघरू जिनपिंग सुना पहिरावल जाई,  
बीन बजा घुस के घर में अब नागिन डांस करावल जाई॥

मांग क सेनुर देख सखी चमकें रवि कोटिन भाग्य जगावें,  
दूर भले तन से मन मीत न प्रीत क डोर कबो चटकावें।  
गाँव जवार क लोग सभे उनके कुल वंश क मान बढ़ावें,  
देश क वीर सपूत पिया रन बीच ध्वजा विजयी फहरावें॥

राह निहारत आँख दुखे पिय बैरिन के यम द्वार पठावें,  
फागुन भी बदरंग लगे सब नाचत गावत झाल बजावें।  
कूक सुनीं तब हूक उठे कजरा गजरा मन एक न भावें,  
सावन बीतल झूर सखी सजना बदरा बनिके तरसावें॥



✍️ अवधेश मिश्र रजत  
वाराणसी

किसान एहि देशवा में

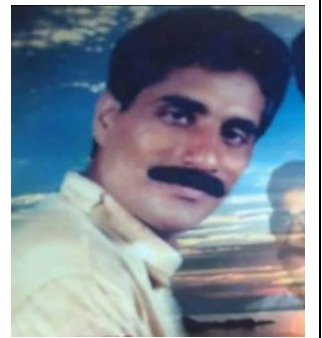
कुछऊ कहाला न बुझाला भगवान हो  
किसान एहि देशवा में सबसे परेशान हो

राजा साहब पोल मांगे मेम्बर साहेब वोट मांगे  
झगरा लगावे लेखपाल बेईमान हो  
किसान एहि देशवा में.....

पुलिस लोग घुस माँगे नजर चापलूस माँगे  
पवनी परोजवा में माँगे बड़ा दान हो  
किसान एहि देशवा में.....

कटले कटाला नाहीं सूखा के विपतिया  
अबले सरकार नहीं भेजले राहतिया  
खदिया-डीजल छुवे लागल आसमान हो  
किसान एहि देशवा में.....

लागता ना पैदा होई कुछु असों खेत में  
टूटी करिहाई कर खेतवा के देत में  
"कश्यप" लागेला मरी भूखे इन्सान हो  
किसान एहि देशवा में.....



✍️ विनोद पाण्डेय "कश्यप"  
भोजपुरी लोक गीतकार  
खैरबारी, गाज़ीपुर (उ०प्र०)

## पूरबी बोली ' भोजपुरी ' आ खड़ी बोली ' हिन्दी '

आपन भारत देस बहुभासी ह। अलग-अलग ढंग के भौगोलिक क्षेत्र आ अलग-अलग मौसम के हिसाब से जीवन जीये के तरीका से उपजल एकरा बहुसांस्कृतिक अउर बहुभासाई जीवन-व्यापार के बीच पनपल एकात्मिक समन्वय आधारित जीवन दर्शन रूपी संजीवनी शक्ति के ओर दुनिया के ध्यान खींचत पं. इकबाल कहले रहस -

यूनान मिस्र रोमा, सब मिट गए जहां से।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।।

एकरे के हम कहिले कि ' इसे बात बा कि हस्ती मिटी कबो ना आपन। '

बहुते व्यापक भू-भाग में विस्तार लेले ई आपन देस भारत तमाम तरह का विविधतन के बावजूद अपना सम्पर्क, सम्वाद, सहमति-समन्वय आ सहकार के सांस्कृतिक जीवन शैली

के बदौलत आदि मानव काल से आज ले अपना अस्तित्व के बनवले, बचवले आ बढ़वले आइल बा। अब जहाँ तक एकरा बहुभासिक स्वरूप के बात बा त जनगणना- १९९१ के अनुसार इहाँ १५०० मातृभासा बोले वाला समाज रहे। जवना में दस हजार से अधिका बोले वाला लोग का भासा के संख्या ११४ रहे। मैथिली आ लद्दाखी के मिला देहब त ई संख्या बढ़के ११६ हो जाई। ई बहुभासिकता अपना भारत के पोसन करनेवाला शक्ति ह। ए. अब्बी के संपादन में छपल पुस्तक ' स्टडीज इन बाइलिंग्वलिज्म ' के अपना आलेख



में अन्नामलाई एह बहुभासिकता के भारत के ' स्नायु-बेवस्था ' बतवले बाड़न। जवना के दूगो प्रमुख भासा के नाम बा - ' पूरबी बोली भोजपुरी आ खड़ी बोली हिन्दी '।

पूरबी चाहे पूर्बी बोली भोजपुरी आ खड़ी बोली हिन्दी दूनो दूगो भासा हवें स। पूरबी बोली भोजपुरी जेतने पुरान आ लोक बेवहार के जीवन्त

भासा ह, खड़ी बोली हिन्दी ओतने आधुनिक सिरजल भासा ह। एह दूनो भासा के भेद जाने खातिर दूनो के उद्भव आ विकास, क्षेत्र, नामकरण के आधार, ध्वनि, सब्द आदि के उचारन पद्धति मतलब ध्वनि -भाव प्रकृति, ध्वनि चिन्ह, लिंग-निर्णय के प्रक्रिया, क्रिया आ कारक प्रक्रिया , विभक्ति आ परसर्ग बेवहार सहित अउर

भासिक तत्वन का बेवहारिक अन्तर के अस्थिर से थनगे-थनगे जाने के होई। काहेकि एगो के परम्परा वैदिक, उत्तर वैदिक, पौराणिक आ ऐतिहासिक भोज लोग के पूरबी क्षेत्र के प्रसिद्ध वैदिक भोजकट के भोजी, करुष क्षेत्र के कारुसी अउर बुद्ध का काल के कोसली आ पालि से चल के भोजपुरी नाम तक पहुँचल बा त दोसरा ओर खड़ी बोली हिन्दी के जनम उनइसवीं सदी के ह। डॉ. राम विलास शर्मा के अनुसार '१८०० ई. के पहिले खड़ी बोली हिन्दी नाम के भासा अस्तित्वहीन रहे। खड़ी बोली के आधार पर हिन्दी के विकास भइल। विद्वान लोग

के साफ-साफ कहनाम बा कि सन् १८००ई में कलकत्ता के फोर्ट विलियम कॉलेज का हिन्दुस्तानी भासा विभाग के विद्वान अध्यक्ष जान बी. गिलक्राइस्ट अपन भाखा मुंसी लल्लू लाल, सदल मिश्र आ सदासुखलाल से लोक प्रचलित कथा वाचन आ काव्य लेखन के भासा ' भाखा ' के जगह पर आधुनिक कृत्रिम भासा रूप खड़ी बोली में लिखे के आदेस देलें, जवन आगरा, मेरठ आ पूर्बी दिल्ली के कौरवी भासा आधारित रहे। एह आधुनिक भासा में सबसे पहिले अनुवाद के रूप में गद्य लिखाइल।

सबसे पहिले सन् १८०३ ई. में लल्लू लाल, जे गुजराती ब्राह्मण रहस आ आगरा में बस के लाल कवि के रूप में ख्याति पा चुकल रहस, ऊ भागवत पुरान के अनुवाद के आधार पर 'प्रेम सागर' के रचना कइलें। लल्लू लाल खुद अपना पोथी 'प्रेम सागर' के भूमिका में लिखले बाड़न - ' सिरी युत गुन गाहक गुनियन सुखदायक जान गिलकिरिस्त महाशय की आज्ञा से सम्बत् १८६० ( सन् १८०३ ई. ) में सिरी लल्लू लाल जी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरे वाले ने --- जिसका सार ले, यामिनी भासा छोड़, दिल्ली आगरे की खड़ी बोली में कह, नाम 'प्रेमसागर' धरा।' अइसहीं सदल मिश्र यजुर्वेद आ कठोपनिषद के नचिकेता रिसी के कथा के खड़ी बोली में अनुवाद ' नासितोपाख्यान' नाम से कइलें। कुछ विद्वान लोग के अनुसार खड़ी बोली के 'हिन्दी' नाम भारतेन्दु हरिश्चन्द्र दिहलें बाकिर हिन्दी के वर्तमान भासा रूप के अर्थ में सबसे पहिले लिखित प्रयोग सन् १८१२ ई. में फोर्ट विलियम कॉलेज के वार्षिक विवरण में कैप्टन टेलर ई कहत कइलें कि ' हम खाली हिन्दुस्तानी भा रेखता के जिक्र कर रहल बानी, जवन फारसी लिपि में लिखाला।--- हम हिन्दी के जिक्र नइखी करत, जवना के आपन लिपि बा। '

(Imperial Records, Vol.- 4, Page -276-77 )

संतकवि कबीर दास अपना बोली के पूरब के बोली बतावत कहले बाड़न - बोली हमार पूरब के, हमरा लखे ना कोई। हमरा के उहे लखी, जे दूर पूरब के होई।' मतलब जे ठेठ भा निछक्का पूरबी इलाका के होई उहे हमरा बोली-भाखा के लख सकेला। डॉ. भोलानाथ तिवारी अपना 'हिन्दी भाषा का इतिहास' के पन्ना-१०२ पर साफ लिखले बाड़न कि ' भोजपुरी के पूरबियो कहल जाला।' अब सवाल ई खड़ा हो सकऽता कि भोजपुरी के पूरबी बोली आ भोजपुरी भासी क्षेत्र के पूरबी क्षेत्र कबसे कहल जाला त अन्तरवेदी लोग के अनुसार पच्छिमी बिहार से प्रयाग तक मतलब गंडक, गंगा, सोन, सरजुग, कर्मनासा, राप्ती आदि नदियां से सींचल क्षेत्र के पूरबी क्षेत्र कहल गइल बा, जवन भोजपुरी के क्षेत्र ह। महाभारत के उद्योग पर्व के अध्याय १०८ में भरत भूमि के बँटल चार भागों के महत्व बतावत सुपर्ण गालव रिसी के कहनाम बा कि ' श्रावस्ती से अजोध्या होत प्रयाग ले उत्तर से दक्खिन तक एगो लकीर खिंचाए त उहे भारत के पूरबी आ पछमी भाग के सिवान होई।

( भारतीय इतिहास की रूपरेखा - पन्ना-११० आ ऑल इंडिया ओरिएंटल कान्फ्रेंस- १९३० में पढ़ल आ छपल जयचंद्र अउर एच. सी. चकलदार के आलेख, पन्ना -२२)।

पूरब आ पूरबिया के सम्बन्ध में हाब्सन-जाब्सन के पन्ना -७२४ पर लिखल बा कि ' पूरब के उत्तरी भारत में 'पूरब' से अवध, बनारस आ पच्छिमी बिहार से तात्पर्य बा। एही से पूरबिया एही प्रांतन का निवासी के कहल जाला। बंगाल के पुरान फउज का सिपाहियन खातिर एही पूरबिया सब्द के बेवहार होता रहे। काहेकि उन्हन में अधिकतर एही प्रांतन के निवासी रहलें।'( हेनरी मूल तथा ए सी बर्नेल कृत कोश आ ' भाषा और समाज- डॉ. राम विलास शर्मा; पन्ना- २१५)। कुछ विद्वान लोग के ई साफ मत बा कि श्रावस्ती, अजोध्या आ प्रयाग के बीचे खींचल रेखा के पूरब आ मैथिली-मगही क्षेत्र का पछिम के क्षेत्र पूरबी क्षेत्र आ उहाँ के



बोली पूरबी कहल जाला आ इहे क्षेत्र भोजपुरी भासा के आपन क्षेत्र ह। डॉ. राजबली पाण्डेय ' हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास, भाग पहिला में लिखले बाड़न कि भोजपुरी क्षेत्र के प्राचीन सीमा के रेघिआवल कठिन काम बा। बाकिर एह क्षेत्र में प्राचीन मल्ल, बज्जि, कासी, करुस, वत्स आदि जनपद निहचित रूप से सामिल रहे।'

रास बिहारी पाण्डेय 'भोजपुरी भाषा का इतिहास' में 'शतपथ ब्राह्मण' आ ' काशी का इतिहास ' के आधार पर भोजपुरी क्षेत्र में प्राचीन मल्ल, बज्जि, कासी, कोसल, करुस, बत्स आदि जनपदन के सम्मिलित कइले बाड़न। कुछ लोग के इहो मान्यता बा कि गंगा जेतना दूर पच्छिम से पूरब माहे (के ओर होके) बहत रहेली, उसे पूर्वी क्षेत्र ह मतलब प्रयाग से राजमहल तक भोजपुरी के प्राचीन सीमा रहे। जहाँ के भासा के पूरबी बोली, कोसली आ फेर भोजपुरी भासा कहाइल। बौद्ध धर्म का त्रिपिटिकन में एह क्षेत्र के ' मज्झिम देस ' कहल गइल बा, जवना के विकसित रूप 'मध्यदेस' ह जहाँ का भासा के भासा बैग्यानिक लोग मध्यदेसीय भासा कहले बा। एकरा पूरब प्राच्य आ पच्छिम उदीच्य भासा के क्षेत्र पड़ेला। मतलब पूरबी बोली भोजपुरी मध्यदेसीय भासा ह। आ एकरा पच्छिम आगरा, मेरठ आ पूरबी दिल्ली के कुछ जिला का कुरुक्षेत्र वाला जिलन के भासा कौरवी खड़ी बोली कहाइल। जवना के बाद में हिन्दी नाम धऽ दिआइल। कौरवी से निकलल खड़ी बोली के संदर्भ में राहुल सांकृत्यायन अपना सब्दन में कहले बाड़न - ' मेरठ कमिश्नरी ( कुरु जनपद ) के पौने चार जिलन के छोड़के बाकी लोग के आपन निजी मातृभासा बा।' ( मातृभाषाओं की समस्या- राहुल सांकृत्यायन; पुस्तक - भाषा की राजनीति और राष्ट्रीय अस्मिता- सं. ज्ञानतोष कुमार झा; पन्ना-२५०)

अइसे त आगे भोजपुरी के विकास ओह देसी गण भा जन भाषा से देखावल जाई जवना के संजोग से वैदिक भासा, प्राकृत, अपभ्रंश आदि के

विकास भइल, तत्काल एह पूरबी बोली के विषय में कुछ आउर भासा बैग्यानिक लोग के विचार जानल जरूरी बा। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार ' बुद्ध भगवान का उपदेसन के प्रणयन सबसे पहिले एही पूरबी बोली में होके, बाद में ओकर अनुवाद पालि में, जवन कि मध्यदेस के प्राचीन भासा पर आधारित एगो साहित्यिक भासा रहे, से भइल।

----- कालान्तर में जैन लोग एह पूरबी बोली के कुछ परिवर्तित-परिवर्द्धित कर लिहल। बाकिर महदंशन में ऊ लोग एकरा के अपनवले राखल आ उनका धर्मग्रंथन में ई अर्द्ध मागधी नाम से विख्यात बा। अर्द्ध मागधी में ओकर पूर्बीय स्वरूप बहुत कुछ बांचल बा।'(भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी; पन्ना- १८६-१८७)। डॉ. चटर्जी आगे लिखले बाड़न कि सम्राट अशोक के राजभासा एगो पूर्बी बोलिए रहे आ मौर्यन का राजत्वकाल में समस्त आर्यावर्त में इहे भासा सगरो समुझल जात रहे आ बेवहार होत रहे। अशोक का शिलालेखन में कतहीं मध्यदेस के भासा पालि उपलब्ध नइखे।' ( भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी; पन्ना-१८८)।

तब से लेके बाबू कुंवर सिंह का समय तक एह क्षेत्र में एही पूरबी बोली भोजपुरी के बोल-बेवहार रहे। आदि काल से आ कालक्रम से शासक वर्ग आ विद्वान लोग के बीच वैदिक भासा, वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, संस्कृत, अरबी-फारसी, अंगरेजी आ खड़ी बोली हिन्दी सम्मान आ राजकाज आ शिक्षा के भासा बन के विकास पावत गइल आ ई पूरबी बोली भोजपुरी एगो प्राकृतिक नदी जइसन अपना मन-मिजाज के हिसाब से जब जहाँ आ जइसे-जइसे ऊँच-खाल जगह मिलत गइल तइसे-तइसे बहत-बढ़त अपना भासिक स्वरूप में थोड़-ढ़ेर बदलाव करत आज तक लोक बेवहार में जीअत आइल बा।

बौद्ध ग्रंथन में कोसल जनपद के बहुते विस्तार देखावल बा। विद्वान लोग के अनुसार एक समय में सोलह जनपदन में कोसल जनपद के सीमा क्षेत्र

बहुते विस्तार लेले रहे। एकर सीमा क्षेत्र उत्तर में नेपाल के तराई क्षेत्र, दक्खिन में बिन्ध पर्वत, पूरब में मगध आ पच्छिम में कुरु जनपद के छूवत रहे। एह कोसल जनपद के प्रसिद्ध के चलते एह क्षेत्र के भासा कोसली कहाइल। ई कोसली १५०० बरिस से अधिका समय तक एह क्षेत्र के सम्पर्क भासा बनल रहल। जवन मल्ल, बज्जि, करुस, कासी अवध, बत्स आदि जनपदन के बेवहारिक भासा रहे। हिड्स डेविड अपना ' बुद्धिस्ट इंडिया ' में लिखले बाइन कि बारहवीं सदी आवत आवत कोसली के दू भाग हो गइल। पच्छिम में अवध के नाम पर अवधी कहाइल आ बाकी मिथिला आ मगध के पच्छिम आ अवधी के पूरब के भासा भोजपुरी कहाइल। एहू तरह से पूरबी क्षेत्र के भासा कोसली से भोजपुरी के विकास के तथ्य उभर के सामने आवऽता आ अवधी से एकरा सगी बहिन के रिश्ता-नाता फेरिआता। जवना के खास जानकारी कोसली, पालि, अवधी आदि से पूरबी बोली भोजपुरी के तुलनात्मक अध्ययन से मिली।

अब जहाँ तक आगरा, मेरठ, पूर्बी दिल्ली आ हरियाना आदि के मिलल-जुलल क्षेत्र के कौरवी-बांगरू भासा के संगे संस्कृत का सब्दन के मिला बनल भासा रूप के कवना आधार पर खड़ी बोली कहल गइल त डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, ' फोर्ट विलियम कॉलेज के हिन्दुस्तानी भासा विभाग के प्रोफेसर गिलक्राइस्ट भारत खातिर बहुप्रयुक्त भासा रूप के 'खड़ी बोली' संज्ञा से अभिहित कइलें। खड़ी बोली के ऊ 'प्योर स्टर्लिंग' कहत अपना 'इंग्लिस हिन्दुस्तानी डिक्सनरी' में 'Sterling' के अर्थ - 'Standard' 'Genuine' बतवले बाइन। मतलब शुद्ध, खरा भासा रूप। एह तरह से हिन्दी से पुरान हिन्दुस्तानी भासा से अरबी-फारसी के सब्द निकाल के कौरवी-बांगरू भासा के संस्कृत प्रधान भासा रूप देके हिन्दू लोग खातिर शुद्ध खड़ी बोली के भासिक रूप दिहल गइल। गिलक्राइस्ट इंशा अल्लाह खां के जरिए

मुसलमान लोग खातिर अरबी-फारसी प्रधान 'उर्दू' भासा में लिखे आ प्रचार करे के जिम्मा दिहले रहस। ई अंगरेजन के भासा भेद से जनता भेद के नीति के तहत उठावल गइल कदम रहे। सन् १८२५ई. में कालेज का वार्षिक अधिवेशन में भाषण देत लार्ड हेमहर्स्ट हिन्दी भासा के हिन्दुअन से सम्बद्ध कहले आ उर्दू के उनका खातिर ओतने बिदेसी कहलें जेतना अंगरेजी। सन् १८२४ ई. में ओही कालेज का हिन्दी के प्रोफेसर विलियम प्राइस हिन्दी के लगभग सब सब्दन के संस्कृत होखे के बात करें, आ हिन्दुस्तानी का सब्दन के अरबी-फारसी होखे के कहलें।

कुछ विद्वान के कहनाम बा कि मूल सब्द खड़ी ना ह खरी ह। खरी मतलब शुद्ध। ई 'खरी' खरा सब्द के स्त्रीलिंग रूप बा। जवन बोली खातिर सिरजल गइल बा। खरा के मतलब होला नीरस, बेलस, नोनिआह वगैरह। एह खरा से स्त्रीलिंग सब्द बनल खरी आ कौरवी-बांगरू के ध्वनि प्रकृति के अनुरूप ओकर रूप हो गइल खड़ी। काहेकि बांगरू में 'र' के उचारन 'ड़' भी हो जाला। उहाँ अवधी करी के कड़ी होत हिन्दी में कड़ा हो गइल बा। कोठरी के कोठड़ी आ कटोरा के कटोड़ा हो जाला। गोमेल्लाभास के पन्ना २७ में आइल दोहा देखीं -

' भरा कटोड़ा दूध बिण बूरा पिया न जाय।  
माई बाप की लाडली पिउ बिण रहा न जाय।।'  
कुछ लोग बतावेला कि गिलक्राइस्ट जे खड़ी खातिर Standard सब्द के प्रयोग कइले बाइन ऊ Stand सब्द से बनल बा जवना के अर्थ होई खड़ा भा खड़ी। जवन भासा के खड़ा कइल गइल। जवन भासा रूप समय, समाज, साहित्य आ सरकार के जरूरत के अनुरूप चल पड़ल भा चलावल गइल। जवन गद्य के भासा के रूप में विकास कइल। उसे कहाइल खड़ी बोली। ओकरे के कहल गइल हिन्दी। एकरा उल्टा जवन भासा आधुनिक समय, समाज साहित्य आ सरकारी कारबार भा व्यापार-बाजार का जरूरत के अनुसार गद्य के भासा ना

बन पावल आ गीत-कवित तक सिमट के बोली रूप में पड़ल रहल, ऊ कहाइल 'पड़ी बोली'। कुछ विद्वान इहो कहलें कि चूकि एकरा में खड़ी पाई वाला वर्ण भा ध्वनि संकेत चिन्ह के बेवहार होला, एह से एकरा खड़ी बोली कहल जाला त ई विशेषता त देवनागरी लिपि के ह जवना के बहुत भासा अपनवले बा तब तक ओहू सबके खड़ी बोली कहे के पड़ जाई।

एह तरह से वैदिक भोज, उत्तर वैदिक भोज, पौराणिक आ ऐतिहासिक भोज के नाम से सम्बद्ध भोजपुर के ऐतिहासिक पूरबी बोली भोजपुरी जेतने पुरान भासा परम्परा से विकसित भासा बा ओतने खड़ी बोली हिन्दी आधुनिक अर्जित भासा बा। एक ओर जहां हिन्दी सरकार, रोजगार आ व्यापार आदि के भासा बनके सउँसे भारत के सम्पर्क भासा आ राजभासा बन चुकल बा उहँवे भोजपुरी अपना जन समुदाय के वाचन, लेखन आ पठन-पाठन के भासा बनके साहित्यिक भासा आ अब धीरे धीरे आउर अउर ज्ञान-विज्ञान के माध्यम भासा बने के ओर डेगा-डेगी कदम बढ़ा रहल बा।

अब इहाँ ई सवाल उठ सकऽता कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ. राम कुमार वर्मा, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि हिन्दी साहित्य के इतिहास में हिन्दी के विकास सातवीं-आठवीं सदी सदी से कइसे बतवले बाड़न। एकर वजह हमरा समझ से ई बा कि जब हिन्दी भासा आ साहित्य के पढ़ाई शुरू भइल तब ओकरा पास पर्याप्त साहित्य ना रहे आ ओह लोग का ओह अंगरेजन के आपन समृद्ध संस्कृति आ साहित्य परम्परा के देखावे के रहे जे ई जतावत रहे कि हमार अंगरेजी भासा आ साहित्य सोरहवीं-सतरहवीं सदी में ही समृद्ध हो गइल रहे। एह से भोजपुरी, मैथिली, ब्रजभाषा, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती आदि भारतीय भासा सब का उपलब्ध साहित्य के हिन्दी में समेट के अपना साहित्य परम्परा के अंगरेजी साहित्य से भी प्राचीन आ समृद्ध जनावल गइल। अब एह कुल्ह

भासा के हिन्दी के बोली बताके उल्टा नदी बहवावे के उतजोग कइल जा रहल बा।

हार्नले, ग्रियर्सन आदि पच्छिमी विद्वान लोग द्वारा कइल भारतीय आर्य भासा परिवार के वर्गीकरण के हिन्दी हित के ध्यान में राखत भारतीय भासा बैग्यानिक लोग कुछ एहर-ओहर बदलाव का संगे हू-ब-हू ओही रूप में मान लेले बा। जवन ध्वनि केन्द्र, सब्द-संरचना, कारक-क्रिया प्रक्रिया, लिंग विधान आदि के अध्ययन आ अनुसंधान के हिसाब से बहुत उचित नइखे जान पड़त। खास करके पूरबी बोली मतलब मध्यदेशीय भासा भोजपुरी आ खड़ी बोली हिन्दी के संदर्भ में, मागधी भा अर्द्ध मागधी आ भोजपुरी के संदर्भ में, ग्रियर्सन द्वारा भोजपुरी के बिहारी वर्ग के भासा बतावे के संदर्भ में आदि।

पूरबी बोली भोजपुरी के नामकरण भोज आ भोजपुर क्षेत्र में आधार पर भइल बा जवना के सम्बन्ध वर्तमान बिहार प्रांत से बा। एह से सबसे पहिले भारतीय आर्य भासा परिवार के वर्गीकरण कर हार्नले एकरा बिहारी वर्ग के भासा बतावत मैथिली आ मगही के संगे साटके बिहार में समेट देलें। एकरा अलावे जब ऊ आधुनिक आर्य भासा के चार भाग उत्तर, दक्खिन, पूरब आ पच्छिम गोडियन में बाँटवारा कीलें त एकरा के पूर्वी गोडियन के पूर्वी हिन्दी, बंगला, असमी आ उड़िया का संगे बिहारी खाना में समेट दिहलें। एकरा बाद ग्रियर्सन उनका मत के समर्थन करत कुछ बदलाव का संगे तीन शाखा - बहिरंग, मध्यदेशीय आ अंतरंग में कुल्ह आधुनिक आर्य भासा के समेटत फेर भोजपुरी के बहिरंग शाखा का पूर्वी समुदाय में बंगला, असमी आ उड़िया के संगे बिहारी शाखा के भीतर राख देलें। बाकिर ई पूर्वी हिन्दी के अलग मध्यदेशीय शाखा के भासा मनलें। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी आधुनिक आर्य भासा परिवार के पांच भाग में बाँटके फेर पूर्वी हिन्दी, उड़िया, बंगला, असमिया के संगे बिहारी वर्ग के भोजपुरी, मैथिली आ मगही के प्रतीय भासा भाग में

गिनती कइलें। डॉ. धीरेन्द्र कुमार वर्मा राजस्थानी, पच्छिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी आ बिहारी मतलब भोजपुरी, मैथिली आ मगही के मध्यदेशीय भासा बतवलें त डॉ. भोलानाथ तिवारी एह बिहारी भासा के पूर्वी हिन्दी के अधीन मानत बंगला, असमिया आ उड़िया के संगे रखलें। डॉ. हरदेव बाहरी भोजपुरी के बिहारी के उपभासा मानत हिन्दी वर्ग के भासा मनलें आ बंगला, असमिया आ उड़िया के हिन्दीतर वर्ग के पूर्वी वर्ग में रखलें।

एह तमाम बँटवारा के आधार घुमा फिरा के हार्नले के मत बा। हार्नले जहाँ भारतीय आर्य भासा परिवार के ई मानके कइले बाड़न कि आर्य लोग भारत में बाहर से आइल आ दू बार आइल अउर भोजपुरी के सम्बन्ध बिहार के भोजपुर क्षेत्र से बा एह से ई बिहारी वर्ग के बोली भा उपभासा ह। हार्नले के दूनू मत विवादास्पद बा आ ऊपर जे जे भासा बैग्यानिक लोग के नाम गिनावल बा ऊ सभे हार्नले से प्रभावित बा जबकि डॉ. गंगानाथ झा, एल डी कल्ला, डॉ सम्पूर्णानंद, अविनाश चंद्र दास, जयशंकर प्रसाद, डॉ गुरुदीप सिंह, डॉ भगीरथ मिश्र, डॉ भीमराव अम्बेडकर आदि पच्छिम के आर्य के भारतीय आगमन का सिद्धांत के तार्किक प्रमानन के आधार पर खंडन करत साबित कइले बाड़न कि आर्य भारत के मूल निवासी रहलें। भौगोलिक भेद के कारन एह लोग का भासा आ बोली में भेद रहे।

अब जहाँ तक भोजपुरी के बिहारी वर्ग तक सीमित राखे के सवाल बा त एक त भोज आ भोजपुर बिहार से बहुते पुरान नाम बा आ दोहरे एस भासा के विस्तार बिहार से अधिका उत्तर प्रदेश आ नेपाल आदि में बा। डॉ. राम विलास शर्मा, आचार्य किशोरी दास वाजपेयी सहित अनेक भासा बैग्यानिक एह बात से इंकार कइले बाड़न कि बिहारी नाम के कवनो भासा कबो अस्तित्व में रहे। ई कुल्ह भारतीय भासा सर्वेक्षण अभियान के दरम्यान मुंशी, मौलवी, पंडित, पटवारी आ सरकारी कर्मचारी लोग द्वारा भरवावल परफरमा के

प्रतिफल बा। हार्नले आ ग्रियर्सन के भारतीय भासा सम्बन्धी काम बहुते महत्व के बा। बाकिर ओकरा विसंगतियो कम नइखे। ग्रियर्सन के 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' के बारे में विलियम जोन्स के साफ मत बा कि ' ग्रियर्सन भासा के भूगोल लिखले बाड़न। ऊ कवनो भासा बैग्यानिक ना रहस।' विलियम जोन्स के मत तबे मान्य हो पाई जब भासा सबके तात्विक तुलनात्मक अध्ययन होई। अपना इहाँ एगो लोकोक्ति चलेला- ' हाथ कंगन के आरसी का, आ पढ़ल-लिखल ला फारसी का?'

इहाँ चूकि पूरबी बोली भोजपुरी आ खड़ी बोली हिन्दी के बीच तात्विक तुलनात्मक विवेचन के आधार पर समानता आ असमानता के अध्ययन करेके बा। एह से इहाँ एही दू भासा के ध्वनि प्रकृति, भाव प्रकृति, क्रिया आ कारक-परसर्ग विधान, लिंग तय करे सम्बन्धी विधान आ वाक्य संरचना पर विचार कइल उचित होई।

क. मु. इन्स्टिट्यूट ऑफ हिन्दी ऐंड लिंग्विस्टिक्स बिभाग, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा के सुख्यात भासा बैग्यानिक प्राध्यापक डॉ. विश्वनाथ प्रसाद सन् १९५८ ई. में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना से श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह के गुरुगम्भीर ग्रंथ 'भोजपुरी के कवि और काव्य' के सम्पादित करत डॉ. ग्रियर्सन आ डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी का ओह मतन के बारीकी से खंडन कइले बाड़न जवना में ग्रियर्सन भोजपुरी के मैथिली आ मगही का सारे बिहारी वर्ग राखके मागधी अपभ्रंश से विकसित मनले बाड़न आ डा. चटर्जी पच्छिमी मागधी से। केहू मागधी अपभ्रंश आ भोजपुरी के ध्वनि प्रकृति के बारीकी से अध्ययन करी,ओकरा डॉ. प्रसाद का खंडन के वजह मालूम हो जाई। मागधी अपभ्रंश में जहाँ ण, य, ल, व, श, ष आ सब्द के स्वर मध्यम क के जगह पर क्रम से भोजपुरी में न, ज, र, ब, स, ख आ ग के उचारन पावल जाला। जवन एकरा के मागधी अपभ्रंश के बदले कोसली आ पालि से जोड़

देला। कुछ नमूना देखल जाव- मागधी में जानाति के याणति बोलल-लिखल जाला त भोजपुरी में युगल के जुगल, युग्म के जुग्म, युग के जुग यदि के जदि, यजमान के जजमान, यमुना के जमुना, संयोग के संजोग बगैरह उचारन होला। मागधी में जानाति के याणति होला त भोजपुरी में गणेश के गनेस, आदरणीय के आदरनीय, चरण के चरन बगैरह हो जाला। मागधी में राजा के लाजा, परिचय के पलिचय बोलल-लिखल जाला त भोजपुरी में केला के केरा, हल के हर, फल के पर, कपाल के कपार, अंगुली के अंगुरी आदि बोलल-लिखल जाला। मागधी में हंस के हंशे, सप्त के शत हो जाला त भोजपुरी में शाम के साँझ, श्याम के स्याम, शीत के सीत आदि हो जाला। मागधी में पुरुष के पुलिशे, हंस के हंशे, सप्त के शत हो जाला त भोजपुरी में वर्षा के बरखा, पुरुष के पुरुख, षष्ठी के खस्टी आदि हो जाला।

कुछ विद्वान भोजपुरी के अर्द्ध मागधी से विकसित मानेलन त कुछ ओकरा काल्पनिक भासा बतावेलन। डॉ. चटर्जी के अनुसार जैन धर्म वाला लोग पूरबी बोली के कुछ बदलाव करके अर्द्ध मागधी सिरजल। डॉ. जितराम पाठक साहित्यिक भासा मागधी आ अर्द्ध मागधी अपभ्रंश से भोजपुरी के व्युत्पत्ति आ बिकास बतावेवाला से लोग से कई गो सवाल कइले बाड़न, जेकर जबाब देहल कठिन बा; जइसे- जब साहित्य भासा से लोक भासा के उत्पत्ति के कवनो इतिहास नइखे त साहित्य भासा अपभ्रंश से लोक भासा भोजपुरी के उत्पत्ति कइसे? जब प्राकृत आ देसी भासा तत्वन के मिलाके अपभ्रंश शैली रचाइल त फेर ओकरा से देसी भासा भोजपुरी के विकास देखावे के कवन आधार बा? भोजपुरी के भासा रूप अपभ्रंश से मेल काहे नइखे खात? पालि, ललित विस्तर, सिद्ध साहित्य, गोरख बानी, उक्ति-व्यक्ति प्रकरण, कबीर, तुलसी से भोजपुरी के आधुनिक भासा रूप में अतना समानता बा कि बुझाता जे बैदिक परम्परा के विकास आज के भासा रूप में प्रकट

भइल बा आ अपभ्रंश से ओकरा छुआछूत भी नइखे त अपभ्रंश के भोजपुरी के जननी भासा कइसे मानल जाए? प्राकृत-अपभ्रंश में 'ण' के भरमार बा त भोजपुरी के अपना सब्दन में 'ण' काहे नइखे? आदि। एह तरह से भोजपुरी के मागधी भा अर्द्ध मागधी अपभ्रंश से बिकसित भासा बतावल आ बिहारी वर्ग तक सीमित कइल उचित नइखे।

अइसे त कवनो भासा के सबसे प्रमुख आ छोट ईकाई वाक्य के मानल जाला, पद, सब्द, ध्वनि चिन्ह वगैरह ना। बाकिर डॉ. राम विलास शर्मा के अपना ऐतिहासिक पुस्तक ' भाषा और समाज ' में बतवले बाड़न कि 'कवनो दू भासा के अलग-अलग होखे के सही पहचान ओकनी के ध्वनि- प्रकृति आ भाव- प्रकृति से होला।' जब कवनो भासा का ध्वनि के उचारन आ प्रयोग के कुछ आपन खास खूबी होखे जवन अउर दोसरा भासा में ना पावल जाए त ओकरे के भासा के ध्वनि-प्रकृति कहल जाला। डॉ. शर्मा के अनुसार, ' दोसरा भासा से हमनी सब्द उधार लिहिले आ अपना स्वर-पद्धति के अनुरूप ओकर उचारन करिले।' ( भाषा और समाज; पन्ना-७७)। जब ध्वनि-प्रतीक-सब्दन के वाक्य प्रयोग में कवनो खास खूबी नजर आवेला त ओकरा के ओह भासा के भाव-प्रकृति कहल जाला। एह ध्वनि-प्रकृति आ भाव-प्रकृति से कवनो भासा आ समाज का सांस्कृतिक विससतन के जानल-पहचानल जा सकेला।



डॉ जयकान्त सिंह'जय'



## बेटिया सयान हो गईल

बापू से सब लोग कहेला, बेटिया तहर सयान हो गईल।  
छूट गईल बा सखीयारो सब , पेड़वन पर उ ओल्हा पाती।  
ईया के संघवे बईठाके लउवा लाठी \_चंदन काटी।  
फुलवारी में पातजमा के ,अड़हुल के जयमाल बनावल।  
गुड़िया के शादी आईला पर, भात झूरी, आ दाल बनावल ।  
लमहर हो गईनी तनकी सा, बुझा दुख के खान हो गईल।  
बापू से सब लोग कहेला, बेटिया तहर सयान हो गईल ।

काश ! फेर बचपन आ जाइत, घर में ओहके बंद का देती।  
साखियन के सगरो बुलवाके पांजा मे ध के रो लेती  
एस्कूले जाए के बहाने, फेर बरखा में भींझ के आइती।  
फेर गुड़डा गुड़िया से खेलती फेर कागज के नाव बनाइती।  
बचपन होला बहुत निराला, ई बतिया के ज्ञान हो गईल।  
बापू से सब लोग कहेला, बेटिया ताहार सयान हो गईल ।

लाइकन के नादान रहे दी, जबरी मत विद्वान बनाई ।  
नाम करे रौशन देशवा के, आइसन बस इंसान बनाई।  
ईर्ष्या, लोभ, मोह, माया में , लईकन के अनुरावल छोड़ी।  
बीज समय से वृक्ष बनाई ,जल के धार बढ़ावल छोड़ी।  
जब से बचपन बीतल बाटे, बचपन के सम्मान हो गईल  
बापू से सब लोग कहेला ,बेटिया तहर सयान हो गईल।



📍सान्या राय

## जिनगी के फलसफा

जिनगी के फलसफा अब का हो गइल बा  
रहिया ताकत सब अलविदा हो गइल बा  
बड़ी बेमुरउअत बेवफा हो गइलs तू त  
कि जिनगी से कवन खता हो गइल बा  
बेदर्द जमाना के जिनगी तू त हो गइलs  
कि बचल खुचल सब अलहदा हो गइल बा

कवन वादा टूटल गुनाह कवन हो गइल  
अब इचको ना हमरा खबर हो गइल बा

मुआवs जिआवs भा दिल से मिटावs  
जिनगिया अब तोहपे फिदा हो गइल बा

नजर में आके प्यार परवान चढाके  
जिनगी कवन मोल भाव का हो गइल बा

सूरत बिसरल,चल नजर से भी उतरल  
अब दिल के लगन,का-का हो गइल बा

मीत अब चलs सब भुला के गरवा लगा लs  
मचल दिल में हलचल बंधन समा गइल बा



📍डॉ मधुबाला सिन्हा  
मोतिहारी, चम्पारण

1-

बुधन- 'फुलेसर भाई! हाथ के सफाई होता कि ना?

फुलेसर- 'कहाँ होता ए भुवरा भीड़भाड़ में गइल मना नू बा'

2-

फुलेसर- 'हाथ धोवतारS कि ना, बुधना'

बुधन- 'मलिकाइने धोवतारी'

3-

बुधन के भोजन के मात्रा फुलेसर के परसान क दिहले रहे जइसे टेक्टर पर लागल थरेसर बोझा के बोझा डाँठ तनिका देर में भूसा बना देला, ओसहीं बुधन एक्के पंघित कतना सरपोट जइहें ठेकान ना रहे। एकदिन फुलेसर कहलें- 'ए बुधन! दवाई करावS, दवाई बीसन-तीसन अदिमी के राशन एक्के अदिमी खिंच लेउ आ डकार ले ना लेउ, अइसन हम कहीं नइखीं देखलो चलS, डगदर किहाँ'

बुधन के ले के फुलेसर डगदर किहाँ गइलें। डगदर साहेब सब बात सुनला का बाद पूछलें- 'अच्छा, ई बतावS भात केतना ले खा जात बाड़S ?'

बुधन- 'कवनो ढेर ना, इहे लगभग पाँच किलो।'

डगदर- 'देखS, तुरते ढेर कम कइल ठीक ना रही। लेकिन आजु से अढ़ाइए किलो खइहS आ ओही हिसाब से दालियो तरकारी आधा खइहS। कुछ दवाई ले लS। कम्पोटर दवा खाए के तरीका बता दिहें'

सलाह आ दवा ले के फुलेसर आ बुधन लवटल लोग। कुछ दूर अइला पर बुधन अचके कहलें- 'जा, डगदर साहेब से एगो बात पूछल त भुलाइए गइनीं। चलS, पूछि लीं।'

लवटि के डगदर साहेब का लग गइल लो। बुधन कहलें- 'ए डगदर साहेब! बेरिबेरि पूछले त रउरो रिसियाते होखबि, लेकिन एगो बात अउर बता दीं।'

डगदर साहेब- 'आरे, रिसिआइबि काहें? पूछS, का पूछे के बा?'

बुधन- 'कवनो बड़हन बात नइखे पूछे के। सब त समुझाइए दिहले बानीं। बस, एतने बता दीं कि जवन आधा खोराकी बतवनीं हँ ऊ खइला का पहिले कि खइला का बाद खाए के बा?'

डगदर के दिमाग झनझना गइला फुलेसर माथा पिटे लगलें।

संगीत सुभाष,

प्रधान सम्पादक, सिरिजन।

# नवकी कलम

कबो त आवल कर

2020 के हाल

कबहूँ त आवल कर, ध्यान लगावल कर।  
कबो-कबो त हिया से, प्रभुके बोलावल कर।

जबले बा जिनगी, ब्यस्त ह हर आदमी।  
समय निकाल तनिका ,हरि गुन गावल।

एह जिनगी में जले बाड़ तले झमेला बा।  
बगिया नियन एह के, सींचल सजावल कर।

जब काम आवे नाहीं केहु, तब उहे काम आवे  
बैठा के हिया में कबो, ध्यान लगावल कर।

ए जिनगी के ना कवनो भरोसा बाटे सुनील  
खुश रह तू हमेशा, सब के हँसावल कर।

कबहूँ त आवल कर, ध्यान लगावल कर।  
कबो-कबो त हिया से, प्रभु के बोलावल कर।।



☞ सुनील कुमार दुबे  
देवरिया, उत्तरप्रदेश

अइसन निरदइया साल ई,  
जनइलस कोना - कोना में ।

धन गइल धरम गइल,  
ई मूअना कोरोना में ।

भूखे रहलन कतना भाई,  
आस छुटल कमाई के ।

अब त कवनो बात ना करिं,  
लइकन के पढ़ाई के ।

जे खात रहे छप्पन प्रकार,  
खाए लागल दोना में ।

धन गइल धरम गइल,  
ई मूअना कोरोना में ।

नाक मुँह में जाब लगाके,  
घरहूँ में दू गज दूरी बना के ।

लॉक डाउन में घुमल जे खुला,  
केतना लोग आइल पीटा के ।

हे भगवान जल्दी से लगाई,  
एक(2021) एकरा (2020) सोना में ।

धन गइल धरम गइल,  
ई मुअना कोरोना में ।

सबसे बुरा हाल रहल,  
परदेसी आऊर किसान के ।

कलप-कलप के रोवत देखनी,  
लइका बूढ़ जवान के ।

" नादान" अब तू कब ले फँसब,  
चीन के जादू टोना में ।

धन गइल धरम गइल,  
ई मुअना कोरोना में ।

( दोना - पत्ते की थाली, जाब- मास्क, सोना- शून्य)

☞ निप्पू "नादान"

सत्य मार्ग अपनावऽ

अहंकार के छोड़ के बंधु,  
सत्य मार्ग अपनावऽ।  
एही में उपकार सबे के,  
ईश्वर से लव लावऽ।

मुक्ति मिली बाधा से सगरो ,  
सुफल जिंदगी होई।  
जाके जे भगवान सरन में ,  
लीन चरन धरि होई।  
आगे खातिर सोचि-समुझ लऽ,  
भाव न ढेर बनावऽ।

नीचकर्म, अपराध कइल कुल्ह,  
एहनि के परित्याग।  
ईश्वरमय सब जगत जानि के  
सभनिन संग अनुराग।  
ई मानुस जिनिगी अमोल ह,  
बिरथा नाहिं गँवावऽ।

धन संचित कइके का करबऽ,  
जोगऽ पुन्न-धरम के।  
ध्यान रहे जीवन में दीपक,  
दुसे न केहु करम के।  
करतब तनि अइसन कुछ करि जा,  
सगरी ईजति पावऽ।



दीपक तिवारी  
श्रीकरपुर, सिवान।

अभी बाकी बा

चंद लम्हा के मुलाकात अभी बाकी बा,  
हमार हिस्सा के सौगात अभी बाकी बा,  
भले कुछ दूर ले साथ चला,  
आ जा साथ, चले के अहसास अभी बाकी बा।

दुसर से ता लड़े सभे,  
आपन पराया करे सभे,  
मोह माया के जाल में चाल अभी बाकी बा,  
आ जा अबहीं खुद से लड़े के अहसास अभी बाकी बा।

खुशी के हिसाब ना राखे केहू,  
सुख में हरी नाम ना जापे केहू,  
केतना मिलल जीवन में दर्दो-गम,  
आ जा गम के कइ ल हिसाब अभी बाकी बा।

चाँद-सितारा के छाँहि में,  
सूरख होठ के अनकहे गीत में ,  
मृग-नयन में तहरा जवन अनगिनत खवाव बा,  
आ जा, खवाव के पूरा भइल अभी बाकी बा।

प्यार से प्यार सभे करेला,  
केहू निभावे केहू जीए मारेला,  
जीते जी केहू मरे कइसे,  
आ जा, मर के जीयल अभी बाकी बा।



अभियंता सौरभ भोजपुरिया  
जिला सिवान बिहार



## दोहा - अनिल के

जीव-जंतु मानुस जगत, रउवे सभकर आथ।  
मय गलियन में गुँज रहल, हर-हर भोलेनाथ ॥

तहरे आँचर छाँहि में , लगे न तनिको घाम ।  
माई तहरे पग बसे, सगरी तीरथ धाम।।

हमरा तहरा से रहे, ना कवनो तकरार।  
आखिर अइसन का भइल, बदल गइल व्यवहार।।

मौसम रंग गुलाल के , बीतल जात बसंत ।  
असरा लगले रह गइल, कहवाँ अइले कंत?

डीह , गँयढ सरसों खिलल, चारू ओर बहार ।  
धूप गुनगुनी खिल रहल , भोरे ओस फुहार।।

आपन पन पर बा अइल, मारग पइल किसान ।  
सत्ता माने बात ना, आफत में बा जान ॥

सब जुझार कर्मठ लिखे, नेता दिखे न कोय ।  
जीतत लूटे देश के, जनता सबकुछ खोय ॥

प्रभु जी दुख सुख काटता, पूरा ही यह साल।  
कृपा करो नववर्ष पर, होएँ सब खुशहाल।।



अनिल कुमार  
गोपालगंज, बिहार

## ई नेता लोगन

नेतागिरी के काम में  
नेताजी भइलें आन्हर  
झूठे झूठे बहसैं खूबे  
जनता के समझे बानर।।1।।

आपन घर चलावे खातिर  
सभ्भे अपने जांगर चलावे  
घोटाला पे घोटाला करि  
नेताजी गइलें बौराय।।2।।

पुल खा गइलें रोडो खइलें  
कहवाँ हो रहल कुछ बाकी  
जनता नून तेल के तरसे  
कइसे चली घरवा के चाकी।।3।।

एयरकंडीशन मे बइठि के  
लोगन के माल उड़ावे  
जेतना बड़ घोटाला करे  
ओतने बड़ नेता कहावे।।4।।

देशवा के भुलाइ गइलें  
अपना लालच खातिर  
तनिको अखियाँ में पानी नइखे  
पूरा बाटे ई त..शातिर ।।5।।



रेखा शाह आरबी,  
बलिया जिला, उत्तर प्रदेश।

## मत पूछी का हाल बा

मत पूछी का हाल बा.  
रोजे नया बवाल बा.  
  
केने तोपी, केने छोड़ी,  
बहुते बड़ा सवाल बा.  
  
ऊबड़-खाबड़ ए जिनगी में.  
कहीं ऊँच कहीं खाल बा.  
  
कहे के घर भरल बाटे,  
बस अपनापन मोहाल बा.  
  
धन-सम्पति त खूबे बा,  
दिल से लोग कंगाल बा.  
  
सब कुछ त पुरनके बाटे,  
बस कहे के नया साल बा.

✍ नूरेन अंसारी

## कोरोना

केतना लोग के औरी मुआई कोरोना?  
पता ना कहिया ले जाई कोरोना ?  
  
जिनगी के जियल भइल मजबूरी  
कबले बरावल जाव दू गज के दूरी  
कवन-कवन दिन देखाई कोरोना.  
पता ना कहिया ले जाई कोरोना ?  
  
हर घड़ी मुँह पे लगावल जाब  
साँच कही बहुते लागे खराब  
मुँह-हाथ केतना धोवाई कोरोना  
पता ना कहिया ले जाई कोरोना ?  
  
अइसन अतिथि के चूल्ही में झोंकी  
पता ना वेक्सिन , कहिया ले रोकी  
निकलल ई बड़का कसाई कोरोना  
पता ना कहिया ले जाई कोरोना ?



✍ नूरेन अंसारी

ग्राम : नवका सेमरा

पोस्ट : सेमरा बाजार

जिला : गोपालगंज (बिहार)

## राउर बात

☞ "जय भोजपुरी जय भोजपुरिया" परिवार के तिमाहीं भोजपुरी ई-पत्रिका " सिरिजन " के जनवरी, 2021- मार्च , ,2021 अंक पढ़ के बहुते सुखद अनुभूति भइल , सब रचनाकार , लेखक के रचना आ लेख पढ़े में निसंदेह तनी विलंब भइल बा , जवना कारण से पत्रिका के विषय में हम आपन उद्गार विलंब से दे रहल बानी ।

कवर पृष्ठ से ले के डॉ. अनिल चौबे जी के संपादकीय , उपसंपादक श्री तारकेश्वर राय " तारक" जी के " आपन बात" सहित सब विद्वान लेखक , रचनाकार , कवि , कवयित्री के आलेख , काव्य , रचना , प्रहसन के उत्कृष्ट संकलन कइल गइल बाई सन 2021 के प्रथम तिमाही अंक में•••हमरा ई कहे में ईच मात्र के भी संकोच नइखे कि हर अंक में लगातार उत्कृष्ट , स्तरीय आ गुणात्मक प्रगति के साथ अपना उद्देश्य के प्राप्ति में अग्रसर हो रहल बा जवना के श्रेय हम पत्रिका के प्रधान सम्पादक , सम्पादक , उपसंपादक , सह संपादक सहित पूरा सम्पादकीय टीम , रचनाकार , लेखक , तमाम सृजनकर्ता आ सम्माननीय पाठकगण के देत बानी , रउआ सभे के हृदय से बधाई आ सादर अभिवादन बा - श्री सुरेश कुमार, मुंबई, महाराष्ट्र

☞ बढ़त रहे डेग सिरिजन के, भरत रहे भोजपुरी भंडार |  
सुंदर अंक संग्रहणीय बा, नववर्ष पर सुंदर उपहारा  
नया वर्ष में नया कलेवर, देखते मन गइल हर्षाए |  
धन - धन जभो जभो, धन तू सिरिजन परिवारा - श्री कनक किशोर, रांची, झारखण्ड

☞ बधाई |सिरिजन त जनवरी के पहिलके दिन आंख खुलते खोराक ले के ठाढ़ हो गईलाबहुत बहुत आभार सभे के एह तत्परता आ जिम्मेदारी निबाहे खातिर। - श्री उदय नारायण सिंह, रिविलगंज, छपरा, बिहार

☞ सिरिजन तिमाही भोजपुरी पत्रिका के सभ सुधी पढ़वइया आ लिखवइया भइया बहिनी के सादर प्रणाम अउ नवका साल के हार्दिक सुकामना। आसा ना पूरा बिस्वास बा कि #सिरिजन\_नवका\_साल\_में\_बीस\_से\_एकइस\_होई - श्री अमरेंद्र कुमार सिंह, आरा, बिहार

☞ सिरिजन के ग्यारहवा अंक पूरा पढ़नी हं । बड़ी नीमन लागल । सिरिजन के जेतना बखान करीं उ कमे बुझाता । कविता कहानी निबन्ध सब बेजोड़ बा । हमरी अइसन अल्पज्ञ का एइमें कमी खोजल चांद के दिया देखवला बराबर बा । इ अउरी नीमन सुघर कलेवर में आवे इ शुभकामना बा । - श्री सत्य प्रकाश शुक्ला, भटहिं, कुशीनगर, उत्तरप्रदेश

☞ पत्रिका के कुछ अंश पढ़नीं नीक लागल. डॉ अनिल चौबे जी के किसान आ सरकार पढ़नी हं बड़ा नीमन लागल है। एह सुंदर काम खातिर पत्रिका के सम्पादन टीम के हिया से साधुवाद, माई भाषा के अलख जरत रहो। श्रीमती मंजू श्री, गोपालगंज, बिहार

☞ अइसन समय में जब भोजपुरी आपन घरहिं अनदेखा हो रहल बिया, कटाह समय चल रहल बा। माईभाषा के प्रति रवुरा सब के चिंता आ गरिमा के बचावे के प्रयास देखि के मन आह्लादित बा। भोजपुरी तिमाही ई पत्रिका सिरिजन के एगरहवाँ (जनवरी- मार्च, 2021) अंक नया साल की भेंट का रूप में भोजपुरिया आ भोजपुरी साहित्य में रस लेबेवाला लोग खातिर निक उपहार साबित होइ। सिरिजन खूबे फलो फूलो । श्री दरोगा पांडेय, बिक्रमगंज, बिहार।

☞ समय के साथै माध्यम बदल गइल। कबो कागज पर ही पत्रिका पढ़े के भेंटाव अब देखि न हाँथ के मोबाइल पुर चरहथि में पत्रिका उपलब्ध बा। नाती के मुहें सिरिजन के बारे में पता चलल । उहे हमरा मोबाइल में डाउनलोड क देहलो पढ़नी। आँख लोरा गइल। पाछे गांव में छूटल भुलाइल बिसरल समय आँखि के सोझा सिनेमा के रील नियन मानस पटल पर चलत रहे। सिवान, घर, दुवार, छवर बारी बगइचा कुल्हियो अपना बोली अपना भाषा संस्कार संस्कृति के बचावे कुछ लोग आजुवो जोगावे में लागल बा। धन्यवाद जइसन शब्द छोटे कहाई। रवुरा सब के भाव के नमन बा। बढी सभे, साथे बाणिजा। श्री रामस्नेही यादव, हैदराबाद, तेलंगाना ।



कलमकार से गोहार

निहोरा

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

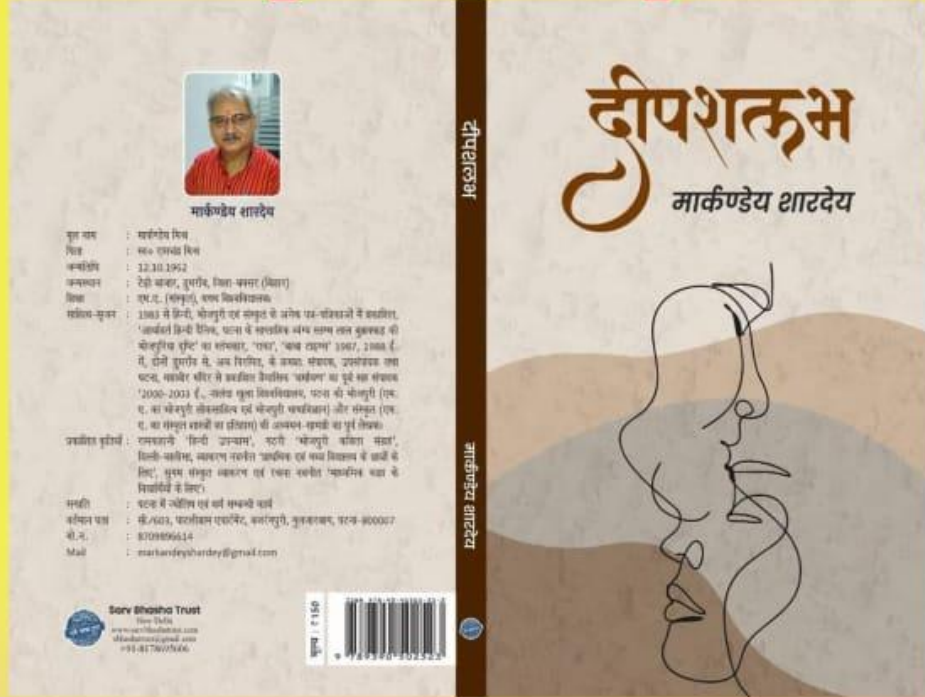
माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे । भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खातिर अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउवे पत्रिका ह, उठाई लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं । फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई ।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुँचो । असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिबरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - [sirijanbhojpuri@gmail.com](mailto:sirijanbhojpuri@gmail.com) प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ ब्यक्तिगत ना होखे ।



# जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया



भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, संरक्षण  
आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के तारामंडल के महत्वपूर्ण तारा  
श्री मार्कण्डेय शारदेय के अतुलनीय योगदान बा।

रउश द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के  
उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

किताब खातिर सम्पर्क करीं :  
**सर्व भाषा ट्रस्ट**  
मोबाइल नं.- +91-8178695606